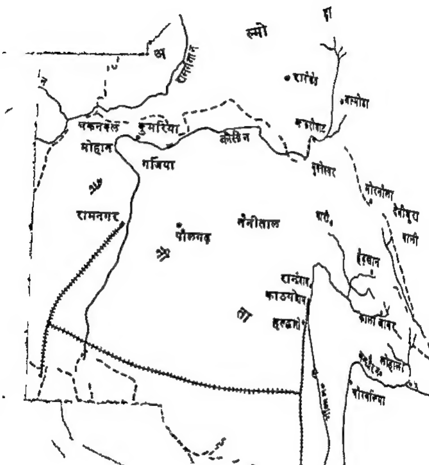


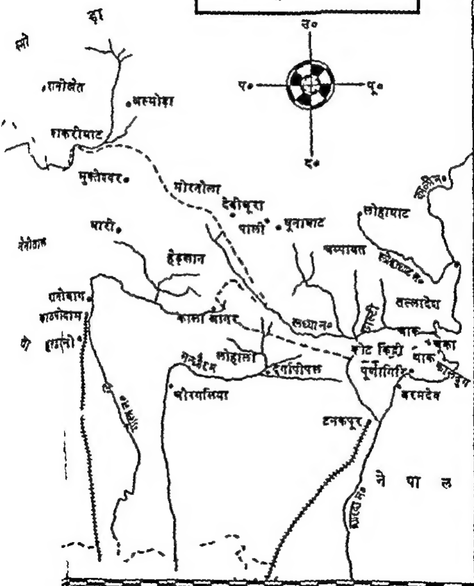
कुमरिया
मोहान
गर्जिया
रामनगर
नैनीताल
काठगोदाम

2260/58

बागेश्वर

कुमायूँ का मानचित्र

अस्कोट



कुमायूं के क्रूर शेर





जिम् कार्बेट

KUMAUN KE KROOR SHER

Hindi translation of

MAN EATERS OF KUMAON

JIM CORBETT

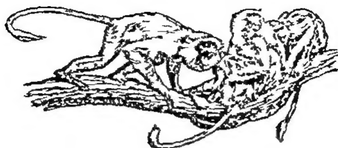
Translated by R. C Pande

Jim Corbett 1875 1955

First published *1953* प्रथमावृत्ति १९५३

Second impression *1957* द्वितीयावृत्ति १९५७

Printed in India by V N Bhattacharya M.A
at the Inland Printing Works, 60/3 Dharamtala Street Calcutta 13
and published by John Brown, Oxford University Press
Mercantile Buildings, Calcutta-1



विषय सूची



लेखक का वक्तव्य

इस पुस्तक में अधिकांश कहानियाँ नरभक्षी शेरों के विषय में हैं। अतः यह समझा देना उचित होगा कि ये पशु क्यों आदमखोर बन जाते हैं।

नरभक्षी शेर की व्याख्या है वह शेर जो परिस्थितियों से विवश होकर अनुकूल भोजन प्राप्त नहीं कर पाता और असमर्थ होने पर अप्राकृतिक भोजन करता है। शेर की असमर्थता का मुख्य कारण है उसकी वृद्धावस्था अथवा घाव। ये घाव प्रायः शिकारियों की लापरवाही से चलाई गई गोलियों के द्वारा अथवा शेर की किसी साही से झड़प के समय उसके कांटे गारा हो जाते हैं। शेर का प्राकृतिक शिकार मनुष्य नहीं है। शेर केवल विवश होकर ही मनुष्यमांस खाने लगता है। शेर अपने शिकार को या तो दौड़ कर मारता है या उसकी घात में छिप कर। इन दोनों प्रणालियों में अपने आक्रमण को सफल बनाने के लिये शेर को अपने दांतों और नखों पर निर्भर रहना पड़ता है। दांतों या पंजों के कमज़ोर पड़ जाने पर या शरीर में लगे घावों के कारण ही शेर अपने प्राकृतिक शिकार को पकड़ने में असमर्थ हो जाता है और परिणामस्वरूप नरभक्षी बन जाता है। नर का पशुमांस छोड़कर मनुष्य-मांस खाने का चसका बहुधा किसी घटना के कारण लग जाता है। उदाहरणार्थ मुक्तेश्वर की नरभक्षी को लीजिये। यह एक जवान शेरनी थी और एक अवसर पर किसी साही से मुकाबला करने में अपनी एक आंख खो बैठी। समस्त शरीर में पचासों कां

घुस गये थे। शेरनी ने जहां जहां से कांटों को दांत से पकड़ने का प्रयत्न किया था वहां-वहां पर घाव पक गये थे। इसी घायल अवस्था में शेरनी एक झाड़ी में लेटी हुई थी कि उधर से एक ग्रामीण स्त्री घास काटने निकल पड़ी। शेरनी ने कोई ध्यान नहीं दिया और अपने घावों को चाटती रही। जब घसियारिन ठीक शेरनी के ऊपर जा पहुंची शेरनी ने एक थप्पड़ से ही उसकी खोपड़ी चूर कर दी। तत्काल ही स्त्री की मृत्यु हो गई। लाश को वहीं छोड़ कर शेरनी ने लंगड़ाते हुए एक गिरे हुए वृक्ष के खोखले की शरण ली। दो दिन बाद शेरनी ने एक हाथ से एक लकड़हारे को भी मार डाला। अभागा लकड़हारा भी मृत स्त्री की भांति शेरनी के समीप पहुंच गया था। लकड़हारे के क्षत विक्षत शरीर से टपकते हुए रक्त को देख कर ही सम्भवतः शेरनी को सर्वप्रथम यह सूझा था कि यह भी उसकी खाद्य वस्तु हो सकती है। दूसरे दिन शेरनी ने जानबूझ कर अकारण ही एक मनुष्य को मार डाला। उसकी जिह्वा में मनुष्यमांस का स्वाद लग चुका था और उसी दिन से वह एक कुख्यात नरभक्षिणी बन गई। अंत में चौबीस नरबलियां ले चुकने के पश्चात् वह मारी जा सकी।

शायरे (लाश) पर बैठा हुआ शेर घायल शेर अथवा बच्चोंवाली शेरनी बहुधा छेड़ जाने पर ही मनुष्य को मारते हैं। परन्तु उन्हें नरभक्षी कहना अनुचित है (जैसा कि प्रायः कहा जाता है)।

मैं स्वयं शेर के नरभक्षी होने की घोषणा तब तक नहीं करता जब तक कि मुझे पूर्ण विश्वास नहीं हो जाता। शेर एक दो अवसरों पर भूल भी कर सकता है। अवसर पाते ही मैं प्रत्येक शेर द्वारा मारी गई लाश की जांच-पड़ताल करता हूं। लाश की चीर-फाड़ (post mortem) अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कई बार निरपराध पशुओं पर नरहत्या का मिथ्या आरोप लगाया गया है।

जनसाधारण की यह निराधार धारणा है कि सब नरभक्षी शेर बूढ़े होते हैं और उनके चर्म में खुजली (Mange) की बीमारी होती है। खुजली का कारण मनुष्य का नमकीन मांस बताया जाता है। मैं तो यह नहीं कह सकता कि मनुष्य मांस अधिक नमकीन होता है या पशुमांस किन्तु मैं यह दावे से कह सकता हूं कि शेर पर मनुष्यमांस का कोई भी हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि जितने भी आदमखोर मैंने मारे उनके चर्मों को अत्यन्त सुन्दर दशा में पाया।

कुछ लोगों का मत है कि नरभक्षी शेर की सन्तति भी स्वयं आदमखोर बन

जाती है। यह मत युक्तिपूर्ण सा दिखाई देता है किन्तु सत्य नहीं है क्योंकि शेर या तेंदुवा का प्राकृतिक शिकार मनुष्य नहीं है। शेर का बच्चा वही खाना खायगा जो उसकी माता उसे देगी। कई अवसरों पर मैंने स्वयं बच्चों को अपनी माता को नरहत्या करने में सहायता पहुँचाते हुए देखा है। किन्तु एक भी बार ऐसा नहीं हुआ कि माता पिता की संरक्षता छोड़ देने के पश्चात या उनके मारे जाने के बाद शेर का बच्चा नरभक्षी बन गया हो।

लाश देख कर प्रायः सन्देह होता है कि हत्यारा शेर है या तेंदुवा? साधारणतया शेर दिन के प्रकाश में मारे गये व्यक्तियों की लाशों का उत्तरदायी होता है पर तेंदुवे रात्रि के अंधकार में शिकार करते हैं। शेर और तेंदुवे दोनों ही अर्ध निशाचर पशु हैं और लगभग सभी आदतें इनकी एक समान हैं। परन्तु फिर भी ये एक ही समय शिकार नहीं करते। इसका मुख्य कारण है इन पशुओं के साहस का विभेद। शेर आदमखोर बनते ही भय का परित्याग कर देता है। चूंकि मनुष्यों के चलने फिरने का समय दिन है इसलिये शेर को रात में उनके घरों पर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। तेंदुवा मनुष्य से सदैव डरता रहता है। अतएव या तो वह रात्रि में आक्रमण करता है या रात्रि में बस्ती में पहुँच जाता है। उपर्युक्त कारणों से नरभक्षी शेरों को मारना अधिक सरल है।

नरभक्षी शेरों द्वारा की गई हत्याओं की बहुलता निम्नलिखित बातों पर निर्भर है

(क) नरभक्षी के आवासस्थल में उसके प्राकृतिक आहार की कमी या अधिकता
(ख) शरीर के घाव की अवस्था
(ग) शेर नर है अथवा बच्चोंवाली मादा?

हम लोग जिनमें मौलिक विचार शक्ति की न्यूनता रहती है तुरन्त ही अन्य लोगों की धारणा को स्वीकार कर लेते हैं। जिस लेखक ने सर्वप्रथम शेर की भांति खून का प्यासा या शेर सा क्रूर आदि उपमाओं का प्रयोग किया होगा उसने सचमुच ही शेरों के साथ बड़ा अन्याय किया है। उपर्युक्त उपमाओं द्वारा उस लेखक ने केवल शेर के चरित्र का मिथ्याचित्रण ही नहीं किया किन्तु उसे समस्त विश्व में बदनाम कर दिया। कुछ ही मनुष्य ऐसे होंगे जिन्हें स्वयं परीक्षा करके अपनी व्यक्तिगत धारणा बनाने का अवसर मिला होगा।

जब कभी मैं नगरों में उनके ऊपर लगाये गये मिथ्या आरोपों के विषय में कहा पढ़ता हूं तभी मुझे उस नन्हे बालक की याद आ जाती है जो एक टूटी फूटी भराऊ (muzzel loading) बन्दूक लेकर शरीफ़ाबाद के जंगलों में भटकता रहता था। उस जमाने में उपवन वनों में आज से कहीं अधिक शेर फिरा करते थे। थक जाने पर यह बालक जंगल में ही अपना डेरा डाल लिया करता था। जब कभी शेरों की गर्जना से उसकी नींद उचट जाती तभी वह आग में एक और लकड़ी डाल कर पुनः करवट बदल लेता। उसने अनुभव से यह सीख लिया था कि न छेड़े जाने पर शेर कभी भी हानि नहीं पहुंचाता। दिन के प्रकाश में यदि उसे कभी शेर दिख भी जाता तो वह निश्चल खड़ा रहता और शेर बिना उसकी ओर ध्यान दिये ही चल देता। मुझे उस अवसर की भी भली भांति याद है जब यही बालक वन-मुर्गियों का पीछा करते समय एक आदमखोर शेर के एकदम समीप जा पहुंचा था और शेर मानो 'अरे तुम यहां क्या करने आ पहुंचे मुन्ना?' कहता हुआ चला गया था। फिर मैं सोचने लगता हूं कि प्रतिदिन सहस्रों नर-नारी वनों में घास-लकड़ी बटोरने जाते हैं और संध्या समय सकुशल घर लौट आते हैं। उन्हें आभास भी नहीं होता कि शेर की भांति खून का प्यासा और हत्यारा पशु कितने समीप पहुंच कर भी वे सकुशल घर लौट आये हैं।

वन-मुर्गियों का पीछा करते हुए बालक के किस्से को बीते आज आधी शताब्दी हो गई है जिसमें अन्त के बत्तीस वर्षों तक निरन्तर आदमखोरों का अनुसरण किया गया। इस बीच ऐसे दृश्य मैं देख चुका हूं जिन्हें देख कर पाषाण भी पिघल सकता है किन्तु एक भी अवसर पर मैंने यह नहीं देखा जब शेर ने अपने या अपने शिशुओं का पेट भरने के अलावा अकारण ही मनुष्यों का संहार किया हो।

सृष्टि में शेर का कर्तव्य प्रकृति में सुन्तुलन का सामंजस्य रखना है अर्थात् वन पशुओं की आबादी को परस्पर में बराबर रखना। यदि कभी विवश हो कर वह एक-दो मानव हत्याएं कर भी डाले तो उसकी समस्त जाति को दोष देना असंगत है। आशा है कि सभी मेरे उपर्युक्त निष्कर्ष से सहमत होंगे।

तेन्दुए शेरों के विपरीत मुरदाखोर पशु हैं और जब उन्हें जंगल में अपना प्राकृतिक शिकार कम मिलता है तब वे नरभक्षी बन जाते हैं।

हमारे अधिकांश पहाड़ी लोग हिन्दू हैं और मृतकों का दाह-कर्म करते हैं। कहीं-कहीं पानी बहुत दूर होता है इसलिए मीलों तक उन्हें जाना पड़ता है। परन्तु किसी संक्रामक रोग के फैलने पर शव के मुँह में जलता कोयला डाल कर उसे घाटी में गिरा दिया जाता है। इन्हीं लाशों से भी तेंदुए को नरमांस का चसका लग जाता है और वह आदमखोर बन जाता है।

कुमायूँ के दो आदमखोर तेन्दुए (जिन्होंने मिलकर ५२५ नर-हत्याएं कीं) इसी भांति आदमखोर बने। पहला तेन्दुआ हैजे के प्रकोप के पश्चात नरभक्षी बना और दूसरा १९१८ के रहस्यमय रोग (War fever या लड़ाई के ज्वर) के बाद।



चंपावत का आदमखोर

उस समय मैं मलानी में एडी नायल के साथ शिकार खेल रहा था जब मैंने उस शेर के विषय में सुना जो पीछे 'चंपावत का आदमखोर' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

एडी उन भाग्यशाली मनुष्यों में से था जो प्रायः जीवन के समस्त सुखों से सम्पन्न रहते हैं। उसने इस प्रान्त में उत्तम शिकारी होने की चिरस्थायी ख्याति प्राप्त कर ली थी। उसे न जाने कितने शिकार के किस्से याद थे। उसकी बन्दूक की मार व निशाना बेजोड़ थे। उसका एक भाई भारतवर्ष में छर्रे की बन्दूक का अद्वितीय निशानेबाज था और दूसरा भाई फौज में टेनिस का सुप्रसिद्ध खिलाड़ी था। इसलिए जब मुझे एडी ने बतलाया कि उसका बहनोई जो संसार का सर्वश्रेष्ठ शिकारी था इस नरभक्षी शेर को मारने के लिए सरकार द्वारा भेजा जा रहा है तब मुझे विश्वास हो गया कि अब इस हिंस्र पशु के उत्पात का समय बहुत सीमित हो गया है।

चार वर्ष बाद मैं जब नैनीताल पहुँचा तो मुझे पता चला कि किसी अज्ञात कारणवश शेर अभी तक मरा नहीं और सरकार अत्यन्त चिंतित है। सरकार द्वारा पुरस्कार घोषित किये गये, विशेष शिकारियों का प्रबंध हुआ और अल्मोड़ा डिपो से गुरखा सैनिकों की टोलियाँ शेर को मारने भेजी गईं, किन्तु इन सब उपायों के बावजूद नर बलियों की संख्या दिनोंदिन भयंकर रूप से बढ़ती ही गई।

यह शेरनी (बाद को पता चला कि आदमखोर मादा थी) कुमायूँ में नेपाल से पूर्ण नरभक्षिणी बन कर आई थी। नेपाल में दो सौ मनुष्यों के प्राण ले चुकने पर वह कुछ सशस्त्र नेपालियों द्वारा वहाँ से खदेड़ दी गई थी और इधर चार वर्षों में उसने कुमायूँ में अपना यह व्यापार चालू कर रक्खा था। इस नये प्रदेश में आकर उसने अपनी नर-संहार की संख्या में २०० के अंक और जोड़ लिये थे।

जब मुझे नैनीताल में आये थोड़े ही दिन हुए थे तब एक दिन बर्थोंड साहब मुझसे मिलने आये। वे उस समय नैनीताल के डिप्टी कमिश्नर थे और बड़े लोकप्रिय सज्जन थे। उनकी मृत्यु बड़े दुर्भाग्य से हुई। वे

अब हल्द्वानी में अपनी छावनी भी जाड़ों में विश्राम कर रहे हैं। उन्होंने मुझे बतलाया कि समस्त ज़िले में बाघ ने किस प्रकार आतंक फैला रक्खा था। बर्थोड स्वयं अत्यन्त चिंतित थे। और जाते समय यह मुझसे वचन लेते गये कि भविष्य में नई लाश की सूचना पाते ही मैं अविलम्ब चंपावत को कूच कर दूँगा। मैंने उनके सम्मुख दो शर्तें रक्खीं। एक तो यह कि सरकार द्वारा घोषित पुरस्कार बन्द कर दिया जाय और दूसरी बात थी कि अल्मोड़े से भेजे गये शिकारी एवं सिपाही जंगल से वापस बुला लिये जायँ। यह समझाना व्यर्थ सा होगा कि मैंने ये शर्तें क्यों रक्खीं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि कोई भी अच्छा शिकारी पुरस्कार के लालच से शिकार मारने के पक्ष में न होगा और जंगल में इतने अधिक शिकारियों के बीच शिकार खेलने में अपने ही ऊपर कोई न कोई दुर्घटना होने का भय सदा बना रहता है।

मेरी दोनों शर्तों को स्वीकार कर लिया गया और एक सप्ताह बाद एक दिन तड़के ही बर्थोड मेरे बँगले पर पहुँचे। उन्होंने मुझे बतलाया कि रात्रि में एक धावक हरकारे द्वारा उनको सूचना मिली थी कि धूनाघाट व देवीधुरा के बीच पाली नामक ग्राम में आदमखोर ने एक औरत को मार डाला था। मैं इस प्रतीक्षा में तो था ही इसलिये मैंने पहिले से ही छः मनुष्य अपना सफ़री सामान लादने के लिए तैयार कर रक्खे थे। नाश्ता करके हमने अपना १७ मील का पहला धावा मार लिया। संध्या समय हम धारी पहुँच गये। प्रातः काल का भोजन हमने मोरनौला में किया और रात्रि देवीधुरा में व्यतीत की। तीसरे दिन संध्या को हम पाली पहुँच गये। उस स्त्री को मरे हुए पाँच दिन हो चुके थे।

पचास-साठ स्त्री पुरुषों का यह गाँव था और बेचारे बुरी तरह से डरे हुए थे। यद्यपि सूर्यास्त होने में देर था किन्तु फिर भी समस्त ग्रामवासी अपने दरवाजों पर कुंडी चढ़ाये चुपचाप बैठे हुए थे। नौकरों ने आग जला ली थी और मैं चाय पी रहा था तभी एक-एक करके द्वार खुलने लगे और भयभीत ग्रामीण बाहर निकल आये।

मुझे बतलाया गया कि गत पाँच दिनों से कोई भी मनुष्य अपने घर से बाहर निकला ही न था। इधर उधर फैली हुई गन्दगी इस बात की पुष्टि कर रही थी। ग्रामीणों की खाद्य सामग्री दिन पर दिन कम होती जा रही थी और

यदि शीघ्र ही शेरनी न मारी जाती तो निःसन्देह वे लोग भूखों मरने लगते।

यह स्पष्ट था कि शेरनी अभी आसपास ही के वनों में थी क्योंकि तीन रातों से लोग उसे दहाड़ते हुए सुन रहे थे और गाँव के पीछे की जुती भूमि में कुछ लोगों ने उसे देखा भी था।

गाँव के मुखिया ने सहर्ष मेरे लिये एक कमरा ठीक कर दिया। हम लोग संख्या में आठ थे और कमरे का द्वार भी आँगन की ओर खुलता था जहाँ अत्यन्त गन्दगी थी। अतः मैंने रात बाहर ही काटने का निश्चय कर लिया। ब्यालू के स्थान पर थोड़ा सा जलपान करके ही सन्तोष कर लिया गया। जब मैंने देख लिया कि मेरे आदमी सकुशल कमरे में बन्द हो गए हैं तब मैं बाहर आकर एक वृक्ष से पीठ सटा कर बैठ गया। गाँववाले मुझे बता चुके थे कि शेरनी रात्रि में सड़क पर घूमने आती थी। चाँदनी खूब छिटकी हुई थी और यदि शेरनी वहाँ मुझे पहले दिखाई पड़ती तो गोली चलाने का अवसर मिल सकता था।

मैं पहले भी कई रातें शिकार में बिता चुका था किन्तु आदमखोर के लिये रात में बैठने का मेरे लिए यह प्रथम अवसर था। मेरे सामने की सड़क चाँदनी में नहा-सा रहा था और आसपास के वृक्ष अपनी विचित्र छायाएँ सड़क पर डाल रहे थे। जब रात की हवा उनकी शाखाओं को हिला देती तब उनकी परछाइयाँ नाच उठती थीं। कभी-कभी ऐसा लगता था कि दर्जनों शेर मेरे ऊपर दौड़े आ रहे हों। मैं उस घड़ी को कोस रहा था जब मैंने रात बाहर बिताने का निश्चय किया। मुझमें इतना साहस न रहा कि गाँव को वापस लौट पड़ूँ। मुझे इसे स्वीकार करने में लेशमात्र भी संकोच नहीं है कि मैं अत्यन्त भयभीत हो उठा था। जिस काम को पूरा करने का मैंने कुछ ही देर पहिले बीड़ा उठाया था उसे पूरा करने का मुझमें अब साहस नहीं था। कुछ भय से कुछ जाड़े से बत्तीसी किटकिटा रही थी और इस भाँति मैंने बैठे-बैठे सम्पूर्ण रात्रि व्यतीत कर दी।

सामने की हिमाच्छादित पर्वत-शृंखलाओं पर उषा फैल रही थी। नव दिवस का जन्म हो रहा था। मैं घुटनों के बीच सर दबाये बैठा था और बाद में मेरे आदमियों ने मुझे इसी आँगन में वहीं निद्रा में मग्न पाया। जब मैं गाँव वापस लौटा मैंने लोगों को अत्यन्त विस्मित पाया। उनको आश्चर्य हो रहा था कि मैं जीवित कैसे बच गया। मैंने उनसे अनुरोध किया कि मेरे साथ

चलकर मुझे वे स्थान दिखलाये जहां जहां शेरनी ने मनुष्यों को मारा था किंतु उत्तर में वे केवल सर हिलाकर रह गये। आंगन में खड़े-खड़े कुछ लोगों ने उंगली से उस दिशा की ओर इंगित कर दिया जिधर शेरनी ने कई व्यक्तियों को मारा था। शेरनी का अन्तिम शिकार (जिसकी सूचना पाकर मैं चंपावत आया था) गांव के पश्चिम में पहाड़ी की भुजा के आसपास हुआ था। जिस समय शेरनी ने उस स्त्री पर आक्रमण किया उसके साथ लगभग बीस स्त्रियां व लड़कियां मवेशियों के लिए वन में पत्तियां बीन रही थीं। मृत युवती की सहेलियां जो घटनास्थल पर उपस्थित रही होंगी मुझे पूरा किस्सा सुनाने को अतीव व्यग्र प्रतीत हो रही थीं। पता चला कि स्त्रियों की टोली उस दिन मध्याह्न से दो घंटे पूर्व रवाना हुई और वहां पहुंच कर पेड़ों पर चढ़ कर वे पत्तियां काटने लगीं। मृत युवती अपनी एक सहेली के साथ नाले की कगार पर उगे हुए एक वृक्ष पर चढ़ गई। बाद में देखने पर पता चला कि यह नाला लगभग बारह फीट चौड़ा और चार फीट गहरा था। काफी पत्तियां काट लेने पर युवती पेड़ पर से उतरने लगी। शेरनी पहले ही से आकर वृक्ष के समीप छिप गई थी और युवती को उतरते देख अपने पिछले पांवों पर खड़ी होकर उसने युवती की टांग पकड़ ली। युवती की पकड़ ढीली पड़ गई और जिस टहनी को वह पकड़े हुए थी वह उसके हाथ से छूट गई। शेरनी ने झटके के साथ उसको नाले में खींच लिया और उसकी टांग छोड़ दी। घबराई हुई बेचारी युवती भागने का प्रयत्न कर ही रही थी कि शेरनी ने उसका गला दबोच लिया। युवती को मार डालने के बाद शेरनी लाश सहित कूद कर नाले के पार झाड़ी में अदृश्य हो गई। स्त्रियों का पूरा झुंड इस नृशंस व्यापार को देखता रहा। शेरनी के दृष्टि से ओझल होते ही सब लोग भाग कर गांव वापस आ गये। उस समय आदमी दोपहर का भोजन करने घरों पर आये थे और जब सब लोग एकत्रित हो गये तब ढोलक, ताशे, पीतल के बर्तन आदि लेकर एक टोली कोलाहल करती हुई मृत युवती को खोजने चल पड़ी। आगे-आगे पुरुष थे और पीछे-पीछे स्त्रियां।

जब ये लोग नाले पर पहुंच गये और आपस में वाद-विवाद होने लगा कि आगे क्या किया जाये उसी समय सौ गज के फासले पर झाड़ियों के पीछे शेरनी दहाड़ उठी। शेरनी की गर्जना सुनकर लोगों में भगदड़ मच गई और सब लोग सर पर पैर रख कर गांव वापस भाग आये। कुछ सुस्ता लेने पर वे लोग

एक दूसरे को सामने कि जिसने पहले भगदड़ मचाई। गरम बहस का निर्णय यह हुआ कि सचमुच ही में यदि सब इतने बहादुर थे तो क्यों न लौटकर युवती को शेरनी के पंजों से छुड़ा लिया जावे? यह प्रस्ताव तुरन्त मान लिया गया और तीन बार साहस कर टोली आगे तक गई। तीसरे अवसर पर टोली के एक साहसी सदस्य ने अपनी बन्दूक दाग दी फलतः शेरनी गरज कर झाड़ी से बाहर आ निकली। अब आगे बढ़ना कठिन था। अतः युवती की खोजने का विचार स्थगित कर दिया गया। मैंने बन्दूक चलानेवाले मनुष्य से पूछा कि उसने बन्दूक हवा में चलाने की अपेक्षा झाड़ी में क्यों नहीं चलाई, तब उत्तर यह मिला साहब शेरनी गुस्से में भरी बैठी थी यदि दुर्भाग्य से उसके मर्मस्थल पर गोली न लगती तो प्राणों पर ही आ बनती।

उस दिन प्रातःकाल से तीन घण्टे तक गाँव के चक्कर लगाता रहा कि किंचित कहीं शेरनी के खोज (पदचिन्ह) मिल जावें या स्वयं शेरनी से ही मुठभेड़ हो जाए। साथ ही साथ दिल में भय भी बना हुआ था।



घूमते घूमते मैं एक नाले पर पहुँच गया। इस नाले में खूब झाड़ियाँ थीं। मैं कुछ झाड़ियों के किनारे-किनारे चल रहा था कि अकस्मात् कुछ पहाड़ी मुर्गियों का एक झुंड भागता हुआ भरभरा कर ऊपर उड़ा। एक क्षण के लिये मेरे हृदय की धड़कन रुक सी गई।

मेरे नौकरों ने एक अखरोट के वृक्ष के नीचे मेरे भोजन के लिये भूमि साफ कर रक्खी थी। भोजनोपरान्त गाँव के मुखिया ने मुझसे प्रार्थना की कि खेतों पर खड़ी फसल के कटने तक मैं भयभीत कृषकों की रक्षा करता रहूँ। उसने कहा कि यदि फसल मेरे सामने न कटी तो फिर कभी भी न कट पायेगी क्योंकि समस्त ग्रामवासी भयातुर थे और उन्हें अपने घरों से बाहर कदम रखने तक का साहस न था।

आधे घण्टे बाद गाँव के सब आदमी खेत कटवाने में जुट गये और मेरे अपने आदमी भी उनके कार्य में हाथ बटाने लगे। मैं भरी बन्दूक लिये संतरी की भाँति उनकी चौकसी कर रहा था।

सन्ध्या तक पाँच बड़े-बड़े खेतों की फसल काट कर इकट्ठी कर ली गई। केवल घरों के पास के दो टुकड़े रह गये जिनको कि मुखिया ने कहा दूसरे दिन काटा जा सकता था।

अब गाँव में स्वच्छता भी बढ़ती जा रही थी। मेरे लिये अब एक अलग कमरा तैयार कर दिया गया था और रात्रि में दरवाजे पर कटीली झाड़ियाँ काट कर जमा दी गईं ताकि हवा भी आती रहे और जानवर भी कुछ दूर ही रहें।

मेरी उपस्थिति ने ग्रामीणों में नये प्राण फूँक दिये थे और अब उनकी चाल में कुछ-कुछ स्वतन्त्रता का आभास होता था। किन्तु अभी मैं उनको इतना प्रभावित न कर पाया था कि उनसे जंगल घुमा लाने का अनुरोध करूँ। यह एक अत्यन्त आवश्यक काम था। ये लोग जंगल के चप्पे-चप्पे से परिचित थे और यदि चाहते तो अवश्य ही मुझे वह स्थान बतला सकते थे जहाँ शेरनी या उसके खोज मिलने की संभावना थी।

यह बात तो अब ध्रुव सत्य थी कि नरभक्षी एक शेर के अतिरिक्त और कोई नहीं है किन्तु अभी यह भली भाँति साबित न हो पाया था कि शेर नर है या मादा और न यह मालूम था कि वह जवान है या बुड्ढा। ये सब बातें केवल खोज देखने पर ही मालूम हो सकती थी।

प्रातःकाल उठा तो चाय पीकर मैंने गाँववालों से कहा कि मेरे आदमियों को साग खाने की प्रबल इच्छा हो रही है और पूछा कि यदि आसपास में कहीं घुइँ (पहाड़ों में पाई जाने वाली एक प्रकार की जंगली सब्जी) हों तो बतावें।

पूर्व से पश्चिम की ओर जानेवाली पहाड़ी के शिखर पर घाटी समाप्त हुई थी और जहाँ मैंने रात बिताई थी उस ओर घाम के नाले सड़क नीचे की ओर चले गये थे। गाँववालों ने बताया कि इन मकानों में काफी घुरड़ मिल सकते थे और बहुत से आदमी मेरे उधर से चलने को प्रस्तुत हो गये। मैंने अपनी प्रसन्नता को छिपाते हुए तीन आदमी छाँट लिये और मुखिया से कह दिया कि यदि सचमुच मकान में काफी घुरड़ मिल गये तो मैं एक घुरड़ अपने आदमियों के लिये तथा दो गाँव वालों के लिये मार लाऊँगा। सड़क पार करके हम ढालू रास्ते से नीचे उतरने लगे। हम बड़ी सावधानी से इधर उधर देखते जा रहे थे किन्तु कुछ भी न दिखाई पड़ा। लगभग आध मील जाने पर नीचे दोनों नाले एक स्थान पर मिल गये थे। उन नालों के संगम के दाहिनी ओर एक हरा भरा ढालू मैदान था। इधर से इस मैदान का बड़ा सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता था।

कुछ देर से मैं एक झाड़ के पत्तों के सहारे बैठा अपने सामने के मैदान का निरीक्षण कर ही रहा था कि पहाड़ के ऊपर कोई वस्तु मुझे हिलती डुलती दिखाई दी। सावधानी से देखने पर पता चला कि हिलने वाली वस्तु एक घुरड़ था जो अपने कानों को फड़फड़ा रहा था। घास में खड़े होने के कारण केवल उसका सिर ही दिखाई पड़ रहा था। मेरे साथियों ने उसे अभी तक देखा नहीं था। अब घुरड़ ने सिर हिलाना बन्द कर दिया था और उसके शरीर का रंग आसपास की हरियाली में छिप गया था। इसलिये उन्हें मैं घुरड़ नहीं दिखा सका। जानवर की स्थिति के विषय में उनको थोड़ा सा अन्दाज देकर मैंने उनको बिठा लिया और फिर निशाना साधा। मेरे हाथ में एक पुरानी मार्टिनी हेनरी (नीचे खुलने वाली पुराने किस्म की राइफल) थी। अपनी तगड़ी मार के लिये यह बन्दूक बदनाम थी किन्तु निशाना इसका बड़ा सच्चा था। फासला लगभग दो सौ गज का रहा होगा किन्तु इससे कोई फर्क न पड़ता था। झुक कर मैंने झाड़ के एक ठूँठ पर राइफल साधी और स्थिर साध कर चला दी। ब्लैक पाउडर (धुआँदार बारूद) वाले कारतूस के धुएँ से मेरे सामने के दृश्य पर क्षण भर के लिये पर्दा-सा गिर गया और साथ के लोगों ने बताया कि गोली का असर कुछ भी न हुआ और वह सम्भवतः किसी चट्टान या पत्थर पर जा लगी थी। अपनी जगह पर बैठे बैठे मैंने पुनः बन्दूक भर ली। फिर लगा कि जहाँ पर मैंने बन्दूक चलाई थी उससे कुछ नीचे की घास हिल रही थी। क्षण ही में

मुझे घुरड़ का पिछला धड़ दिखाई पड़ा। फिर घास में से छूट कर घुरड़ बड़े वेग से नीचे की ओर लुढ़कने लगा। आधे ढाल तक लुढ़क कर वह फिर घास में अदृश्य होगया। उसी झाड़ी में वहां दो घुरड़ और लेटे हुए थे जो मृत घुरड़ के लुढ़कने की आवाज से चौंक पड़े थे। भयभीत होकर फुफकारते हुए वे घास से बाहर कूद पड़े और विद्युत गति से पहाड़ी पर चढ़ने लगे। अब फासला कम रह गया था। मौका ताक कर मैं प्रतीक्षा करने लगा कि दो में से बड़े घुरड़ ने अपनी चाल कुछ कम कर दी। मैंने तब उसकी पीठ पर गोली चला दी और जैसे ही दूसरा घुरड़ मुड़ कर पहाड़ के दूसरी ओर भागने लगा मैंने उसकी खाल पर भी गोली मार दी।

किसी अवसर पर असम्भव से असम्भव काम भी मनुष्य कर लेता है। कष्ट में लेटे लेटे दो सौ गज के फासले पर घुरड़ की गर्दन पर के सफेद धब्बे पर निशाना लगाना एकदम असाध्य सा था। किन्तु फिर भी 'स्मोक पाउडर' द्वारा फेंकी गई गोली अपने लक्ष्य पर सही बैठ गई और बन्दूक की आवाज पर घुरड़ घूमने लगा। जब तक पहला घुरड़ लुढ़कता हुआ चट्टानों के पास पहुंचा तब तक बाकी दोनों घुरड़ भी नीचे को लुढ़कने लग गये थे। गांववालों ने पहले कभी राइफल की मार देखी न थी। जब तीनों घुरड़ लुढ़कते हुए हमारे बिल्कुल सामने आकर रुक गये तब उनके आश्चर्य की सीमा न रही। कुछ क्षणों के लिये चपावत के मरभक्षी का वे भूल से गये और लपक कर घुरड़ों को उठाने नाले में उतर पड़े। घुरड़ों के शिकार से मुझे बड़ा लाभ हुआ। पेट भर खाने को मांस मिलने के साथ ही साथ लोगों का मुझ पर विश्वास सा होगया।

शिकार के किस्से सदा ताजे रहते हैं और बार-बार सुना चुकने पर भी उनका मजा बना ही रहता है। मैं कुछ दूर पर बैठा हुआ जलपान करते हुए ग्रामीणों की गप्पें सुनता जा रहा था। कोई जोर जोर से चिल्लाकर अपने मित्रों को बता रहा था कि किस भांति घुरड़ एक मील की दूरी पर जादू की गोलियों से मार लिये गये और कोई इस बात पर दांतों तले उंगली दबा रहा था कि मरे हुए घुरड़ साहब के पैरों पर कैसे आ रुके।

मध्याह्न का भोजन कर चुकने पर मुखिया ने मुझसे पूछा कि मुझे कितने मनुष्यों की आवश्यकता होगी और मैं किस ओर जाऊंगा। मैंने पास खड़े लोगों पर दृष्टि डाली तो सब ही को उत्सुक पाया। मेरे मन अपने दो पुराने साथियों

को छोड़ दिया और पथ प्रदर्शन के लिये उन्हें साथ लेकर उस ओर चल पड़ा जिधर आदमखोर ने अपना अंतिम शिकार किया था।

हमारे पहाड़ों में रहनेवाले लोग अधिकांश हिन्दू हैं और शवों का दाहकर्म करते हैं। यदि कोई मनुष्य आदमखोर द्वारा मार डाला जाता है तो मृत व्यक्ति के बांधवों का यह कर्तव्य हो जाता है कि दाहकर्म के हेतु शरीर का कुछ न कुछ भाग भले ही हड्डी के टुकड़े हों, ले आवें।

इस मृत युवती का अभी दाहकर्म नहीं हुआ था। इसीलिये जब हम वन को प्रस्थान करने लगे तो उसके रिश्तेदारों ने हमसे अनुरोध किया कि उसके शरीर का कुछ न कुछ अवशेष लेते आवें।

मुझे अपने बाल्यकाल से ही जंगल की बातों का पठन व उनकी व्याख्या करने का व्यसन सा (hobby) है। इस बार मेरे सामने उन स्त्रियों का आंखों देखा वर्णन था जो घटनास्थल पर उपस्थित थीं किंतु चश्मदीद गवाहों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। हां जंगल के कुछ चिह्न स्वयं अपनी कहानी साफ कह दिया करते हैं।

घटनास्थल पर पहुंचते ही देखने पर मुझे मालूम हो गया कि शेरनी बिना दिखाई पड़े वृक्ष तक केवल एक ही रास्ते से पहुंच सकती थी और वह रास्ता था नाले के ऊपर से। पेड़ से सौ गज दूर से नाले में घुस पड़ा और खोजने पर दो बड़ी चट्टानों के बीच छनी हुई मुलायम धूल पर अंकित शेरनी के निशान मुझे दिखाई पड़े। पद-चिह्नों से पता चल गया कि आदमखोर अवश्य ही शेरनी है और प्रौढ़ावस्था में पदार्पण कर चुकी है।

नाले के कुछ आगे और वृक्ष से लगभग दस गज दूर शेरनी एक चट्टान के पीछे लेट चुकी थी। संभवतः वह वृक्ष पर से उतरती हुई स्त्री की प्रतीक्षा करती रही होगी। मृत स्त्री ने सबसे पहले अपनी आवश्यकतानुसार पत्तियां काट लीं और जैसे ही एक पतली शाखा के सहारे वह वृक्ष से नीचे उतरने लगी तो शेरनी सरक कर आगे बढ़ आई और अपने पिछले पांवों पर खड़ी होकर उसने औरत के पैर को पकड़ कर अन्त में उसे नाले में खींच लिया। वृक्ष की वह टहनी जिसके सहारे मृत स्त्री लटकी हुई अपने प्राणों की रक्षा करने का व्यर्थ प्रयत्न करती रही होगी अपना फसाना साफ कह रही थी। जिस स्थान पर स्त्री के हाथ से टहनी छिटकी होगी उस जगह घास के बिस्तर पर उसकी हथेली से नुचे हुए

चमड़े के कुछ रेशे अब भी लटक रहे थे। जिस स्थान पर शेरनी ने स्त्री के प्राण लिये थे वहाँ हाथापाई के स्पष्ट चिह्न थे और पास ही गिरा हुआ कुछ रक्त सूखकर जम गया था। यहाँ से रक्त की धार जो सूख चुकने पर भी साफ दिखाई पड़ रही थी नाले के दूसरे किनारे की ओर चली गई थी। रक्त की धार देखते हुए हम उन झाड़ियों पर जा पहुँचे जहाँ बैठकर शेरनी ने स्त्री को खाया था।

जनसाधारण में यह पक्का विश्वास है कि आदमखोर मनुष्य या स्त्रियों के हाथ पैर या सिर को नहीं खाते किंतु यह विश्वास गलत है। आदमखोर यदि खाते समय न छेड़े जावें तो सब कुछ खा डालते हैं यहाँ तक कि रक्त से सने हुए कपड़े भी। खैर इस बार हमको मृत स्त्री के कुछ कपड़े व हड्डियों के टुकड़े मिले जिनको हमने एक साफ कपड़े में लपेट लिया। यह लाश का बहुत ही थोड़ा शेष भाग था किंतु तो भी दाहकर्म के लिये पर्याप्त था। इस उच्चकुल की स्त्री की राख को गंगा माता में विसर्जन करने के लिये यह हड्डी के थोड़े से टुकड़े काफी थे।

चाय पी चुकने पर मैं दूसरे घटनास्थल पर पहुँचा। गाँव की आम सड़क से कुछ इधर मस्व का एक टुकड़ा था। इस टुकड़े के मालिक ने अपने लिये एक झोपड़ा बना रक्खा था। इस मनुष्य की पत्नी व उसकी बहिन झोपड़े से कुछ ऊपर घास काट रही थीं कि अकस्मात शेरनी निकली और बड़ी बहिन को उठा ले गई। छोटी बहिन ने अपनी हँसिया उठा ली और वह सौ गज तक शेरनी के पीछे भागती रही। चिल्लाती हुई वह शेरनी से अनुरोध करती जा रही थी कि उसकी बहिन के स्थान पर वह उसे ले जाय। उसके इस अविश्वसनीय दुस्साहसपूर्ण कार्य को गाँव के समस्त लोगों ने देखा।

सौ गज तक शेरनी अपने शिकार को लिये चली गई और फिर उस भूमि पर एक बार गरजती हुई अपना पीछा करने वाली स्त्री पर झपट पड़ी। वह वीर रमणी गाँव की ओर भागी लोगों का गुमान कि उस पर क्या बीत चुकी थी। किन्तु उसे मालूम न था कि गाँववाले स्वयं सब कुछ देख चुके थे।

युवती के मुँह से साफ आवाज नहीं निकल रही थी। लोगों ने सोचा कि भय थकान और उत्तेजना के कारण ऐसा हो गया होगा। किंतु जब वह मृत स्त्री की असफल खोज कर वापस लौटे तो उनको मालूम हुआ कि यह अभागिन अपनी वाणी की शक्ति खो बैठी थी। यह दुखद कहानी मुझे गाँव में सुनाई गई। जब मैं उस युवती के झोपड़े पर पहुँचा तब मैंने उसे कपड़े धोने में मग्न पाया।

उसे गुज़रे हुए बारह साल हो चुके थे।

उसकी आँखों में दुःख की स्पष्ट छाप थी, किन्तु और सब बातों से वह एकदम ठीक लगती थी। जब मैंने उसे बताया कि मैं चम्पावत के आदमखोर को मारने आया हूँ, तो उसने झुककर मेरे पाँव छू लिये। मैं खिसिया-सा गया। क्या यह ज़रूरी था कि मैं आदमखोर को मारने में सफल ही होऊँगा?

हाँ, यह सच था कि मैं इस नरभक्षिणी को मारने का प्रण करके इधर आया था, किन्तु यह नरभक्षी इस बात के लिये कुख्यात थी कि वह एक प्रदेश में दो बार हत्या नहीं करती थी और स्थान पर दुबारा नहीं लौटती थी। कई सौ वर्ग मील लम्बा-चौड़ा उसका राज्य था, जिसमें वह चलती रहती थी। ऐसी अवस्था में उसे खोज पाना घास के ढेर में सुई ढूँढ़ना था।

यद्यपि मैं नैनीताल में कई योजनाएँ बनाकर चला था, जिसमें से एक मैं आज़मा ही चुका था और फिर से उसे आज़माने की मेरी इच्छा न थी। जंगल में पहुँचकर शेष योजनाओं को मैंने उचित न पाया। वहाँ कोई भी मनुष्य ऐसा न था जो मुझे राय दे सकता, क्योंकि कुमायूँ में यह सर्वप्रथम आदमखोर था। कुछ न कुछ करना फिर भी आवश्यक था।

तीन दिन मैं सुबह से शाम तक जंगलों में भटकता रहा। जो जो रास्ते थे, अड्डे, मूल गाँववालों ने बताये, वह मैंने छान डाला।

यहाँ पर मैं एक बात का खण्डन कर देना चाहता हूँ। पहाड़ों में यह आम धारणा है कि कई अवसरों पर आदमखोरों को आकर्षित करने के लिये मैंने स्त्रियों की पोशाक पहनी है और उनको हँसिया या कुल्हाड़ी से मारा है, किन्तु बात ऐसी नहीं है। मैंने केवल कभी-कभी साड़ी पहनकर छद्म वेष में घास काटी है और वृक्ष पर चढ़कर पत्ते काटे हैं। किन्तु इन चालाकी से मुझे कभी भी सफलता नहीं मिली, यद्यपि दो बार मैं ऐसे स्थान पर चढ़ चुका हूँ जहाँ पहले आदमखोर आकर चट्टान या गिरे हुए वृक्ष की आड़ में छिप गया था, पर उसने मुझे गोली चलाने का कभी अवसर नहीं दिया।

हाँ, तो इस बार ऐसा प्रतीत हो रहा था कि नरभक्षी ने यह प्रदेश छोड़ दिया है। अतः मैंने पाली से १८ मील पश्चिम में चम्पावत जाने का निश्चय किया। हम सवेरे ही रवाना हो गये और धुनाघाट में जलपान करके सूर्यास्त के समय चम्पावत पहुँच गये। यहाँ सड़कों पर अकेले चलना खतरे से खाली समझा न जाता था।

एक गाँव से दूसरे गाँव को जाने के लिये लोग जत्थे बना कर चलते थे। चंपावत पहुँचते पहुँचते हमारी आठ मनुष्यों की टोली में २२ जवानों की और वृद्धि हो गई। इनमें से कुछ आदमी उन बीस मनुष्यों की टोली में से थे जो दो माह पूर्व चंपावत आये थे। उन्होंने मुझे निम्नलिखित किस्सा सुनाया।

'चंपावत की यह बाजू सड़क पहाड़ के दक्षिण ओर होती हुई घाटी से ५० गज ऊपर को जाती है। आज से दो माह पूर्व हम बीस जवानों की टोली चंपावत बाजार को जा रही थी और जब दोपहर के समय हम इस सड़क पर होकर गुजर रहे थे तब हमें नीचे घाटी में आती हुई किसी मनुष्य की चीत्कार सुनाई दी। समीप आती हुई उन चीखों को सुनकर हम भय से कांप उठे और इतने ही में सामने से एक नग्न स्त्री को लिये आती हुई एक शेरनी दिखलाई पड़ी। शेरनी के एक ओर स्त्री के केश भूमि पर घसिटते जा रहे थे और दूसरी तरफ उसकी टांगें। शेरनी स्त्री को पीठ से पकड़े हुई थी। स्त्री छाती पीटती हुई चिल्ला-चिल्ला कर सहायता की प्रार्थना कर रही थी।

हम लोगों से पचास गज की दूरी पर शेरनी अपने शिकार को लादे हुए निकल गई। फिर धीरे धीरे स्त्री की चीत्कार बन्द होगई और हमने अपना रास्ता पकड़ा।

'और तुम लोग संख्या में बीस होते हुए भी चुपचाप देखते रहे?' मैंने पूछा।

'हाँ साहब, हम चुपचाप देखते रहे क्योंकि हम बहुत डरे हुए थे और हुजूर डरे हुए आदमी कर ही क्या सकते हैं? मान लीजिये कि अपने प्राणों को संकट में डाल कर हम उस स्त्री को छुड़ा भी लेते तो हमारा प्रयत्न व्यर्थ जाता क्योंकि वह स्त्री क्षत विक्षत थी और घावों के मारे अवश्य ही मर जाती।

तदनन्तर मुझे मालूम हुआ कि मृत स्त्री चंपावत के एक गाँव की रहने वाली थी और शेरनी के आक्रमण के समय जंगल में ईंधन के लिये लकड़ियाँ बीन रही थी। उसकी सहेलियों ने भाग कर गाँव में घटना की सूचना दे दी। जैसे ही कुछ लोग लाश को ढूँढने के लिये एकत्रित हो रहे थे कि घटना के साक्षी बीस मनुष्यों की टोली उस गाँव में पहुँच गई। इन्हें मालूम था कि शेरनी लाश को किस दिशा में ले गई थी। अतः वह भी खोजने वालों के संग हो लिये। आगे का वृत्तान्त मैं उन्हीं के शब्दों में लिखता हूँ।

'हम पचास-साठ जवान मृत स्त्री की खोजने चले और हम में से कई

बन्दूकों से सशस्त्र थे। हमें एक स्थान पर उस स्त्री की जमा की हुई लकड़ियां मिलीं और इस स्थान से लगभग एक फर्लांग के फासले पर उसके कुछ फटे हुए कपड़े। हम लोगों ने जोर से ढोल पीटना व हवाई बन्दूक छोड़ना आरम्भ कर दिया और इस भांति हम में से आधे आगे बढ़कर घाटी के ऊपर पहुंच गये। यहां हमें मृत युवती एक बड़ी शिला पर पड़ी हुई मिल गई। शेरनी ने शव को चाट कर साफ करने के अतिरिक्त छुआ भी न था। चूंकि हमारे साथ कोई स्त्री न थी इसलिये नग्न शव को धोती में लपेटते समय हमने मुंह फेर लिये। नग्नावस्था में वह ऐसी प्रतीत हो रही थी मानो गहरी निद्रा में सो रही हो व जागने पर उसे लज्जा मालूम होती।

लोगों ने कई रातें दरवाजों पर कुण्डियां लगाकर बैठ-बैठ काट दीं। ऐसे किस्से रात दिन हो रहे थे। ग्रामीणों के चरित्र एवं जीवन में एक महान परिवर्तन सा हो चला था। और होना भी क्या नहीं क्योंकि समस्त प्रदेश में आदमखोर का आतंक फैला हुआ था। इन लोगों के बीच में यदि कोई बाहर का मनुष्य आ जाता तो उसे लगता कि वह एक ऐसे करुण एवं बीभत्स संसार में आ गया है जहां नुकीले दांतों और पंजों का राज्य है और जहां डर के भय से लोग अंधकारमय गुफाओं में शरण ले रहे हैं। इन दिनों मैं अनुभवहीन था किन्तु फिर भी भयभीत लोगों के उस देश में कुछ दिनों रहने से मुझे पक्का विश्वास हो गया कि आदमखोर की मनहूस छाया के नीचे रहने से बढ़कर भयंकर कोई अन्य काम नहीं। अब मेरा बत्तीस वर्षों का अनुभव इस बात की पुष्टि करता है।

चम्पावत के तहसीलदार के लिये मुझे कुछ सरकारी परिचय पत्र दिये गये थे। रात को तहसीलदार मुझसे मिलने डाकबंगले में आये। उन्होंने मुझे राय दी कि अगले दिन मैं एक दूसरे मकान में चला जाऊं जिसके इर्द-गिर्द शेरनी ने कई व्यक्तियों को मारा था। दूसरे दिन तड़के ही मैं तहसीलदार को लेकर नये बंगले की ओर चल पड़ा। मैं खाना खा ही रहा था कि दो मनुष्य खबर लाये कि दस मील दूर एक गांव में शेरनी ने एक गाय मार डाली है। तहसीलदार को एक आवश्यक काम से चम्पावत वापस जाना था। अतः सन्ध्या को वापस आने पर मेरे विश्राम की व्यवस्था करके वह चले गये। मेरे पथ प्रदर्शक चलने में तेज थे और एकदम ढालू रास्ता होते हुए भी दस मील का फासला हमने पैदल मारने

तय कर लिया। गाँव पहुँचने पर मुझे वह गौशाला में ले गये जहाँ एक नन्ही सी बछिया मरी पड़ी थी और लाश का आधा भाग खाया जा चुका था। स्पष्ट था कि बछिया का हत्यारा शेर नहीं बल्कि तेंदुआ था। तेंदुए के लिये लाश पर बैठने की न तो मेरी इच्छा थी और न मेरे पास समय ही था। इसलिये खबर लाने वालों को उचित पारितोषिक देकर मैं डाकबंगले वापस चला आया। तहसीलदार अभी लौटा न था। दिन डूबने में अभी एक घंटे का समय था। मैं डाकबंगले के चौकीदार को साथ लेकर उस ओर चल पड़ा जिधर उसके कहने के अनुसार शेरनी पानी पिया करती थी। इस स्थान से पानी का वह सोता निकला हुआ था जिससे सम्पूर्ण ग्राम की सिंचाई होती थी। सोते के इर्द-गिर्द मुलायम कीचड़ में शेरनी के कई दिन पुराने निशान अंकित थे। किन्तु ये निशान उन खोजों से भिन्न थे जो मुझे पाली के नाले में मिले थे।

डाकबंगले लौटने पर मैंने तहसीलदार को उपस्थित पाया। बरामदे में बैठ कर मैंने उन्हें अपनी सम्पूर्ण गतिविधियाँ सुना दीं। दिन भर जंगल में भटकने पर उन्होंने दुःख प्रकट करते हुए कहा कि रास्ता खराब होने के कारण वह अब चलेंगे। मुझे यह सुनकर बड़ा विस्मय हुआ क्योंकि दिन में दो बार वह मुझसे कह चुके थे कि रात को मेरे साथ रहेंगे। उनके रात में मेरे संग रहने का प्रश्न न था किन्तु वे उस घने वन में से जाते हुए बड़ा खतरा उठा रहे थे। मैंने उन्हें बहुत समझाया किन्तु उन्होंने एक भी न सुनी। एक आदमी को साथ लेकर वह चल पड़े। आदमी के हाथ में एक टिमटिमाती लालटेन थी जिसमें से धुँधले प्रकाश की क्षीण रेखायें निकलकर छाती हुई रात्रि के निविड़ अंधकार में खो सी जा रही थी। मेरे मुँह से दबी आवाज में आह निकल पड़ी और जब लालटेन की टिमटिमाहट अंधकार में विलीन हो गई तब मैं कमरे में चला आया।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैं पास के विस्तृत चाय के पेड़ों के बगीचों में घूमने में मग्न रहा। फिर सोते में स्नान करके डाकबंगले लौटा तो तहसीलदार को बैठा पाया। मैंने सन्तोष की एक गहरी साँस ली। मैं खड़ा उनसे बातें करता जा रहा था और नीचे ढाल में बसे हुए ग्राम की ओर देखता जा रहा था जिसके लोग आर जाते हुए गाते थे। और तब मेरी दृष्टि एक मनुष्य पर पड़ी जो गाँव से हमारी ओर सरपट चला आ रहा था। उसके कुछ समीप आ जाने पर मैंने देखा कि कभी वह चल रहा था और कभी दौड़ पड़ता था। मालूम होता

था कि वह किसी आवश्यक सूचना का वाहक था। तहसीलदार को ठहरा कर मैं दौड़ कर पहाड़ से नीचे उतर पड़ा। मुझे अपनी ओर आते देख वह मनुष्य सुस्ताने पत्थर पर बैठ गया। ज्यों ही मैं उसके समीप पहुंचा वह चिल्ला उठा साहब जल्दी आइये आदमखोर ने एक लड़की को मार डाला है।

चुपचाप इसी जगह ठहरे रहो कहते हुए मैं उल्टे पांव डाकबंगले को भागा। राइफल व कारतूस उठाते-उठाते मैंने तहसीलदार को खबर सुना दी और साथ ही चलने के लिये कहा।

खबर लानेवाला मनुष्य उत्तेजित स्वभाव वाले उन महानुभावों में से था जिनकी जबान और टांगें साथ साथ काम नहीं कर सकतीं। जब वह बोलता तो खड़ा हो जाता और चलने पर उसकी जबान में ताला पड़ जाता था। अन्त में मैंने उससे कहा कि वह बोले बगैर सरपट चलता चले और हमें रास्ता बतलाये।

हम चुपचाप पहाड़ पर से नीचे उतरने लगे। गांव में पहुंचते ही उत्तेजित स्त्री-पुरुषों के झुंड ने मुझे घेर लिया और जैसा कि प्रायः ऐसे अवसरों पर हुआ करता है प्रत्येक अपने शब्दों में मुझे किस्सा सुनाने का प्रयत्न करने लगा। भीड़ में एक आदमी कोलाहल को शान्त करने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा था। मैं उसका हाथ पकड़ कर एक ओर ले गया और घटना का विवरण पूछा। उसने गांव से लगभग एक फर्लांग दूर एक टीले की ओर इशारा किया जिस पर कुछ बांज के पेड़ खड़े थे। उसने बताया कि गांव के कुछ लोग पेड़ों के नीचे लकड़ियां बटोर रहे थे कि शेरनी ने झपट कर १६-१७ वर्ष की एक बालिका को पकड़ लिया। उसके साथी तुरन्त भाग कर गांव में आ गये। उन्हें मालूम था ही कि मैं डाक बंगले में ठहरा हुआ हूं। अतः तत्काल एक दूत मुझे बुलाने दौड़ा दिया गया।

जिस मनुष्य से मैं बातें कर रहा था उसकी स्त्री घटना की साक्षी थी। उसने ऊपर से उस जंगल की ओर संकेत किया जिसके नीचे शेरनी ने लड़की को पकड़ा था। किसी भी मनुष्य ने आगे बढ़ कर यह देखने का प्रयास न किया कि शेरनी लड़की को किस दिशा में ले गई।

लोगों को चुपचाप गांव में ही रहने का आदेश देकर मैं उस जगह की ओर चल दिया। यह बिल्कुल खुला हुआ स्थान था और विश्वास न होता था कि शेर के आकार का पशु किस भांति बिना दिखे वहां आदमियों के पास पहुंच गया। लोगों का ध्यान लड़की की दर्द भरी चीख सुनने पर आकर्षित हुआ था।

घटना के परिणाम स्वरूप धरती पर रक्त का एक सूखा तालाब अवशेष था। रक्त की कालिमा के विपरीत पास ही पड़ा बिखरा हुआ लाल रंग के मनियों का एक धागा था।

यहां से रक्त की धार पहाड़ के किनारे तक चली गई थी। शेरनी के स्पष्ट साफ दिख रहे थे। रास्ते के एक ओर खून के बड़े धब्बे पड़े थे जिधर लड़की का सर रहा होगा और दूसरी ओर टांगों के घसीटने के चिह्न थे। आध मील ऊपर चढ़ने पर मुझे लड़की की साड़ी फटी हुई मिली और कुछ दूर आगे पहाड़ के शिखर पर उसका लहंगा। पुनः शेरनी एक नग्न स्त्री को ले जा रही थी। किन्तु गनीमत थी कि इस अवसर पर स्त्री मर चुकी थी। पहाड़ के ऊपर शेरनी के साफ पदचिह्न तो एक झाड़ी में चले गये थे। झाड़ी के कांटों में मृत बालिका के कुछ बाल फंसे उलझे हुए थे। इसके आगे स्याह बिच्छुओं की झाड़ी में होते हुए निकले थे। मैं झाड़ी का चक्कर लगा कर आगे बढ़ने ही को था कि पीछे से सूखे पत्तों की चाप सुनाई पड़ी। मुड़ कर देखा तो बन्दूक से सुसज्जित एक मनुष्य मेरी ओर चला आ रहा था। मैंने उससे पूछा कि मेरे आदेश का उल्लंघन करते हुए वह क्यों मेरे पीछे चला आया। उत्तर में उसने बताया कि वह तहसीलदार की आज्ञा से आया था और उनकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस उसमें न था। मेरे साथ चलने पर वह तुला हुआ था और वाद-विवाद करने से अमूल्य समय नष्ट होता था। अतः मैंने उसका जूता खोल कर चुपचाप मेरे पीछे आने की आज्ञा दे दी। मैंने उससे यह भी कह दिया कि इधर-उधर सावधानी से देखता हुआ चले।

मैं स्वयं जांघिया, हल्के मोज़े और रबर के तल्ले वाले जूते पहिने हुए था। बिच्छुओं की झाड़ी से बच निकलने का कोई उपाय न देख कर मैं घोटों से छिलता हुआ आगे बढ़ गया। झाड़ी के पीछे रक्त की धार बिल्कुल दाहिनी ओर मुड़ गई थी और फिर पहाड़ से एकदम नीचे चली गई थी। पहाड़ के नीचे घाटी में निगाल व 'गैन की घनी झाड़ियां थीं और रक्त की धार लगभग सौ गज नीचे एक पानी के नाले तक चली गई थी। अपने स्थान से खिसके हुए पत्थरों व मिट्टी से देखने से मालूम होता था कि शेरनी को यहां पर अपना शिकार ले चलने में काफी परेशानी हुई होगी। पांच छः सौ गज तक मैं नाले के किनारे किनारे चलता गया। जब जब मैं आगे बढ़ रहा था मेरे साथी की घबराहट भी बढ़ती

जा रही थी। कई बार उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और सजल नेत्रों से मेरी ओर देख कर फुसफुसाने लगा "साहब मैंने अभी-अभी शेर को हुंकारते हुए सुना है।"

आधे पहाड़ से नीचे उतर आने पर मुझे एक २५-३० फीट ऊँची चट्टान नजर आई। मेरे साथी की 'आदमखोर के शिकार' के मजे लूटने की शक्ति अब समाप्त हो चुकी थी। अतः मैंने उससे कहा कि मेरे लौटने तक वह चुपचाप चट्टान पर बैठा रहे। यह सुनकर उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा और एक छलांग में बन्दर की भांति वह चट्टान पर जा बैठा। उसे सकुशल बैठा देख मैं पुनः पानी के किनारे चलने लगा। पानी का सोता चट्टान के किनारे घूमता हुआ सौ गज नीचे एक गहरे नाले में मिल गया था। इसी संगम के पास एक छोटा सा पोखर था। पास पहुँचने पर देखा तो पोखर के पास खून के धब्बे पड़े हुए थे। शेरनी अवश्य ही मृत बालिका को यहाँ तक लाई थी और मेरे पहुँचने से उसके भोजन में विघ्न पड़ा था। कीचड़ में अंकित गहरे खोदों से मटमैला पानी भरता जा रहा था और इधर-उधर कुछ टूटी हड्डियाँ बिखरी पड़ी थीं। एक चीज वहाँ पर ऐसी पड़ी हुई थी जिसे मैं बहुत दूर से देखता चला आ रहा था। समीप आने पर मालूम हुआ कि यह लड़की की टाँग थी।

इधर कई वर्षों से मैं नरभक्षी शेरों का शिकार करता आया हूँ किन्तु ऐसा मनहूस दृश्य मैंने कभी न देखा था। मृत बालिका की उस सुगठित टाँग को शेरनी के पैने दाँतों ने इस भाँति काट दिया था जैसे किसी ने तेज कुल्हाड़ी की चोट से अलग कर दिया हो। ठीक घुटने से कुछ नीचे टाँग कटी हुई थी। अब भी उसमें से गर्म खून टपक रहा था। कटी हुई टाँग को देखने में मैं इतना तन्मय हो गया था कि भूल ही गया कि मैं खतरे से घिरा हुआ था। लपक कर मैंने बन्दूक का कुन्दा कंधे से सटा लिया और दोनों उँगलियाँ घोड़े पर रख लीं। सर उठा कर देखा तो लगभग १५ गज ऊपर से मिट्टी का एक ढेला लुढ़कता हुआ धप् से पोखर में आ गिरा। मैं एक नौसिखिया शिकारी की सी भूल कर बैठा था अन्यथा मुझे इस प्रकार खुली जगह में खड़े न रहना चाहिए था। मैंने तत्काल अपनी राइफल जो ऊपर को उठाई उसी से संभवतः मेरे प्राण बच गये थे। शेरनी जब मुझ पर कूदने से रुकी या पीछे लौटकर भागी उसी समय उसके पैरों से खिसक कर यह मिट्टी का ढेला गिर पड़ा था।

पोखर का किनारा ऊंचा था और दौड़ कर चढ़ने के अतिरिक्त और कोई चारा न था। मैंने कुछ पीछे लौट कर दौड़ लगाई और एक छलांग में पोखर को लांघते हुए किनारे की झाड़ी को पकड़ लिया और उचक कर ऊपर आ गया।

स्ट्रौबिलैन्थ्स के मुड़े हुए डंठल धीरे धीरे तन कर सीधे हो रहे थे। शेरनी अवश्य ही अभी इधर से गुजरी थी। पास ही चट्टान पर रक्त के चिह्न पड़े थे। जब शेरनी मुझ पर कूदने आई थी तब घायल लाश को इसी चट्टान पर रख गई थी। आगे बड़ा सा पथरीला प्रदेश था। इसी पर होकर शेरनी लाश सहित गई था। इन चट्टानों पर चलना बड़ा कठिन था। चट्टानों की दरारों व खाइयों के ऊपर किल्माड़ व रोस की घनी लताएं उग आई थीं। एक भी कदम गलत रखने पर अवश्य ही हाथ-पैरों से हाथ धोना पड़ता। इन बाधाओं के कारण रुक रुक कर चलना पड़ रहा था और उधर शेरनी को अपना कलेवा चट करने का अवकाश मिलता जा रहा था। मुझे कई स्थानों पर निशान मिले जहां बैठ कर शेरनी सुस्ताई थी। आगे रक्त की धार कम होती जा रही थी।

शेरनी का यह चार सौ छत्तीसवां मानव शिकार था और लाश को खाते समय लोगों द्वारा छेड़े जाने की तो वह आदी थी किंतु मेरा समझ में इस समय प्रथम बार ही इतनी दृढ़ता से उसका पीछा किया गया था। फलतः गुर्रा कर वह अपना क्रोध प्रकट करने लगी।

शेर की गर्जना का पूरा आतंक केवल वही समझ सकता है जो मेरी जैसी कठिन परिस्थिति में फंस जावे। चारों ओर घना वन, इधर-उधर बड़ी-बड़ी चट्टानें और कदम कदम पर दरारों में गिर कर गहरे नुकसान का भय।

आप सब में आग के पास बैठ कर इस कहानी को पढ़ते होंगे। मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता कि आप मेरी भावनाओं को समझ पावेंगे।

शेरनी की गर्जन से व आक्रमण की सम्भावना से मुझे भय भी लग रहा था और आशा भी। मैं सोच रहा था कि यदि क्रुद्ध होकर शेरनी मुझ पर अकस्मात् आक्रमण कर दे तो मुझे यहां आने के कार्य को सिद्ध करने और उसके समस्त अत्याचारों का बदला लेने का सुअवसर मिल जाय। किन्तु उसका गुर्राना एक धमकी मात्र था। जब उसने देखा कि उसके गुर्राने पर मैं और भी तत्परता से उसका पीछा कर रहा हूं तो वह चुप हो रही।

मैं चार घंटे से उसका पीछा कर रहा था। सामने की झाड़ी की ढलान में कई

यार दम चुका था किंतु गारनी का एक बाल भी मुझ अब तक नहीं मिला था।

मामने के पहाड़ों पर बन्ने हुए अंधकार को देख कर आगे बढ़ना मने उचित न समझा।

इस बार भी मृत युवती हिन्दू थी और दाहकर्म के लिये शव का कुछ न कुछ भाग ले जाना आवश्यक था। इसीलिये पत्थर के पास से गुजरते समय मने टांग को भूमि में गाड़ दिया ताकि रात में शेरनी उसे उठा न ले जाय।

चट्टान पर बैठा मनुष्य मुझे देख कर बड़ा संतुष्ट हुआ। मेरे देर तक न लौटने से और शेरनी की गर्राहट सुनकर उसे पक्का विश्वास हो गया था कि साहब को भी शेरनी ने अपने भोजन में शामिल कर लिया है। उसने मुझसे स्पष्ट कह दिया साहब सारी फिक्र इस बात की थी कि अकेले गाँव कैसे लौटूँ?

पत्थर से नीचे उतरते समय मैं सोचता जा रहा था कि मेरा हुर्ड राइफल से मनोहर मनुष्य के आगे कदापि नहीं चलना चाहिये। किंतु मुझे शीघ्र ही अपना विचार बदल देना पड़ा। मेरे साथी के हाथ में ४५० बन्दूक थी जिसमें सेफ्टी कैच (घोड़ा गिराने के बाद बन्द करने वाला पुर्जा) नहीं लगा हुआ था। चलते चलते अकस्मात् उस आदमी का पाँव फिसल पड़ा और वह गिर पड़ा। बन्दूक की नाल ठीक मेरी ओर मुँह बाये ताक रही थी। तब से मैंने प्रण कर लिया कि आदमखोर शेरों के शिकार में साथ किसी को न ले जाऊंगा क्योंकि साथ का मनुष्य यदि बिना हथियार के हो तो उसकी रक्षा करना कठिन है और यदि वह सशस्त्र हो तो स्वयं अपनी रक्षा करना और भी कठिन हो जाता है।

पहाड़ के शिखर पर पहुँच कर मैं बैठ कर धूम्रपान करने लगा और अगले दिन के लिये नई योजनायें सोचने लगा।

यह तो स्पष्ट था कि रात में शेरनी शव का शेष भाग खाकर अगले दिन चट्टानों में पड़ी रहेगी। वहाँ उसे खोजना अत्यन्त कठिन था। और यदि उस पर गोली चलाने का अवसर न मिलता तो व्यर्थ में छेड़ जाने के कारण वह कदाचित् इस गाँव के लिये उस प्रान्त को छोड़ देती और उसके मारे जाने की संभावना जाती रहती। अतएव यदि पाँच छः घण्टे मिल सकते तो उसे मारने की सफलता की आशा की जा सकती थी।

मैं पहाड़ के कगार पर बैठा हुआ था। नीचे घाटी में फैली हुई एक मैदान

था। चारों ओर कही भी आबादी नहीं थी। इस मैदान के बीच से कूल काटती हुई एक छोटी पहाडी नदी निकल गई थी। पूर्व में चट्टानों से टकराती हुई यह नदी उत्तर को घूम गई थी और मग्गन के और उसके बीच में एक सकुचित मुहाना-सा था।

सामने लगभग २ फीट ऊंचा पर्वत था जिस पर हरियाली बिछी हुई थी और बीच-बीच में चीड़ के वृक्ष खड़े थे। पूर्व की ओर तो पहाड इतना ऊंचा था कि घुरड के अतिरिक्त कोई भी अन्य जीव वहां नहीं पहुंच सकता था। यदि मुझ नदी में लेकर पहाड़ को बगार तक हंकवान के लिये पर्याप्त मनुष्य मिल जाते तो अवश्य ही शेरनी महान में से होकर निकलती। हां यह अवश्य था कि यह हांका बडा कठिन था क्योंकि पहाड का यह भाग घन जंगल से आच्छादित था। जिस जगह में शेरनी को छोड आया था वह भाग केवल सवा तीन मील लम्बा व आधा मील चौड़ा था। फिर भी यदि मुझे अच्छे हंकवय मिल जाते तो अवश्य ही शेरनी पर गोली चलाने का अवसर मिल सकता था।

गांव में तहसीलदार मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने उसे समस्त स्थिति भली भांति समझा दी और अनुरोध किया वे बिना विलम्ब के अधिक से अधिक आदमियों को जमा कर लेवें। जिस वृक्ष के नीचे लड़की मारी गई थी वहां दूसरे दिन प्रातःकाल १ बजे मिलने के लिये मैंने उनसे कह दिया। भरसक प्रयत्न करने का वचन देकर वे चंपावत लौट गये।

दूसरे दिन पौ फटने ही मैं जाग गया और कुछ खा-पीकर मैंने अपने आदमियों से सामान बांधने के लिये कह दिया और यह आदेश भी दे दिया कि चंपावत में वे मेरी प्रतीक्षा करें। इसके बाद मैं उस प्रदेश का निरीक्षण करने चल दिया जिसका हंकवान का मेरा विचार था। बहुत कुछ सोचने पर भी मुझे अपनी योजना में कोई त्रुटि नहीं दिखाई दी और निश्चित समय से एक घंटे पूर्व ही मैं उस जगह जा पहुंचा जहां तहसीलदार से मिलने का मैंने वायदा किया था। यह तो मैं जानता ही था कि तहसीलदार को आदमियों को एकत्रित करने में काफी कठिनता होगी क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के हृदय में आदमखोर के भय की गहरी छाप लग चुकी थी और केवल गुमान ही से लोग घरों के बाहर निकलने को तैयार न थे।

ठीक दस बजे एक मनुष्य को लेकर तहसीलदार आ पहुंचा। फिर दो-दो

चार-चार की संख्या में मनुष्य एकत्रित होने लगे और दोपहर तक २३८ मनुष्य इकट्ठे हो गये।

गाँवों में लोग प्रायः चोरी कर बिना 'लाइसेंस' की बन्दूक भी रख लेते हैं। इस अवसर पर तहसीलदार ने घोषणा कर दी कि इन गैरकानूनी शस्त्रों को देखकर वे मुँह फिरा लेंगे। इतना ही नहीं आवश्यकता पड़ने पर तो लोग उनसे गोली-बारूद भी ले सकते हैं। उस दिन जो भिन्न-भिन्न प्रकार के शस्त्र लोगों के हाथों में दिखाई दिये उनसे एक अच्छा खासा अजायबघर भर सकता था।

सब लोग जब तहसीलदार से गोली-बारूद लेकर तैयार हो गये तब मैं उन्हें पहाड़ के ऊपर ले गया जहाँ मृत बालिका का लहँगा पड़ा हुआ था। फिर मैंने इशारे से उन्हें एक बिजली से गिरा हुआ वृक्ष बता दिया और कहा कि एक पंक्ति में सब वहाँ पर खड़े रहें और नीचे से मेरे रूमाल हिलाने पर जिनके पास बन्दूकें हों वे उन्हें दाग दें और अन्य लोग नीचे की ओर बड़े-बड़े ढोंके लुढ़का कर कोलाहल जारी रखें। इस बात की कड़ी चेतावनी मैंने उन लोगों को दे दी थी कि मेरे लौटने से पहले पहाड़ से नीचे कोई उतरने की चेष्टा न करे। जब मुझे विश्वास हो गया कि सब लोगों ने मेरे आदेश को भली भाँति सुन लिया है तब मैं तहसीलदार के साथ नीचे उतर पड़ा।

तहसीलदार हाँकेवालों के साथ रहने को तैयार न थे क्योंकि उन लोगों के पास पुरानी बन्दूकें थीं जिनके फटने का डर था। एक लंबा चक्कर देकर मैं घाटी के ऊपरी भाग को पार कर गया। फिर सामने के पहाड़ पर चढ़कर बिजली से गिरे हुए चीड़ के वृक्ष के समीप पहुँच गया। यहाँ से पहाड़ एकदम ढालू हो गया था। तहसीलदार पतले तल्ले के जूते पहिने हुए थे और छालों के कारण आगे चलना उनके लिये दूभर सा हो गया था। अतएव वे अपने जूते उतारने लगे। उधर लोगों ने सोचा कि मैं कदाचित् रूमाल हिलाना भूल गया हूँ। उन्होंने खूब शोर मचाते हुए बन्दूकें दाग दीं। अभी मैं मुहाने से कुछ सौ गज दूर था। मैं बचपन से ही पहाड़ों में पला हूँ और चलने का काफी आदी हूँ, अन्यथा उस दुर्गम पथ पर दौड़ने से हाथ पैरों का टूट जाना साधारण सी बात थी।

पहाड़ से उतरने से पहले मुझे पता था कि मुहाने के पास एक घास का टुकड़ा था। जल्दी में अन्य स्थान न मिलने से मैं वहीं बैठ गया। मेरी पीठ उस पहाड़ की ओर थी जिधर से मैं अभी उतरा था। घास लगभग दो फीट ऊँची थी

ओर मेरे आधे शरीर को उसने ढक लिया था। यदि मैं बिल्कुल निश्चल रहता तो संभव था कि शेरनी मुझे न देखती। जिस पहाड़ का हाँका हो रहा था वह मेरे सामने था। मचान के सामने शेरनी के निकलने की मुझे पूर्ण आशा थी।

पहाड़ के ऊपर शोरगुल आरम्भ हो गया था। सारा वन बन्दूकों की आवाज लोगों की चीखों व ढोलों के तुमुल नाद से गूंज उठा। अकस्मात मैंने देखा कि दो सौ गज पर दो नालों के बीच शेरनी उछलती हुई ढाल से नीचे उतर रही थी। वह कुछ ही दूर गई होगी कि तहसीलदार ने अपनी बन्दूक की दोनों नाल उसपर खाली कर दी। आवाज सुनकर शेरनी लपक कर वापस लौट गई। उसके घास में छिपते समय मैंने तत्परता से एक गोली उस पर निराश होते हुए भी चला दी। पहाड़ के ऊपर आदमियों ने बन्दूक की आवाजें सुनकर निष्कर्ष निकाला कि अवश्य ही शेरनी मर गई है। अस्तु। अपनी बन्दूक चलाते हुए उन्होंने एक अन्तिम हल्ला बोल दिया।

मुझे पूर्ण आशा थी कि अब शेरनी पहाड़ पर पहुँच जायगी। मैं साँस रोके हुए प्रतीक्षा कर रहा था। लोगों के शोर करते ही शेरनी नदी को एक छलांग में पार कर मचान की ओर आती दिखाई पड़ी। मेरे हाथ में आधुनिक ५ बोर रायफल था। किंतु इस की मक्खी मचानी शिकार के लिये चढ़ी हुई थी और इतनी ऊँचाई पर अवश्य ही गोली चूक कर लगती। जब मेरी गोली चलाने पर वह ठिठक गई मैंने सोचा कि गोली पीठ के ऊपर से निकल गई और लौटना मुश्किल समझकर वह ठिठक गई है किन्तु वास्तव में मेरी गोली उसे लग गई थी यद्यपि कुछ पीछे हटकर। फिर मेरी ओर वह मुड़ी। फासला [illegible] गज का था और वह अपनी आँख मेरी ओर किये हुए थी। मैंने दूसरी गोली भी चला दी किन्तु जरा सा चिहुँक कर वह रुक गई।

मैं कंधे से बन्दूक लगाये बैठा सोच रहा था कि यदि शेरनी आक्रमण कर दे तो क्या हो? मैं मात्र तीन कारतूस साथ में लाया था यह सोच कर कि तीसरी गोली चलाने का अवसर आयेगा ही नहीं।

सौभाग्य से शेरनी ने आक्रमण करने का विचार स्थगित कर दिया और नदी को पार करती हुई वह कुछ पत्थर के ढोकों पर चढ़कर एक झाड़ी के पीछे जा पहुँची। खड़े होकर वह झाड़ी की टहनियों को नोच रही थी।

सावधानी की परवाह न कर मैंने तहसीलदार को आवाज दी कि मुझे अपनी बन्दूक दे जाय। किंतु उत्तर में चिल्लाकर उन्होंने एक लम्बा वाक्य कहा जिसमें से केवल 'पाव' मैं सुन पाया। दूसरा उपाय न देखकर मैंने अपनी राइफल जमीन पर रख दी और दौड़कर तहसीलदार के हाथों से बन्दूक झपट ली।

जैसे ही मैं नदी के किनारे पर पहुँचा शेरनी झाड़ी से निकल कर मेरी ओर लपकी। जब वह मुझसे केवल २० २५ गज पर रह गई तो मैंने तहसीलदार की बन्दूक साधी किंतु देखा कि कारतूस भरने की जगह एक झिरी खुली हुई थी। जब तहसीलदार ने घोड़ा नाल साथ ही चला दी थी तब नाल फटा नहीं था और शायद पुनः चलाने पर भी न फटता किंतु बारूद की भभक से अंधेपन का भय था। अब यह खतरा उठाने के अतिरिक्त और कोई साधन न था। मक्खी के स्थान पर लोहे की एक गिट्टी सी लगी हुई थी इसी से लक्ष्य साधकर मैंने शेरनी के खुले मुँह पर गोली दाग दी।

परमात्मा जाने मेरा निशाना ही गलत बना था उस बन्दूक में २० गज तक गोली ठीक निशाने पर फेंकने की शक्ति ही न थी मेरी गोली शेरनी के मुँह पर न लगकर उसके दाहिने पंजे में जा लगी (बाद में मैंने गोली नाखूनों से निकाली)।

भाग्यवश शेरनी में अब शक्ति नहीं रह गई थी और पाँव में गोली लगने से उसने दम तोड़ दिया। चट्टान के ऊपर वह लुढ़क गई।

मैं इधर हँकवों को भूल सा ही गया था। ऊपर कोई चिल्ला रहा था वह पड़ी है चट्टान पर चलो उसे उतार कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालें। लोगों ने शेरनी को देख लिया था और जोर से चिल्ला रहे थे।

हँकवों के शेरनी के पास में [illegible] था। मैं शेरनी के पास पहुँच गया। यह मर चुकी थी यद्यपि मैंने उसे [illegible] कर अभी तक निश्चय किया नहीं था क्योंकि मेरे पास समय न था।

इतने [illegible] लोग दौड़ते [illegible] गये। शेरनी को देख कर गुस्से में कोई बन्दूक कोई कुल्हाड़ी कोई [illegible] लिए हुए थे। शायद ही ऐसा कोई मनुष्य हो जिसका शेरनी ने नुकसान न किया हो। भीड़ में एक मनुष्य जो शायद उस दल का सरदार था अपनी तलवार हवा में हिला-हिला कर चिल्ला रहा था

यह वही चुड़ैल है जिसने मेरी औरत और दो लड़कों को मारा था।

फिर अकस्मात् कोलाहल शान्त हो गया और उस मनुष्य ने अपनी तलवार नीची कर मुझसे कहा, साहब, जिस हत्यारिन ने हमारा सर्वनाश किया है उसे मरी देख हम पागल हो गये थे। हमारी इस असभ्यता के लिये आप व तहसीलदार साहब हमें क्षमा करें।

बन्दूक में से बचा हुआ कारतूस निकाल कर मैं नीचे उतर गया। मैंने लोगों को चट्टान पर पहुंचने का रास्ता बता दिया। उन्होंने शेरनी को नीचे उतार लिया। उसे देखने चारों ओर लोगों की भीड़ लग गई।

जब शेरनी चट्टान से मुझपर कूदने को प्रस्तुत थी मैंने देखा कि उसके मुंह में कुछ कष्ट था। अब भली प्रकार देखने पर ज्ञात हुआ कि उसके कुछ ऊपर और नीचे के दांत टूटे हुए थे। किसी शिकारी की बन्दूक के छर्रों के कारण उसके ये दांत टूटे हुए थे। चूंकि अपना स्वाभाविक शिकार करने में उसे कष्ट होता था फलस्वरूप वह नरभक्षिणी बन गई थी।

गाँववालों ने मुझसे प्रार्थना की कि शेरनी की खाल जंगल में न उतारी जाय। वे शेरनी की लाश को समस्त ग्राम में प्रदर्शन करना चाहते थे। साथ ही अगर गाँव के औरतें-बच्चे इसे देख न लेते तो उन्हें कभी यकीन ही न होगा कि यह हत्यारिन मर चुकी है। मैंने अपनी अनुमति दे दी।

दो बड़ी टहनियों में धोती व साफा की सहायता से शेरनी को बांध कर कुछ आदमियों ने आदमखोर की टिकठी को कन्धे पर सहर्ष उठा लिया।

लोग पहाड़ पर चढ़ कर गांव को चले। शेरनी के भारी बोझ को साथ चढ़ना अत्यन्त कठिन था किन्तु हाथ से हाथ बांध सावधानी से वे चट्टानों पर चढ़ते जा रहे थे। शेरनी को लिये लोगों का यह जुलूस ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे चींटियों की सेना गुबरैले को लिये दीवार पर चढ़ रही हो। पीछे-पीछे तहसीलदार साहब स्वयं लदे चले आ रहे थे। यदि भूल से किसी का पांव रपट पड़ता या आदमियों के बंधे हुए हाथ छूट जाते तो न जाने कितने अभागों का इहलोक समाप्त हो जाता पर ऐसा न हुआ। लोगों का झुंड विजय के गीत गाता हुआ बढ़ चला जा रहा था। तहसीलदार चुपचाप लौट गये और मैं भी उनके साथ कर लिया।

पहाड़ के किनारे पर खड़े-खड़े मैंने नीचे की ओर एक अन्तिम दृष्टि डाली।

नीचे मैदान था जिसमें आज का भयानक नाटक कुछ क्षण पूर्व समाप्त हुआ था। और पास ही वह झाड़ी थी जिसके काटों में अब भी मृत बालिका के कुछ केश लटके हुए हवा में झूम रहे थे।

सुदूर मुहान के पास मृत बालिका की चिता से धूम्रराशि ऊपर उठ रही थी। चपावत की नरभक्षिणी के अन्तिम शिकार की चिता धू धू कर जल रही थी ठीक उसी स्थान पर जहां आज स्वयं आदमखोर ने दम तोड़ा था।

भोजनोपरान्त मैं बाहर आंगन में आ खड़ा हुआ। नीचे गांव में गांववाले उत्सव मना रहे थे। लोग नाच नाच कर अपने पहाड़ी लोकगीतों को गा रहे थे और बीच-बीच में चीड़ की मशालें चमक उठती थीं—छोटे-छोटे रुपहले जुगनुओं की भांति।

एक घंटे बाद लोग बाघनी को मेरे पास ले आये। इतनी भीड़ में खाल उतारना सम्भव न था। अतः मैंने लोगों से केवल पंजे व मूंछें काट कर शेष काम दूसरे दिन के लिये छोड़ दिया। दूसरे दिन लाश पर एक पुलिसवाले का पहरा लगा दिया गया और बाघनी के पंजों व पूंछ के टुकड़े लोगों में वितरित कर दिये गये। इन वस्तुओं के तावीज बच्चों के गले में पहिनाये जाते हैं। इनके पहिनने से भूत प्रेतों से बच्चों की रक्षा होती है, ऐसा लोगों का विश्वास है। बाघनी के पेट में मृत बालिका की उंगलियां मिलीं। इनको मैंने बाद में नैनीताल के ताल में नन्दादेवी के मन्दिर के पास गाड़ दिया।

गांववालों ने अगले दिवस एक समारोह का आयोजन किया था जिसका सभापति वे मुझे बनाना चाहते थे। मुझे दो दिन में ७५ मील की यात्रा करनी थी। इसलिये क्षमा मांगते हुए मैंने तहसीलदार से अनुरोध किया कि मेरा स्थान वे ग्रहण करें।

तड़के ही घोड़े पर बाघनी की खाल बांध कर हम रवाना हो गये। दबीधुरा में मुझे रात में पड़ाव डालना था। पाली के पास झाड़ियों के आगे से गुजरते समय उस गूंगी स्त्री को मैंने आ गई जिसकी बहिन को बाघनी उठा ले गई थी। सोचा बात कर उसे भी खबर सुना दूं। घोड़े को मैंने नीचे बांध दिया और बाघनी की खाल को झाड़ी के दरवाजे पर बिछा दिया। बच्चे मेरा दम बारबार को दम घुट थे। भाग-दौड़ कर उन्होंने अपनी मां को रसोईघर में खबर दी।

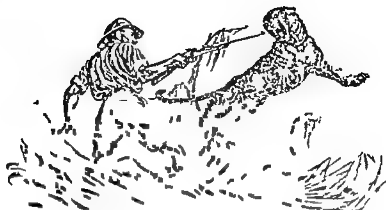
कुछ लोगों का मत है कि किसी प्रकार के धक्का लगने से मनुष्य कभी अपनी

कुछ शक्ति सी रहती है और पुनः एक खास स्थान पर इन्द्रियों की वह शक्ति वापस लौट आती है। मैं इस विषय में अपनी सम्मति नहीं देना चाहता हूँ। हाँ यह अवश्य मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा कि गत एक वर्ष से जो स्त्री बिल्कुल गूँगी थी वह इस समय चिल्ला चिल्ला कर अपने पति को पुकार रही थी कि साहब की खोई हुई चीज़ को वापस देना है। गूँगी के मुँह से निकले हुए इन स्पष्ट शब्दों को सुनकर बच्चों के विस्मय की सीमा न रही।

कुछ देर गाँव में विश्राम करके मैंने चाय पी और पुनः रवाना हो गया। गाँववाले चीख-चीख कर मुझे आशीर्वाद दे रहे थे।

दूसरे दिन प्रातःकाल मेरा मुठभेड़ एक तेंदुए से हो पड़ा। इसके कारण कुछ विलम्ब हो गया और मेरे घोड़े पर थोड़ा सा बोझ और बढ़ गया। घोड़ा तगड़ा था और चलने-फिरने किसी भाँति हमने [illegible] घंटे में ८५ मील का रास्ता काट लिया और नैनीताल पहुँच गये।

कुछ मास बाद नैनीताल में सर जान हीवेट के सम्मुख में एक दरबार हुआ और चम्पावत के तहसीलदार को एक बंदूक तथा [illegible] समय मेरे साथ चलनेवाले मनुष्य को एक सुन्दर शिकारी छुरा भेंट स्वरूप प्रदान किया गया। इन तोहफों पर उनके नाम खुदे हुए थे। वे उन कुटुम्बों की पैतृक सम्पत्ति रहेंगे।



रौबिन

मैंने उसके माता पिता को कभी देखा न था। जिस 'डाग्स के सरदार' (मेगी) से मैंने उसे खरीदा था उसका कहना था कि वह 'स्पेनियल' जाति का प्राणी था। उसका नाम पिंचा था और उसका पिता एक कुशल शिकारी कुत्ता था। इसके अतिरिक्त मैं उसकी वंशावली के विषय में और अधिक कुछ नहीं कह सकता।

मुझे छोटे पिल्ले की आवश्यकता न थी किंतु जब मैंने उसे खरीदा उस समय मेरे साथ मेरा एक मित्र भी था। एक गन्दे टोकरे में पिंचा अपने छः भाई बहिनों के साथ पड़ा हुआ था। इसी टोकरे में से निकाल कर ये पिल्ले मित्र को दिखलाये गये।

पिंचा अपने परिवार का सबसे छोटा एवं दुबला-पतला प्राणी था अतएव स्पष्ट था कि वह जीवन संग्राम की अन्तिम यात्रा पर पदार्पण कर चुका था।

अपने अभागे भाई-बहिनों को छोड़ कर उसने एक बार मेरी परिक्रमा की और फिर मेरे दाहिने पांव के पास दुबक कर बैठ गया। उस दिन सर्दी बहुत तेज थी। मैंने उसे उठा कर अपने कोट के अन्दर कर लिया। कृतज्ञता दर्शाते हुए उसने मेरा मुँह चाट लिया।

तब उसकी आयु केवल तीन माह की थी और पन्द्रह रुपये में मैंने उसे खरीद लिया था। आज उसकी आयु तेरह वर्ष की है और समस्त भारत का सोना भी उसे नहीं खरीद सकता।

जब मैं उसे ले आया तो प्रथम बार उसका परिचय अच्छे भोजन, गर्म पानी व साबुन से हुआ। उसका पुराना नाम पिंचा छोड़ कर नया नाम रौबिन रख दिया गया।

जब मेरी आयु छः वर्ष की और मेरे भाई की चार वर्ष की थी तो कौली जाति के एक कुत्ते ने एक क्रुद्ध रीछनी के आक्रमण से हमारे प्राण बचाये थे। उस कुत्ते का भी नाम रौबिन था। उसी की स्मृतिस्वरूप पिंचा का नाम हमने रौबिन रख लिया।

जैसे धरती को जिस भांति वर्षा की आवश्यकता होती है उसी भांति रौबिन को भोजन की आवश्यकता थी।

जब उसे हमारे साथ कुछ सप्ताह हो गये तो यह सोचते हुए कि बच्चे या पिल्ले का शिक्षारम्भ शीघ्र ही होना चाहिये मैं उसे अपने साथ एक दिन बाहर ले गया। मैं चाहता था कि दो-चार बार सामने बन्दूक चला कर उसे बन्दूक की आवाज का आदी बना दूं।

हमारी जागीर के नीचे की ओर काँटों की कुछ घनी झाड़ियाँ थीं। इन्हीं झाड़ियों का मैं चक्कर लगा रहा था कि एक मोरनी उड़ कर ऊपर उड़ी। मेरे पीछे पीछे रौबिन मेरा अनुसरण कर रहा था जिसको मैं भूल ही गया था। मैंने बन्दूक चला कर मोरनी को गिरा लिया। फड़फड़ाती हुई वह एक कटीली झाड़ी में गिर पड़ी और उसी समय रौबिन भी उसपर झपट पड़ा। झाड़ियाँ घनी तथा कंटीली थीं अतः वहां मेरा पहुंचना असम्भव था। झाड़ियों के पीछे कुछ खुली हुई जगह थी और उसके बाद घने वृक्षों व घास का जंगल था। मैं जानता था कि घायल मोरनी उस जंगल में पहुंचने का प्रयत्न करेगी इसलिये दौड़ कर मैं वहां पहुंच गया।

सूर्य हुए मकान में धूप फूट रही थी। यदि मेरे पास चल चित्र कैमरा होता तो एक अद्भुत चित्र खींचने का सुअवसर मुझे मिल सकता था।

मोरनी बूढ़ी थी, उसका एक डैना टूट चुका था और भय के कारण उसकी गर्दन के पर फूल गये थे। वह सीधी जंगल की ओर अग्रसर हो रही थी, उधर

रौबिन भी रणभूमि में डटे हुए थे और मोरनी की पूँछ के सहारे घिसटते हुए चले जा रहे थे।

बेवकूफ़ी से मैंने दौड़ कर मोरनी की गर्दन पकड़ कर उसे ज़मीन से ऊपर उठा लिया। दूसरे ही क्षण उसने ऐसी दुलत्ती झाड़ी कि रौबिन कुछ दूर पर कलाबाज़ी खाते नज़र आये। किन्तु पलक मारते ही रौबिन फिर खड़ा हो गया और जब मैंने मृत मोरनी को भूमि पर रख दिया तो वह नाच-नाच कर उसकी परिक्रमा करने और बीच-बीच में उसकी गर्दन व पूँछ को नोचने लगा। इस प्रकार उस प्रातःकाल का पाठ समाप्त हुआ।

जब हम घर वापस लौट रहे थे तब यह बताना कठिन था कि हम दोनों में से अधिक गर्व किसको था—रौबिन को अपना प्रथम शिकार मारने पर, या मुझे इस 'गुदड़ी के लाल' को पाने पर?

शिकार के मौसम का अन्त समीप आ रहा था और फिर बाद में कुछ दिनों तक रौबिन को बटेर, फ़ाख्ता या इक्के-दुक्के तीतर को उठा लाने के अतिरिक्त कोई अन्य काम नहीं दिया गया।

गर्मियाँ हमने पहाड़ पर काटीं। नवम्बर में हम गल्हट्टा के पहाड़ों पर उतर आये। पन्द्रह मील का लम्बा रास्ता समाप्त कर हम एक मोड़ पर पहुँचे ही थे कि लंगूरों का एक दल पहाड़ पर से कूद कर सड़क पार कर गया। ये लंगूर रौबिन के बिल्कुल समीप से निकले।

मेरी सीटी की परवाह न करते हुए रौबिन झपट कर लंगूरों के पीछे खड्ड में उतर गया। लंगूर तत्परता से एक वृक्ष पर जा चढ़े। ऊपर मैदान खुला हुआ था केवल कहीं कहीं पर पेड़ थे। मैदान कुछ चौड़ा होता हुआ नीचे घाटी में मिल गया था। इस चौड़ी जगह की दाहिनी ओर कुछ झाड़ियाँ थीं। बरसाती पानी के बहने से इन झाड़ियों के बीच में एक नाला सा बन गया था। रौबिन इन झाड़ियों में घुसकर फुर्ती से बाहर निकल आया और दूसरे ही क्षण कानों को पीछे कर और दुम लम्बी कर उसने दौड़ लगा दी। उसके पीछे-पीछे एक भीमकाय तेंदुआ सरपट भागा आ रहा था। प्रतिक्षण रौबिन व तेंदुए के बीच का फ़ासला कम होता जा रहा था।

मैं गनरहित न था और हो-हल्ला करने के अतिरिक्त मैं किसी भाँति भी रौबिन की सहायता नहीं कर सकता था। ऐसे का झाड़ियों ने भी [illegible]

में भाग लिया और जब सैकड़ों लंगूरों ने भी चीखना आरम्भ कर दिया तो कोलाहल की सीमा न रही। बीस पचीस गज तक रौबिन व तेंदुए की दौड़ चालू रही किन्तु जैसे ही रौबिन तेंदुए को पकड़ने में आने को था कि तेंदुआ न जाने क्या घूम कर घाटी में गायब हो गया। उधर रौबिन पहाड़ का चक्कर लेता हुआ मुझसे आ मिला। उस दिन रौबिन ने दो पाठ सीखे जिन्हें वह आजन्म न भूला। एक तो यह कि लंगूरों का अनुसरण करना खतरनाक होता है और दूसरा यह कि लंगूरों की चीख का अर्थ होता है आसपास में कहीं तेंदुए की उपस्थिति।

बसंत में रौबिन की शिक्षा में बाधा पड़ गई थी किन्तु अब पुनः वह आरम्भ कर दी गई। अब यह स्पष्ट हो गया कि अपने शैशव में प्रायः भूखे रहने से व इस प्रकार दुर्बल होने के कारण उसके दिल पर इसका प्रभाव पड़ गया था क्योंकि अब तनिक से भी श्रम के उपरान्त वह अचेत हो जाता था।

शिकारी कुत्ते को सबसे अधिक निराशा तब होती है जब उसका स्वामी उसे घर पर अकेला छोड़ कर शिकार को चल देता है। चूंकि अब चिड़ियों के शिकार को रौबिन के लिए एक प्रकार से निषेध सा हो गया था मैंने उसे अपने साथ बड़े शिकार में ले जाना आरम्भ कर दिया। इस नये खेल को उसने बड़े चाव से अंगीकार कर लिया और तब से आज तक जब भी मैं राइफल लेकर निकला हूँ वह मेरा सहचर रहा है।

मेरा तरीका यह है कि तड़के ही शिकार को निकल जाना और घुरड़ या तेंदुए के मार्ग को खोज कर उसका अनुसरण करना। जब जानवर के खोज दिखने लगें मैं उनका पीछा करूँ और यदि जानवर झाड़ियों में हो तो पीछा करने का काम रौबिन करे। इस भाँति अनेक अवसरों पर उसने मारे जानवरों का अनुसरण कर उन्हें पा लिया है।

पैदल चल कर शिकार मारना अधिक सहज है बजाय इसके कि जानवर पर हाथी की पीठ पर से या मचान के ऊपर से। एक तो पैदल शिकार में यह लाभ है कि घायल पशु का पीछा करने में व्यर्थ में गोली नहीं चलाई जाती और दूसरा यह कि जानवर के मर्मस्थानों पर जमीन से अच्छा लक्ष्य साधा जा सकता है क्योंकि शिकारी और शिकार एक ही धरातल पर रहते हैं। ऊँचाई से जानवर के शरीर के मर्मस्थानों का अनुमान कर साधना कठिन हो जाता है।

फिर गर्मियों के आने पर भी मैंने कई अवसरों पर घुरड़ या मेंढुवा का

केवल घायल ही कर पाया जिन्होंने मुझ पर आक्रमण किया और उनको समाप्त करने में मुझे दूसरी या तीसरी बार तक बन्दूक चलानी पड़ी। इतने वर्षों में हम साथ साथ शिकार खेलते रहे किंतु केवल एक बार रौबिन मुझे बड़ी कठिन परिस्थिति में घिरा छोड़ भाग गया था। उस दिन जब वह कुछ देर की अनुपस्थिति के पश्चात मेरे पास लौट आया हमने निश्चय किया कि इस घटना का जिक्र कभी न करेंगे। अब हमारी आयु ढल चुकी है और संभवतः अब हम उतने भावुक भी नहीं हैं विशेषतया रौबिन जिसने अपने श्वान जीवन की चरम सीमा का अतिक्रमण कर लिया है और इस समय मेरे पावों के पास लेटा हुआ है जहां से अब वह कभी नहीं हट पायेगा। अपनी भूरी आंखों से मुस्करा कर नन्ही-सी दुम हिलाते हुए उसने मुझे आपसे यह कहानी कहने की अनुमति दी है।

झाड़ी से बाहर निकलने के पहले हम उस तेंदुवे को नहीं देख पाये थे और तब उसने छिप कर अपने बायें कंधे के पीछे मुड़ कर देखा। वह एक भीमकाय तेंदुआ था। उसकी खाल बड़ी सुन्दर एवं चिकनी थी। गहरे पीले रंग की खाल पर पड़े हुए काले धब्बे ऐसे लगते थे जैसे किसी संगमरमर पर चित्रकारी की हो। मेरे पास अचूक लक्ष्यवाली राइफल थी। पन्द्रह गज के फासले पर मैंने मुस्ता कर उसकी दाहिनी आंख पर गोली चला दी। तेंदुवे के हृदय में और गोली में कितना अन्तर रहा इससे कोई मतलब नहीं। जब गोली तेंदुवे के पार निकल कर पचास गज पर धूल उड़ा रही थी तब वह हवा में कलाबाजी खाकर जिस झाड़ी से निकला था उसी में आ गिरा। ६०–५० गज तक हम झाड़ी के पीछे उसके चलने की खड़खड़ाहट सुनते रहे। फिर निस्तब्धता छा गई। इस निस्तब्धता के अर्थ दो ही हो सकते थे—या तो तेंदुवे ने दम तोड़ दिया था या वह सुरक्षित स्थान में पहुंच गया था।

उस दिन हम काफी थक चुके थे। सूर्यास्त होने को था और हम घर से चार मील दूर थे। जंगल के इस भाग में मनुष्यों का आमदरफ्त बिल्कुल न था और रात में उधर से किसी के गुजरने की लेशमात्र भी संभावना न थी। अब हमारे लिए केवल एक ही चारा था। वह यह कि तेंदुवे को उसी भांति छोड़ दिया जाए। हम के पास बंदूक न था इसलिए न तो हम उसे यहां अकेला छोड़

सकते थे और न तेंदुए का भोजन उसे साथ ही ले जा सकते थे। अतएव उत्तर की ओर मुड़ कर हम घर को चल पड़े। इस जगह कोई चिह्न छोड़ जाने की मुझे आवश्यकता न थी क्योंकि लगभग गत २५ वर्षों से मैं कई बार रात दिन इस वन में घूम चुका था और आंखें बन्द करके भी मैं अपना रास्ता ढूंढ सकता था।

पौ फटने को ही थी कि मैं और रोबिन गत रात्रि के घटनास्थल पर पहुंच गये। एक कुशल शिकारी की भांति रोबिन ने जमीन का निरीक्षण किया और गर्दन उठा कर वायु सूंघना शुरू कर दिया। फिर वह बढ़ कर उस झाड़ी के समक्ष जा पहुंचा जहां तेंदुआ गिरा था। झाड़ी के पास ही रक्त के छींटे पड़े हुए थे। मुझे रक्त को देख कर यह निश्चय करने की आवश्यकता न थी कि गोली तेंदुए के किस अंग पर लगी है। समीप से बन्दूक चलाने के कारण मैंने गोली को लगते देख लिया था और तेंदुए के दूसरी ओर धूल उड़ने से साफ मालूम होता था कि गोली शरीर को पार कर गई है।

कुछ देर बाद रक्त की धार का अनुसरण करना अनिवार्य था। किंतु घाव मिलने के बाद कुछ सुस्ता लेना भी आवश्यक था। इससे हमें लाभ ही हुआ।

सूर्य निकलने को ही था और समस्त वन में पशुओं का आवागमन शुरू हो गया था। आगे बढ़ने से पहले यह जरूरी था कि पशुओं की गतिविधि को भी देख लिया जावे।

पास ही एक वृक्ष के नीचे जमीन सूखी हुई थी। पेड़ की छाया के कारण यहां पर ओस नहीं गिरी थी। इसी जगह मैं बैठ गया और रोबिन भी मेरे पैरों के पास आ दुबका। मैंने अभी अपनी सिगरेट समाप्त ही की थी कि सामने बाईं ओर एक चितरिया बक उठी। फिर दूसरी फिर सामने और फिर कई चीतलों की चेतावनी चीत्कार से सारा जंगल गूंज उठा। रोबिन चौंक कर उठ बैठा और चुपके से उधर देखने लगा जिधर से चीतलों की आवाजें आ रही थीं। लंगूरों वाली घटना के बाद उस ओर भी मैं बहुत अनुभवी हो चुके थे और वह अन्य वन्य प्राणियों के समान भली भांति जानता था कि चीतल चिल्ला कर उनको तेंदुए की उपस्थिति की सूचना दे रहे थे। जिस भांति चीतल चिल्ला रहे थे उससे ज्ञात होता था कि [illegible] था रहा है। [illegible] से वे हमें बता रहे थे कि तेंदुआ जीवित है या नहीं। लगभग ५ मिनट तक वे चीख रहे

थे और तब अकस्मात एक बार कूक कर वे साधारणतया उसी तरह चाहने लगे जिस भांति चीतल चाहता है। तेंदुआ अभी जीवित था और एक झाड़ी से चल कर दूसरी में पहुंच कर निश्चल हो गया था। अब केवल यह जानना शेष था कि तेंदुआ किस स्थिति में बैठा है और यह केवल चीतलों को ढूंढ कर ही जाना जा सकता था।

वायु के विपरीत ५० गज चल कर हम झाड़ी में पहुंच गये और चीतलों को ढूंढना आरम्भ कर दिया। यह कठिन काम न था क्योंकि लम्बे अभ्यास से मुझे जंगल में चुपचाप चलने का अच्छा अभ्यास हो गया था और रौबिन तो किसी भी जंगल में बिल्ली की भांति ढूंढने में निपुण ही था। चीतल हमें तब तक न दिखाई पड़े जब तक कि हम उनके समीप न आ गये। खुले मैदान में खड़े-खड़े वह टकटकी लगा कर उत्तर की ओर देख रहे थे (जिधर कल शाम तेंदुवे की खड़खड़ाहट बन्द हो गई थी)।

चीतलों से हमें बड़ी सहायता मिली यद्यपि इसमें एक घंटे का समय नष्ट हो चुका था। यदि चीतल अब हमें देख लेते तो बना बनाया खेल चौपट था क्योंकि वह पुनः कूक कर समस्त वन को हमारी उपस्थिति बता देते। मैं यह सोच ही रहा था कि वापस चल कर चीतलों के पीछे से तेंदुवे को देखा जाय या तेंदुवे की बोली बोल कर उन्हें सामने से हटा लिया जाय कि एक चितरिया की दृष्टि मुझ पर पड़ गई। दूसरे ही क्षण 'सावधान! मनुष्य!!' की कूक लगा कर उनमें भगदड़ मच गई। मुझ में और खुले मैदान में केवल पांच गज का अन्तर था। मैं फुरती से आगे कूदा किन्तु तेंदुवे ने मुझ से भी अधिक फुरती दिखाई। मुझे केवल झाड़ी में छिपती हुई दुम की एक झलक दिखाई पड़ी।

चीतलों ने सारे परिश्रम पर पानी फेर दिया था और अब फिर से खोज आरम्भ होनी थी। किन्तु इस बार यह काम रौबिन के सिपुर्द था।

मैं खुले मैदान में खड़ा हो गया। मैं तेंदुवे को समय देना चाहता था कि पुनः किसी स्थान पर रुक जाय और हवा में अपनी गन्ध छोड़ दे ताकि रौबिन को उसका अनुसरण करने में सुगमता हो। वायु उत्तर की दिशा से बह रहा था। मैं रौबिन को वायु से हटा कर पश्चिम की ओर ले गया। हम लगभग ६० ७० गज गये होंगे कि रौबिन ठिठक कर वायु की ओर मुड़ गया।

जंगल में चलते समय रौबिन एकदम मूक हो जाता है। उसके समस्त स्नायु

उसके वश में रहते हैं। तेंदुवे को गोली लग जाने पर भी उसे देखने पर अपने शरीर के एक विशेष अंग को वह हिलने से नहीं रोक सकता और वह है उसकी पूछ। इस समय भी उसकी दुम हिल रही थी।

गत वर्ष जंगल के इस भाग में एक जबरदस्त अंधड़ आया था जिसके कारण कई वृक्ष गिर गये थे। इस समय एक गिरे हुए वृक्ष की ओर रौबिन देख रहा था। वृक्ष की शाखायें हमारी ओर थीं और उसके आसपास कुछ झाड़ियां थीं। कोई और अवसर होता तो मैं और रौबिन एकदम आगे बढ़ जाते। किंतु इस अवसर पर विशेष सावधानी से काम लेना उचित था। इसलिये नहीं कि हम एक ऐसे जानवर से आंख-मिचौनी खेल रहे थे जो घायल होने पर यह जानता ही नहीं कि भय क्या वस्तु है बल्कि इसलिये कि हमारा पाला एक ऐसे तेंदुवे से पड़ा था जो कि गत पन्द्रह घंटों से बदला लेने की योजना बना रहा था और जिसकी लड़ने की समस्त प्रवृत्तियां इस समय जाग्रत थीं।

घर से चलते समय मैंने हल्की नालवाली २७५ राइफल उठा ली थी। लंबे शिकार में लादने के लिये यह एक अच्छी बंदूक थी किंतु घायल तेंदुवे का मुकाबला करने के लिये यह पर्याप्त न थी। इसलिये सीधे आगे न बढ़ कर मैं गिरे हुए वृक्ष के समानान्तर आगे बढ़ा—आगे-आगे रौबिन था और पीछे-पीछे मैं। कुछ ही दूर बढ़ने के पश्चात् रौबिन ठहर गया। मैंने भी उधर मुड़ कर देखा कि रौबिन का ध्यान सामने तेंदुवे की लहराती हुई दुम की ओर आकर्षित था। जब तेंदुवा मनुष्य पर आक्रमण करता है तो पहले इसी भांति दुम को जमीन पर पटकने लगता है। यह उसके हमले की चेतावनी है। मैंने फुरती से घूम कर राइफल कंधे से लगाई ही थी कि वह हम पर कूद पड़ा। जानवर को इस पलटने के लिये मैंने जल्दी में बंदूक चला दी। गोली पेट के नीचे से निकल कर पिछली जांघ में जा लगी। गोली से अधिक प्रभाव बन्दूक की आवाज का हुआ। मेरे दाहिने कंधे के ऊपर से उछल कर वह कुछ झाड़ियों में अदृश्य हो गया। मुझे दूसरा वार करने का अवसर न मिल पाया।

रौबिन मेरे पांवों के पास से हटा न था। इसने साथ साथ जमीन का निरीक्षण किया। थोड़ा रक्त गिरा हुआ था किंतु यह कहना कठिन था कि रक्त ताजे घाव से गिरा था या आक्रमण के कारण तेंदुवे का पुराना घाव खुल गया। रौबिन को इन सब बातों से कोई सम्बन्ध न था। उसने बड़ी सतर्कता से रक्त को

धार का अनुसरण करना आरम्भ कर दिया। आगे घुटनों तक ऊँची घास थी। हम कुछ दूर गये कि मुझे सामने तेंदुवा उठता हुआ दिखाई पड़ा। राइफल उठाने तक वह दृष्टि से ओझल होकर भौंरमार (Lantana) की एक झाड़ी में जा घुसा। झाड़ी काफी बड़ी थी इसलिये उसमें तेंदुवा मजे से छिप गया। अब उसे हम पर आक्रमण करने में भी आसानी होती।

रौबिन का व मेरा आज का काम बड़ा सन्तापजनक रहा था। अब आगे पीछा करना मूर्खता था। अतः हम साथ घर को चल पड़े।

दूसरे दिन प्रातःकाल हम पुनः उस जगह पहुँचे। रौबिन बड़ा उतावला सा लगता था। आज मैं अपनी बड़ी राइफल ४५०।४ ० उठा लाया था इसलिये मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। घायल जानवरों की खोज में बड़ी मार की राइफलों पर बहुत भरोसा रहता है।

जब हम भौंरमार की झाड़ी से लगभग २–३ सौ गज दूर रह गये मैंने इशारे से रौबिन को सावधान कर दिया। यह भरोसा नहीं करना चाहिये कि घायल जानवर जहाँ छोड़ दिया जावे वहाँ पर दूसरे दिन मिल जायगा। उदाहरणार्थ निम्नलिखित घटना का विवरण पढ़िये

मेरे एक मित्र ने एक बार एक शेर को घायल कर दिया। कई मील तक वह एक घाटी के किनारे रक्त की धार का अनुसरण करते रहे। दूसरे दिन सवेरे वह कुछ आदमियों को लेकर शेर की खोज में चल पड़े। आगे-आगे साहब की भरी बन्दूक लिये हुए एक आदमी चल रहा था। सब लोग रक्त की धार के ऊपर होकर ये चल रहे थे और जहाँ शेर छोड़ दिया गया था उस स्थान से लगभग एक मील इधर होंगे कि आगे वाले मनुष्य को घायल शेर ने आ पकड़ा। शेर ने तत्काल ही उसे मार डाला। शेष लोग प्राण बचाने के लिये वृक्षों पर जा चढ़े या सर पर पैर रख कर वापस दौड़ आये।

मुझे भौंरमार की झाड़ी की स्थिति याद थी। रौबिन को बाँये बचाकर मैं एक ओर ले गया। वायु के विपरीत चल कर जानवर की खोज में रौबिन बड़ा दक्ष था। कुछ दूर जाकर रौबिन रुक गया और फिर वायु को सूंघ कर मेरी ओर ताकने लगा। यह साफ पता लग रहा था कि उसे वायु में तेंदुवे की गन्ध मिल गई थी। कल की भाँति आज भी वह एक दूसरे गिरे हुए पेड़ की ओर मेरा ध्यान आकर्षित कर रहा था। गिरे हुए वृक्ष के इस ओर तो खुली हुई भूमि थी किन्तु उस

ओर कमर तक ऊंची 'सर्तौना' की झाड़ियाँ थी। रौबिन को इशारा देते हुए हम एक सूखे नाले पर पहुंच गये। मैंने अपना कोट उतार लिया और उसकी जेबों में ठूस-ठूस कर रोड़े भर लिये। पत्थरों से भरे इस झोले को लेकर मैं खुले मैदान में वापस आ गया। गिरे हुए पेड़ से १५ गज की दूरी पर खड़े होकर मैंने कोट पहन लिया और राइफल तैयार करके उस वृक्ष पर तथा आसपास की झाड़ियों पर ढले मारना शुरू कर दिया। मैं चाहता था कि इस भांति तेंदुवा हम पर आक्रमण करे। उसके खुले मैदान में निकलने से मुझे गोली चलाने का अवसर मिल सकता था। पत्थर समाप्त हो जाने पर मैंने ताली बजाकर खांसना और चिल्लाना आरम्भ किया किंतु न तो तेंदुवा बाहर ही निकला और न बोला ही। क्या वह मर चुका था?

यह सब कुछ कर लेने के बाद मैं सीधे आगे बढ़ कर वृक्ष के उस तरफ झांक सकता था, किंतु तिन्दे[1] मरा तब जानिये जब खाल निकाली जाय! वाली इस पुरानी कहावत को याद करते हुए मैंने इस गिरे हुए वृक्ष के चक्कर लगाना आरम्भ कर दिया। मेरी इच्छा थी कि इस भांति चक्करों को छोटा करता हुआ वृक्ष के एकदम समीप पहुंच जाऊं। पहला चक्कर देकर मैं दूसरा आरम्भ कर ही रहा था कि रौबिन रुक गया। गुर्राता हुआ तेंदुवा हम पर दौड़ा आ रहा था। सामने हिलती हुई घास के अलावा मुझे कुछ न दिखाई पड़ा। इतने ही में पास की झाड़ी से बाहर तेंदुवा निकला। मुझे इतना ही समय मिला कि दाहिनी ओर घूम कर बन्दूक साध लूं।

तेंदुवे का मुझ पर कूदना और मेरी बन्दूक का गरजना, यह दोनों काम साथ ही साथ हुए। फिर तेजी से पतरा बदल कर मैंने बगल से ही बन्दूक का दूसरा फायर पास से गुजरते हुए तेंदुवे पर कर दिया।

जब घायल शेर या तेंदुवा सीधा आक्रमण करता है और अपने शिकार को पकड़ नहीं पाता तो वह बिना मुड़े सीधा ही चला जाता है और जब तक पुनः छेड़ा न जाए, लौटता नहीं। रौबिन को बचाते हुए मैं बाईं ओर हट गया था। अब देखा तो उसे नदारद पाया। आज प्रथम बार उसने मुझ जैसी कठिन परिस्थिति में अकेला छोड़ दिया था। सम्भवतः वह जंगल में घर का रास्ता खोज रहा हो। जंगली रास्ता व लगभग में उसका बचना कठिन था। इसके अतिरिक्त बसार का

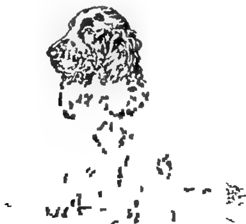
[1] तिन्दे—तेंदुवा कुमाऊंनी



हृदय अत्यन्त कमजोर हो गया था। अतएव किसी अज्ञात आशंका से विचलित हो मैं उसे ढूंढने मुड़ा। तभी मुझे एक ठूंठ के पीछे से निकलता हुआ उसका सिर दिखाई पड़ा। जब मैंने हाथ से इशारे से उसे पास बुलाया तो वह पुनः घास में छिप गया। कुछ देर बाद नतमस्तक हो आंखें झुकाये हुए वह आकर मेरे पैरों से लिपट गया। मैंने राइफल जमीन पर रख दी और उसे गोद में उठा लिया। अपने जीवन में दूसरी बार उसने आज फिर से मेरा मुंह चाट लिया और दबी हुई गुर्राहट से मुझे सूचित करने लगा कि मुझे सकुशल देख कर वह कितना प्रसन्न था और मुझे अकेला छोड़ देने पर वह कितना लज्जित था।

जब मैंने रौबिन को विश्वास दिला दिया कि हमारा साथ छूट जाने में उसका कोई दोष न था तो उसने भागना बन्द किया। फिर उसे गोद से उतार कर हम तेंदुवे की लाश के पास पहुंचे। ऐसी बहादुरी की युद्ध लड़कर जिसमें वह करीब करीब जीत हो गया था तेंदुवा जमीन पर मरा पड़ा था।

मैं आपको कहानी सुना चुका हूं। इसे लिखते समय मेरे साथ रौबिन नहीं है—मनुष्य का सबसे वीर एवं विश्वासपात्र मित्र! अब वह (परलोक के) उस सुन्दर आखेटस्थान में मेरी प्रतीक्षा करता होगा।





चौगढ के शेर

मेरे सामने पूर्वी कुमायूँ का नक्शा टँगा हुआ है जिसमें कई स्थानों पर × के चिह्न बने हुए हैं और प्रत्येक × के नीचे एक तारीख लिखी हुई है। प्रत्येक × चिह्न अधिकृत व्यवस्था में दर्ज नरभक्षी शेर द्वारा मारे गये मनुष्यों की मृत्यु एवं मृत्यु की तारीखों का सूचक है। ऐसे ही ६४ चिह्नों से सम्पूर्ण नक्शा भरा हुआ है। नक्शे को इस सूची का ठीक मानने के लिये मैं तैयार नहीं हूँ क्योंकि इस नक्शे को टाँगे मुझे दो वर्ष हो चुके हैं और इस बीच कई मौतों की सूचना मुझे नहीं दी गई। इसके अतिरिक्त जिन लोगों को शेर ने घायल करके छोड़ दिया और बाद में उनकी मृत्यु हो गई वे बेचारे × चिह्न के या तारीख के अधिकारी न हुए।

नक्शे के अनुसार प्रथम हत्या १५ दिसम्बर १९२५ को तथा अन्तिम २१ मार्च १९३० को हुई थी। उसके बाद दो तारीखों के × चिह्नों के बीच अधिक से

अधिक ५० मील का अन्तर है और पूर्व से पश्चिम तक ३० मील का। बीच का यह प्रदेश लगभग १५०० वर्ग मील है। इस प्रदेश में अधिकांश घाटियां एवं पर्वत हैं जो जाड़ों में हिमाच्छादित रहते हैं और गर्मियों में तो इन घाटियों में झुलसानेवाली गर्मी के कारण रहना दुष्कर हो जाता है। इसी प्रदेश में चौगढ़ के शेर ने अपना आतंक जमा रखा था।

इस प्रदेश में छोटे-बड़े कई गांव बसे हुए हैं। नंगे पावों से चलने के कारण यहां प्राकृतिक पगडंडियां बन गई हैं और इन्हीं पगडंडियों से ये गांव आपस में संयुक्त हैं। इसके कुछ भाग घने वनों में से होकर निकले हैं और जब इन पर आदमखोर का प्रकोप रहता है, एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक संवाद चिल्ला-चिल्लाकर पहुंचा दिया जाता है। किसी ऊंची चट्टान पर खड़े होकर ग्रामीण जोर से कूक लगाता है और उसका उत्तर दूसरे गांववाला देता है। इस भांति सन्देश बड़ी शीघ्रता से आसपास के ग्रामों में दूर दूर तक फैला दिया जाता है।

फरवरी १९२९ में एक जिला सम्मेलन में मुझे इस शेर को मारने का काम सौंपा गया। उस समय कुमायूं डिविजन में तीन नरभक्षी शेर थे, किंतु अधिक हानि केवल चौगढ़ के शेर ने ही की थी। अतएव इसी का पीछा पहले करने का मैंने निश्चय किया।

सरकार द्वारा दिये गए × चिह्नों व तारीखोंवाले नक्शे से मुझे यह मालूम हो गया कि कालाआगर की घाटी के उत्तर और पूर्वीय भाग के गांवों में आदमखोर का विशेष आतंक है। पहाड़ का यह ४ मील लंबा भाग ८५०० फीट ऊंचा है और इसके शिखर पर घना जंगल है। घाटी के उत्तरीय भाग से लगी हुई एक जंगली सड़क बांझ और बुरूंश (Rhododendron) या बुरांस[1] के घने वन में से निकलती हुई जंगल और जुती भूमि के बीच में सीमा बन गई है। एक स्थान पर यह सड़क घूम गई है और इसी मोड़ पर कालाआगर का डाकबंगला स्थित है। इसी बंगले पर मुझे पहुंचना था। अप्रैल १९२९ की एक संध्या को मैं ४००० फीट की कड़ी चढ़ाई चढ़कर यहां पहुंच गया। नरभक्षी का अंतिम शिकार एक २२ वर्ष का युवक था। मजदूरियों को पहुंचाने के समय उस शेर ने मार डाला था।

दूसरे दिन इस मृत युवक की मां मुझसे मिलने आई। उसने मुझे बतलाया

[1] बुरूंश—बुरांस का पहाड़ी नाम

कि बिना किसी छेड़-छाड़ के शेर ने उसके एकमात्र पौत्र को मार डाला था। मृत युवक के गुणों की सराहना करते हुए उसने मुझे उसका समस्त इतिहास बता डाला। फिर उसने मुझसे अनुरोध किया कि मचान के नीचे बाँधने के लिये मैं उसकी मोटी दुधारू भैंसा को लेता जाऊँ। उसका कहना था कि यदि इस भैंसे की सहायता से नरभक्षी मारा जावे तो उसे बड़ा सन्तोष होगा कि अपने पोते की हत्या का बदला लेने में उसने हाथ बटाया। मेरे लिये यह बड़ी भैंस किसी काम की न थी किन्तु इसे अस्वीकार करने से उस वृद्धा के हृदय को ठेस लगती। अतः मैंने उसे आश्वासन दिया कि मेरे चार कटरों के समाप्त हो जाने पर मैं उससे भैंस ले लूँगा।

पास के गाँवों के मुखियों ने मुझे सूचित किया कि अन्तिम बार शेर २० मील दूर एक गाँव में देखा गया था। दस दिन पूर्व उसने गाँव के पूर्वीय ढाल में एक मनुष्य तथा उसकी पत्नी को मार कर खा डाला था। शेर के दस दिन पुराने मार्ग का अनुसरण करना व्यर्थ सा था। अतः मुखियों से बातचीत करके मैंने दल्कनिया जाने का निश्चय किया। दल्कनिया कालाआगर से १० मील दूर है। जिस गाँव में पूर्वोक्त पुरुष व स्त्री की हत्या हुई थी, वह भी यहाँ से केवल इतनी ही दूर है।

नक्शे से मालूम होता था कि शेर का अड्डा दल्कनिया के आसपास ही है।

दूसरे दिन प्रातःकाल जलपान के उपरान्त मैं दल्कनिया को चल दिया। जिस सड़क पर मैं चल रहा था वह घने जंगल के बीच में गई थी। इस सड़क पर मोर व मुर्गे इत्यादि खोजता हुआ मैं दस बजे उस स्थान पर पहुँचा जहाँ एक दूसरा रास्ता सड़क से मिलता था। यहाँ मुझे कुछ दल्कनिया के आदमी मिले। कालाआगरवालों ने ऊँची आवाज लगा कर सूचित कर दिया था कि मैं उनके गाँव में पड़ाव डालने आ रहा हूँ। ये लोग खबर देने के लिये आगे बढ़ आये थे कि उस सवेरे १० मील दूर शेर ने फसल काटती हुई कुछ स्त्रियों पर आक्रमण कर दिया था।

मेरा डेरा ढोनेवाले कुलियों की टोली आधे मील पीछे थी और आगे बढ़ने को भी तैयार थी किन्तु जब ग्रामीणों ने मुझे बताया कि रास्ता बड़ा ऊबड़-खाबड़ है और घने जंगल में होकर निकलता है तो मैंने घटनास्थल पर अकेले ही जाने का निश्चय किया। मेरे नौकरों ने जल्दी में थोड़ा नाश्ता बना

लिया। उसे खाकर ... बजे मैं अपने १० मील के धावे पर चल दिया। साधारणतः १० मील का रास्ता ... घण्टे में सरलता से काटा जा सकता है किन्तु इस समय परिस्थिति कुछ और थी। रास्ता पहाड़ के पूर्वीय भाग से होता हुआ कई घाटियों से होकर गुजरता था। स्थान स्थान पर चट्टानों झाड़ियों तथा वृक्षों से रास्ता रुका हुआ था। इन रुकावटों के पीछे कहीं भी नरभक्षी छिपा रह सकता था। प्रत्येक कदम फूंक फूंक कर रखना पड़ता था। अतः चलने में विलम्ब होना स्वाभाविक सा था। अपने लक्ष्य से मैं अभी कई मील दूर था किन्तु सन्ध्या समीप देखकर मुझे आगे बढ़ने का विचार स्थगित कर देना पड़ा।

किसी भी अन्य प्रदेश में तारों के नीचे सूखे पत्तों की शय्या पर सोकर रात्रि आराम से काटी जा सकती है किन्तु इस भूमि पर सोना स्वयं होकर मृत्यु का आह्वान करना था।

स्व अभ्यास के कारण बसने के लिए ठीक पेड़ छांटने और उसमें आराम से बैठ जाने की आदत से ऊँची जगह में रात काटना मेरे लिए सरल था। इस समय मैंने एक बांझ का वृक्ष पसन्द किया। एक शाखा के सहारे बन्दूक को मजबूती से बांधकर मैं सो गया। कुछ घण्टे बाद पत्तों की सरसराहट से मेरी नींद खुल गई। वृक्ष के नीचे कई जानवरों के चलने की आवाज आ रही थी। आवाज बढ़ती ही गई और उसी समय वृक्ष के वल्कलों को खरोंचते हुए पंजों की आवाज सुनाई पड़ी। कुछ दूर पर काफल[1] के वृक्षों पर भालुओं का परिवार चढ़ रहा था। खाते समय रीछ आपस में बुरी तरह लड़ा करते हैं। भालुओं के इस भोजन के समाप्त होने से पहले नींद आना कठिन था।

सूर्य निकले कुछ देर हो गई थी जब मैं गांव पहुंचा। जंगल के बीच में कुछ खुली हुई भूमि थी। इसी भूमि में एक गोशाला तथा दो झोपड़ों से निर्मित दस्तकारों का गांव बसा हुआ था। ग्रामीण अत्यन्त भयभीत थे। मुझे देख कर उनके हर्ष की सीमा न रही। उन्होंने उत्सुकता से मुझे वह गन्ने का खेत दिखलाया जिसमें छिप कर [illegible]

[1] काफल का वृक्ष हमारे पहाड़ों में ६००० फुट की ऊंचाई पर होता है। यह प्रायः [illegible] फुट ऊंचा होता है। इसका फल लाल रंग का और स्वाद में खट्टा होता है। इसे मनुष्य और रीछ दोनों बड़े चाव से खाते हैं। फल का आकार बेर से भी कुछ छोटा होता है।

देखा गया था। जिस मनुष्य ने स्त्रियों को पुकार कर सावधान किया था मसम वाले साहब! हमारा हल्ला सुनकर शेर जंगल को लौट गया। वहाँ से एक दूसरा शेर भी उसके साथ हो लिया और फिर वे दोनों साथ-साथ घाटी में उतर गये।

दोनों झोपड़ों में रहनेवाले रात भर न सो सके क्योंकि अपनी असफलता पर क्रुद्ध हो शेर रात भर दहाड़ते रहे। गाँव में मेरे पहुँचने के कुछ ही देर पहले उनका दहाड़ना बन्द हुआ था। इन सब बातों को सुनकर मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि नरभक्षी शेर के साथ में एक जवान साथी भी है।

पहाड़ी लोग बड़े अतिथिपूजक हैं। वह इस बात पर ज़ोर देने लगा कि मैं उनके गाँव में भोजन करता जाऊँ। उनके अनुरोध को नम्रता से टालते हुए मैंने केवल एक गिलास चाय की इच्छा प्रकट की किन्तु गाँव में चाय न था। अतः काफी मात्रा में गुड़ मिलाकर कुछ दूध से मेरा सत्कार किया गया। मेहमाननवाज़ी की रस्में पूरी हो चुकने पर ग्रामीणों ने मुझ से प्रार्थना की कि गेहूँ की फसल कटने तक मैं उनका पहरा देता रहूँ।

मध्याह्न के समय ग्रामीणों की शुभकामनाओं सहित मैं उस घाटी की ओर चल दिया जिधर शेर दहाड़ते सुनाई दिए थे।

जिस स्थान पर लधिया, लखोर और पूर्वी गौला नदियाँ अलग होती हैं उससे २० मील आगे तक नन्धौर की ओर यह घाटी चली गई थी। घाटी में घना जंगल है इसलिए शेर आदि दरिन्दों के पदचिह्नों का अनुसरण करना असम्भव था। या तो अपनी ओर आकर्षित करने पर ही शेर दिखाई पड़ते या फिर से अन्य वन्य प्राणियों की सतर्कता और पलायन से उनकी स्थिति का पता चलता।

जिनको पैदल चलकर नरभक्षियों का शिकार करने की आकांक्षा हो उन्हें यह जान लेना लाभदायक होगा कि जंगल में पशु-पक्षी एवं वायु के प्रवाह का ज्ञान शिकार में बड़ा सहायक रहता है। यहाँ पर उन जानवरों के नाम नहीं लिए जा सकते जिनके ज्ञान पर निर्भर हो शिकारी अपने प्राण रक्षा कर सकता है और साथ ही साथ अपने शिकार को प्राप्त कर सकता है। इस प्रसंग में यहाँ ८ मील के ही चलने पर ऊँचाई में हजारों फीट का अन्तर हो जाता है और स्थान-स्थान पर भिन्न प्रकार के पशु-पक्षी दिखाई पड़ते हैं। हाँ ऊँचाई का असर हवा पर नहीं पड़ता। चूँकि आत्मरक्षा के एवं शिकार में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है अतएव इस

विषय में कुछ लिखना मैं आवश्यक समझता हूं।

शेर को यह ज्ञान नहीं होता कि मनुष्य में घ्राणद्वारा अदृष्ट पशु को पहचानने की शक्ति नहीं होती। जब शेर नरभक्षी बन जाता है तब वह मनुष्य को भी अन्य वन पशुओं-सा समझता है। जब वह मनुष्य को देखता है तब वायुप्रवाह से विपरीत दिशा में अपने भक्ष्य की ओर बढ़ता है या प्रवाह की ओर उसकी घात में छिप कर बैठ जाता है। इस बात की सार्थकता तब स्पष्ट होती है जब यह भली प्रकार समझ लिया जाय कि शिकारी जब शेर की ताक में रहता है शेर भी बहुधा उसकी प्रतीक्षा में छिपा रहता है या उसे ढूंढ़ता रहता है। शेर को अपने रंग आकार तथा छिपकर चलने की योग्यता से कई लाभ हैं। यदि शिकारी को वायु की सहायता न हो तो शेर से उसकी कोई बराबरी नहीं।

अपने शिकार को शेर चुपके से ढूंढकर मारने में पीछे से आक्रमण करता है। इसलिये ऐसे वन में जहां नरभक्षी का आना-जाना हो बिना वायु प्रवाह की सहायता लिये घूमना एक प्रकार से आत्महत्या करना सा है। उदाहरणार्थ मान लीजिये कि शिकारी को परिस्थितियों से लाचार होकर उस ओर बढ़ना है जिधर से हवा चल रही हो। इस भांति अवश्य ही खतरा उसके पीछे रहेगा क्योंकि पीठ के पीछे शिकारी की गंध जानवर की नाक में मिल जावेगी और पीछे के आक्रमण से बचना बहुत कठिन है। यदि वह वायुप्रवाह के प्राय आरपार चलता रहे तो खतरा उसके दायें या बायें रहेगा और आत्मरक्षा अधिक सरल होगी। कागज के ऊपर यह योजना उतनी आकर्षक नहीं लगती किंतु आजमाने पर यह काम देती है। अन्यथा घने जंगल में जहां भूखा नरभक्षी छिपा हो वहां वायु के विपरीत चलने के सिवाय और कोई अच्छा व सुरक्षित उपाय मैं नहीं जानता।

संध्या तक मैं घाटी के ऊपरी भाग पर पहुंच गया। अभी तक न तो मुझे शेर ही दिखाई पड़े थे और न पशु-पक्षियों ने ही कोई चेतावनी दी थी। आबादी का एक मात्र चिह्न जो मुझे अब दिखाई दिया वह थी घाटी के उत्तर में स्थित एक गोशाला।

इस रात सोने के लिये मैंने सावधानी से एक अच्छा पेड़ छांट लिया। रात भर मैं आराम से सोता रहा। अंधेरा होने के कुछ देर पश्चात् शेर बोले और साथ ही साथ भराऊ बन्दूक की दो आवाजें आईं। इसके बाद कुछ ग्वालों के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी और फिर सब शांत हो गया।

दूसरे दिन दोपहर तक मैंने घाटी का चप्पा चप्पा छान डाला और जब मैं अपने आदमियों से मिलने दलकनिया की ओर चलने लगा तब गोशाला की ओर से किसी के पुकारने की आवाज सुनाई दी। जब मैंने उस पुकार का उत्तर दे दिया तब सामने की चट्टान पर एक आदमी दिखाई पड़ा। उसने चिल्लाकर मुझसे पूछा क्या आदमखोर को मारने के लिये आये हुए नैनीताल के साहब आप ही हैं? मेरे हां कहने पर उसने मुझे सूचित किया कि दोपहर को घाटी में चरते हुए उसके मवेशियों में भगदड़ मच गई थी। गाय भैंसों के घर लौटने पर गिनती की गई तो एक सफेद गाय कम मिली। उसको सन्देह हो रहा था कि गाय रात में दहाड़ते हुए शेरों द्वारा मारी गई थी। इस सूचना के लिये उसे धन्यवाद देता हुआ मैं घाटी की ओर चल दिया।

कुछ ही दूर जाने पर मुझे वह स्थान मिल गया जहां से मवेशी भागे थे। जानवरों के खोजों का अनुसरण करने पर मैं उस स्थान पर पहुंच गया जहां शेर ने गाय को मारा था। गाय को मारकर शेर उसे घाटी की गहराई में घसीट ले गया था। शेर के खोजों पर चलना उचित न था अतः मैं एक लम्बा चक्कर लगाकर उस स्थान पर जा पहुंचा जहां मुझे लाश मिलने की आशा थी। नाले का यह भाग दूसरे भाग से कम गहरा था और 'रौन' (Bracken) की घनी झाड़ियों से भरा हुआ था। यहां वह मोड़ से घूमकर आगे बढ़ा जा सकता था। सावधानी से पांव रखते हुए मैंने कमर कमर तक ऊंची रौन की झाड़ियों में हो चलना शुरू किया। नाले की तलहटी में मैं लगभग ३० ही गज रह गया कि मुझे सामने कोई वस्तु हिलती डुलती दिखाई पड़ी। फिर अकस्मात किसी पशु का एक सफेद पैर उठता हुआ दिखा और दूसरे ही क्षण शेरों की भयानक गुर्राहट सुनाई दी। शेर लाश को खाने में जुटे हुए थे और बीच-बीच में आपस में लड़ पड़ते थे।

काफी देर तक मैं मूर्तिवत खड़ा रहा। शेरों की गुर्राहट बन्द हो गई थी किन्तु वह सफेद पैर अब भी हिलता जा रहा था। शेरों के और समीप जाना उचित न था क्योंकि यदि मैं समीप पहुंच कर एक शेर पर गोली चला भी देता तो भी दूसरे के आक्रमण का भय था। मुझे यहां पर लगा था कि अपने बचाव की कोई सम्भावना ही न था। आगे मेरी बाईं ओर एक चट्टान था। यदि किसी भांति सावधानी से उस चट्टान पर पहुंच जाता तो अवश्य ही शेरों पर गोली चलाने का अवसर मिल सकता था। बन्दूक को आगे-आगे सरकाता हुआ और हाथ पांवों के

विषय में कुछ लिखना मैं आवश्यक समझता हूँ।

शेर को यह ज्ञान नहीं होता कि मनुष्य में घ्राणेन्द्रिय द्वारा अदृष्ट पशु को पहचानने की शक्ति नहीं होती। जब शेर नरभक्षी बन जाता है तब वह मनुष्य को भी अन्य वन पशुओं-सा समझता है। जब वह मनुष्य को ढूँढ़ता है तब वायुप्रवाह से विपरीत दिशा में अपने भक्ष्य की ओर बढ़ता है या प्रवाह की ओर उसकी घात में छिप कर बैठ जाता है। इस बात की सार्थकता तब स्पष्ट होती है जब यह भली प्रकार समझ लिया जाय कि शिकारी जब शेर की ताक में रहता है शेर भी बहुधा उसकी प्रतीक्षा में छिपा रहता है या उसे ढूँढ़ता रहता है। शेर को अपने रंग आकार तथा छिपकर चलने की योग्यता से बड़ा लाभ है। यदि शिकारी को वायु की सहायता न हो तो शेर से उसकी कोई बराबरी नहीं।

अपने शिकार को शेर सपर्क से टक्कर मारने में पीछे से आक्रमण करता है। इसलिये ऐसे वन में जहाँ नरभक्षी का आना जाना हो बिना वायु प्रवाह की सहायता लिये घूमना एक प्रकार से आत्महत्या करना सा है। उदाहरणार्थ मान लीजिये कि शिकारी को परिस्थितियों से लाचार होकर उस ओर बढ़ना है जिधर से हवा चल रही हो। इस भाँति अवश्य ही खतरा उसके पीछे रहेगा क्योंकि पीठ के पीछे शिकारी की गंध जानवर की नाक में मिल जावेगी और पीछे के आक्रमण से बचना बहुत कठिन है। यदि वह वायुप्रवाह के प्राय आरपार चलता रहे तो खतरा उसके दाँये या बाँये रहेगा और आत्मरक्षा अधिक सरल होगा। कागज के ऊपर यह योजना उतनी आवश्यक नहीं लगती किंतु आजमाने पर यह काम देती है। अन्यथा घने जंगल में जहाँ भूखा नरभक्षी छिपा हो वहाँ वायु के विपरीत चलने के सिवाय और कोई अच्छा व सुगम उपाय मैं नहीं जानता।

सन्ध्या तक मैं घाटी के ऊपरी भाग पर पहुँच गया। अभी तक न तो मुझे शेर ही दिखाई पड़े थे और न पशुओं ने ही कोई चेतावनी दी थी। आबादी का एक मात्र चिह्न जो मुझे अब दिखाई दिया वह था घाटी के उत्तर में स्थित एक गोशाला।

इस रात सोने के लिये मैंने सावधानी से एक अच्छा पेड़ छाँट लिया। रात भर मैं आराम से सोता रहा। अँधेरा होने के कुछ देर पश्चात शेर बोला और साथ ही साथ भराऊ बन्दूक की दो आवाजें आईं। इसके बाद कुछ ग्वालों के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी और फिर सब शान्त हो गया।

दूसरे दिन दोपहर तक मैंने घाटी का चप्पा चप्पा छान डाला और जब मैं अपने आदमियों से मिलने दनकनिया की ओर चलने लगा तब गोशाला की ओर से किसी के पुकारने की आवाज सुनाई दी। जब मैंने उस पुकार का उत्तर दे दिया तब सामने की चट्टान पर एक आदमी दिखाई पड़ा। उसने चिल्लाकर मुझसे पूछा क्या आदमखोर को मारने के लिये आये हुए नैनीताल के साहब आप ही हैं? मेरे हाँ कहने पर उसने मुझे सूचित किया कि दोपहर को घाटी में चरते हुए उसके मवेशियों में भगदड़ मच गई थी। गाय भैंसों के घर लौटने पर गिनती की गई तो एक सफेद गाय कम मिली। उसको सन्देह हो रहा था कि गाय रात में दहाड़ते हुए शेरों द्वारा मारी गई थी। इस सूचना के लिये उसे धन्यवाद देता हुआ मैं घाटी की ओर चल दिया।

कुछ ही दूर जाने पर मुझे वह स्थान मिल गया जहाँ से मवेशी भागे थे। जानवरों के खोजों का अनुसरण करने पर मैं उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ शेर ने गाय को मारा था। गाय को मार कर शेर उसे घाटी की गहराई में घसीट ले गया था। शेर के खोजों पर चलना उचित न था अतः मैं एक लंबा चक्कर लगाकर उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ मुझे लाश मिलने की आशा थी। नाले का यह भाग दूसरे भाग से कम गहरा था और 'रोन' (Bracken) की घनी झाड़ियों से भरा हुआ था। यहाँ बड़े मजे से छुपकर आगे बढ़ा जा सकता था। सावधानी से पाँव रखते हुए मैंने कमर कमर तक ऊँची रोन की झाड़ियों में ही चलना शुरू किया। नाले की तलहटी से मैं लगभग ३० ही गज रह गया कि मुझे सामने कोई वस्तु हिलती डुलती दिखाई पड़ी। फिर अकस्मात् किसी पशु का एक सफेद पैर उठता दिखा दिया और दूसरे ही क्षण शेरों की क्रोधभरी गर्जना सुनाई दी। शेर लाश को खाने में जुटे हुए थे और खाते-खाते में आपस में लड़ पड़ते थे।

काफी देर तक मैं मूर्तिवत खड़ा रहा। शेरों की गुर्राहट बन्द हो गई थी किन्तु वह सफेद पैर अब भी हिलता जा रहा था। शेरों के और समीप जाना उचित न था क्योंकि मुझे से समीप पहुँच कर एक शेर पर गोली चलाने पर दूसरे के आक्रमण का भय था। भूमि यहाँ पर ऐसी थी कि आना बचने की सम्भावना ही न थी। आगे मेरी बाईं ओर एक चट्टान था। दस फिट ऊँचे [illegible] मुश्किल से उस चट्टान पर पहुँच जाना तो अवश्य ही [illegible] अवसर मिल सकता था। बन्दूक को आगे-आगे सरकाता हुआ और हाथ पैरों के

धीरे रेंगता हुआ मैं चट्टान के नीचे पहुँच गया। एक मिनट सुस्ता कर मैंने देखा कि मेरी रायफल ठीक से भरी हुई है, फिर मैं चट्टान पर जा चढ़ा। उस ओर झाँकने पर मुझे दोनों शेर दिखाई पड़े।

एक शेर गाय के पिछले धड़ को समाप्त करने में मग्न था और दूसरा पास ही लेटा हुआ अपने पंजों को चाट रहा था। आकार में दोनों शेर बराबर एवं समान थे किन्तु जो शेर अपना पंजा चाट रहा था उसका रंग दूसरे से हल्का था। इसी हल्के रंग की खाल को देख कर मैंने सोचा कि यही वह पुरानी नरभक्षिणी है। सावधानी से निशाना साधकर मैंने बन्दूक चला दी। गोली लगते ही वह पिछले पाँवों पर खड़ी होकर पीछे की ओर लुढ़क गई। दूसरा शेर कूद कर घाटी में अदृश्य हो गया। मुझे दूसरी गोली चलाने का मौका तक न मिल पाया। मेरी मारी हुई शेरनी ने पूँछ तक नहीं हिलाई। लाचार चक्कर मारकर मैं उसके समीप जा पहुँचा। समीप आने पर मेरी प्रसन्नता निराशा में परिणित हो गई क्योंकि मैंने शेरनी के बच्चे को मार डाला था। मेरी इस तनिक सी भूल के कारण आगामी वर्ष तक जिले के १५ मनुष्यों को प्राणों से हाथ धोना पड़ा। सम्भवतः मैं भी स्वयं अपने प्राणों से हाथ धो बैठता।

शेर का यह पाठी कई अवसरों पर मनुष्यों की हत्या करने में अपनी माता का हाथ बंटा चुका था और मनुष्य के मांस का स्वाद भी उसके मुँह में लग ही चुका था। वह स्वयं नरभक्षिणी से कम न था। यह सोच कर मेरी निराशा कुछ कम हो गई।

खुले मैदान में मनुष्यों की एवं उपयुक्त औजारों की सहायता से शेर की खाल उतारना सरल है किन्तु यहाँ पर यह काम अत्यन्त कठिन था क्योंकि मैं चारों ओर से घनी झाड़ियों से घिरा हुआ था और चमड़ा उतारने के लिए एक जेबी चाकू के अतिरिक्त मेरे पास अन्य कोई हथियार न था। यद्यपि दूसरी शेरनी का मुझे भय न था क्योंकि शेर अपनी आवश्यकता से अधिक शिकार कभी नहीं मारता। फिर भी न जाने क्यों मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि शेरनी कहीं पास ही छिपी हुई मेरे प्रत्येक काम को देख रही है।

सूर्य ऊँचे पहाड़ों के पीछे आँखमिचौनी खेलता हुआ पश्चिम की ओर खिसकता ही चला जा रहा था। मेरा कठिन काम भी समाप्त हो चुका था। रात मुझे आज भी जंगल ही में व्यतीत करनी थी। अतः मैंने उसी स्थान पर ठहरने

का निश्चय कर लिया। शेरनी के खाने से मुझे मालूम हो गया कि वह पुरानी शेरनी थी। उस जिले में लगभग प्रत्येक मनुष्य के पास बन्दूक थी। अतः इस शेरनी को मनुष्य जाति तथा उसके कर्तव्य का अच्छा अनुभव था। अधिक आयु होने से शेरनी काफी सतर्क थी किंतु फिर भी लाश पर उसके लौटने की सम्भावना थी।

यहां पर पेड़ अधिक न थे इसलिये एक साधारण से वृक्ष पर मैं जा बैठा। इस वृक्ष में बैठने पर रात भर बड़ा कष्ट रहा। बीच बीच में शेरनी शोर करती थी। जैसे जैसे प्रातःकाल होने लगा वैसे वैसे उसका बोलना क्षीणतर होता गया और अन्त में ऊपर की घाटी पर समाप्त हो गया।

भोजन किये मुझे ८ घंटे हो चुके थे। भूख-प्यास से बुरा हाल था और थकान से समस्त शरीर सुन्न हो गया था। रात को पानी बरस चुका था इस कारण कपड़े शरीर से चिपके हुए थे। जब कुछ उजाला हो आया तब काठ में शेर की खाल बांधकर मैं दलकनिया को चल दिया।

शेर की ताजा खाल का मन कभी तौला नहीं है (मय पंजा व सिर के) किन्तु यह मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि भले ही पहले समय उसका वजन २० सेर रहा हो किन्तु कैम्प पहुंचते पहुंचते उसका वजन १०० सेर हो गया था।

मेरे आदमी एक आंगन में सैकड़ों ग्रामीणों के साथ परामर्श में लगे हुए थे। खून और पानी से सना हुआ लड़खड़ाता हुआ मैं जब उनके पास पहुंचा तो उनके हर्ष का पारावार न रहा। मेरा उन्होंने जो स्वागत किया उसे मैं आजन्म नहीं भूल सकता।

मेरा २ मनवाला सफरी तम्बू कुछ दूर पर ठलिया के एक खेत में लगा दिया गया था। मेरे बक्सों पर तख्ता रखकर मेज बना दी गई और इसी मेज पर मेरे लिये चाय लगा दी गई। मेरे नौकर काफी पुराने थे और कई अवसरों पर शिकार में साथ यात्रा कर चुके थे। बाद को मुझे पता चला कि जब गांववालों ने यह माना कि शेर ने मुझे मार डाला है तो उन्हें विश्वास न हुआ। और जब दलकनिया के मुखिया ने यह प्रस्ताव उनके सम्मुख रखा कि अल्मोड़ा व नैनीताल को मेरे गायब होने की सूचना भेज दी जाए तो उन्होंने इसका विरोध किया। उन्हें पूर्ण आशा थी कि मैं लौट आऊंगा। इसी आशा के प्रतीक रूप चाय की केतली आग पर चढ़ी हुई खौल रही थी।

थकान व गर्मी के कारण स्नान करना अत्यंत आवश्यक था। गर्म पानी में नहाकर मैं सोने को जा ही रहा था कि आकाश में बिजली की चमक-दमक शुरू हो गई। सारे आसमान में काली घटा उमड़ आई थी। भावी झंझावात के लक्षणों को देख कर तत्काल ही खेमे की रस्सियों को खूंटियों के सहारे मजबूती से बांध दिया गया। अंधड़ के साथ वर्षा भी होने लगी। एक घंटे तक अंधड़ पानी जारी रहा। मेरी सभी वस्तुएं भीग गई थीं और तम्बू के अन्दर तो एक नन्हीं-सी नदी ही बह रही थी। केवल मेरा बिस्तरा भीगने से बच गया था। अन्त में १ बजे के करीब हम लोगों ने बिस्तरों की शरण ली। मेरे आदमियों के लिये गांववालों ने एक कमरा दे दिया था। उसी में कुंडियां चढ़ाकर वे सो रहे। मैं भी मेरी बन्दूक बगल में डाल कर सो गया।

दूसरा दिन कपड़ों को सुखाने और शेर की खाल को खूंटियों पर तानने में व्यतीत हुआ। गांववाले भी छुट्टी मना रहे थे। वे लोग मुझे घेरे हुए थे। कोई अपने अनुभव सुना रहा था तो कोई मेरे अनुभव सुनने को लालायित था। विरला ही ऐसा व्यक्ति था जिसके किसी न किसी रिश्तेदार को आदमखोर ने न मारा हो। प्रायः कई लोगों के शरीर या चेहरे में शेर के दांत या पंजों के निशान पड़े हुए थे। गलत शेरनी के मारे जाने पर जब मैंने दुःख प्रकट किया तो वे इसे मानने को तैयार ही न हुए। हाल ही में एक मनुष्य व उसकी पत्नी साथ साथ मारे गये थे इसलिये उनका दृढ़ विश्वास था कि नरभक्षिणी एक नहीं बल्कि दोनों शेरनियां ही थीं।

मेरा खेमा पहाड़ के ऊपर एक स्थान पर लगा हुआ था जहां से चारों ओर का दृश्य साफ दिखता था। मेरे नीचे नंधौर की घाटी थी जिसकी दूसरी ओर लगभग १० फीट ऊंचा पर्वत था। पहाड़ पर कहीं भी आबादी के चिह्न नहीं दिखाई देते थे। मैं मोढ़ानुमा खाना की मेड़ पर दूरबीन और सरकारी नक्शा लिये बैठा था और गांववाले मुझे वे स्थान बताते जा रहे थे जहां गत तीन वर्षों में १० व्यक्तियों की हत्याएं नरभक्षिणी कर चुकी थी। ४ वर्ग मील के प्रदेश में ये हत्यायें हुई थीं।

लोगों को यहां के जंगलों में मवेशी चराने की अनुमति मिली हुई थी। इन्हीं मवेशियों के मार्ग पर आगे चार भैंसे बांधने का मैंने निश्चय किया।

अगले १० दिनों तक भैंसों की कोई खबर न मिली। गवर गांव में सभा की

क्रमानुसार स्नान और साधना करता था और दिन भर जंगल की खोज करता था। बस यही मेरी दिनचर्या थी। ग्यारहवें दिन मेरे हृदय में आशा का कुछ-कुछ संचार हुआ। खबर मिली कि पास के नाले में एक गाय मारी गई है परन्तु लाश पर पहुँचने पर मालूम हो गया कि हत्यारा शेर नहीं बल्कि बाघ है। फिर भी ग्रामीणों ने आग्रह किया कि मैं इस तेंदुए को मार डालूँ। कई वर्षों से मवेशियों को यह साफ करने में लगा हुआ था। इसलिए मैंने तेंदुए के लिए बैठने का निश्चय कर लिया। लाश के पास ही मैं एक गुफा में जा छिपा। कुछ ही देर बाद नाले की उस ओर से आता हुआ तेंदुआ मुझे दिखाई पड़ा। लक्ष्य साध कर मैं बन्दूक चलाने को प्रस्तुत हुआ ही था कि गाँव से किसी की घबड़ाई हुई आवाज़ सुनाई दी। मुझे कोई पुकार रहा था।

पुकारने का मतलब एक ही अर्थ हो सकता था। अपना टोप उठाकर मैं फुरती से बाहर कूद पड़ा। तेंदुआ बेचारा ताकता ही रह गया। पहले तो वह पेट के बल धरती पर सिकुड़ गया किन्तु फिर फुदकता हुआ कूद कर भाग गया।

दौड़ता हुआ मैं नाले की धार पर पहुँचा और चिल्लाकर मैंने पुकारनेवाले को अपने आने की सूचना दे दी। वह आदमी बेचारा गाँव से सीधा दौड़ता ही चला आया था। दम लेकर उसने मुझे बताया कि गाँव से थोड़ी मील की दूरी पर आदमखोर ने एक स्त्री मार डाली थी। यह खबर सुनते ही मैं गाँव की ओर दौड़ पड़ा। आँगन में लड़की को घेरे हुए कई मनुष्य बैठे थे।

बालिका के ऊपर के कन्धे को शेरनी ने फाड़ दिया था। सर पीठ को झुकाए हाथों के सहारे वह चुप बैठी थी। तेज श्वास लेने के कारण उसका वक्षस्थल जल्दी-जल्दी ऊपर-नीचे हो रहा था। सारा कपड़ा रक्त से सना था और गर्दन पर खून बह कर जमता जा रहा था।

मेरे देखते ही भीड़ इधर उधर हो गई। मैं लड़की के घावों का निरीक्षण कर रहा था कि लोगों ने मुझे आक्रमण का हाल सुनाना आरम्भ कर दिया। खड़े हुए मैदान में कई लोगों की उपस्थिति में शेरनी ने लड़की पर हमला किया था। घटना के समय लड़की का पति भी वहीं पर था। सब के चिल्लाने पर शेरनी लड़की को छोड़कर जंगल की ओर भाग गई थी। लड़की को मृत जानकर लोग मुझे खबर देने चल दिये थे किन्तु होश आने पर लड़की स्वयं ही गाँव वापस आ गई थी। लोगों का मत था कि कुछ ही

६

क्षणों में लड़की मर जावेगी और उसकी लाश पर बैठ कर मैं शेरनी को मार लूंगा।

किसी भयभीत एवं घायल पशु की भांति वह बालिका टकटकी लगाये मुझे देख रही थी। उसकी दृष्टि में याचना थी।

लड़की को स्वच्छ वायु की आवश्यकता थी। और इस कोलाहलपूर्ण वातावरण में मुझे स्वयं कुछ न सूझ रहा था। अतएव कोमलता का परित्याग कर मैंने बलपूर्वक भीड़ को कक्ष से हटा दिया। पास ही खड़ी एक लड़की को मूर्च्छा सी आ रही थी अतः उसे मैंने कमरा छोड़ कर लान को भेज दिया। फिर कुछ स्त्रियों को पानी गर्म करने को तथा मेरी कमीज फाड़कर पट्टियां बनाने का आदेश दिया।

गर्म पानी व पट्टियां तैयार हो चुकी थीं कुछ देर बाद वह लड़की कैंची ले आई। गांव भर में यही एक कैंची थी और वह भी एक मृत दर्जी की विधवा से प्राप्त हुई थी। वह विधवा उसको अपने स्वर्गीय पति के काम में लाया करती थी। कैंची के फलों पर बुरी तरह से जंग लगी हुई थी और काटने न चलती थी। अन्त में थक कर मैंने रक्त से सने हुए बालों की लटों को उसी भांति छोड़ दिया।

सबसे बड़े घाव लड़की के माथे पर थे। शेरनी ने पंजे से खोपड़ी को खोल लिया था और दूसरा घाव माथे से कान तक था। इन बड़े घावों के अतिरिक्त दाहिने स्तन, कंधे और गर्दन पर भी कई घाव थे। ऊपर का अधिकांश अंग क्षत-विक्षत था। दाहिने हाथ पर भी एक घाव था जो शायद आत्मरक्षा करते समय लग गया था।

मेरे एक डाक्टर मित्र ने कभी मुझे एक शीशी किसी पीले रंग की तरल औषधि की दी थी। ऐसे ही अवसरों के लिए वह मुझे बताई गई थी। इस समय भी वह शीशी मेरी जेब में तैयार थी। बहुत दिन पुरानी होने के कारण दवा का काफी भाग उड़ गया था किन्तु फिर भी शीशी में पर्याप्त औषधि थी। तुरन्त ही शीशी का मुंह साफ कर मैंने लड़की के घावों में सारी दवा उड़ेल दी और फिर पट्टियां बांध दीं। तदनन्तर बालिका को उठाकर मैंने उसके घर पहुंचा दिया।

दस दिन बाद अपने जाने से पूर्व मैंने उस लड़की से भेंट की। गांव में आज दिन के लिए वह द्वार पर बैठी हुई थी।

गर्दन के गहरे घाव के अतिरिक्त अन्य सब घाव भर चुके थे। अपने हाथों से केशों को हटाकर उसने मुझे खोपड़ी का घाव दिखलाया। खोपड़ी के टुकड़े अपने स्थान पर जुड़ गये थे। मुस्कराते हुए उसने कहा "साहब अच्छा ही हुआ कि उस दिन मेरी बहिन जंगल गयी हुई कंघी ले आई।" (मुंडा हुआ सर वैधव्य का चिह्न है।)

यदि कभी ये पंक्तियाँ मेरे डाक्टर मित्र पढ़ें तो जान लें कि उनकी दी हुई पीली औषधि ने एक बहादुर नवयुवती के प्राण बचाये थे।

यह सब कुछ सुनने पर मैंने उस स्थान पर एक बकरी बाँध दी जहाँ शेरनी ने युवती पर आक्रमण किया था और पास ही खड़े बांज के एक वृक्ष पर चढ़ कर मैंने रात्रि काटी। शेरनी के मुँह से घास छीन लिया गया था अतः भोजन की खोज में उसके लौटने की सम्भावना थी। परन्तु वह लौट कर न आई।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने भूमि का निरीक्षण किया। लड़की पर आक्रमण करने के पश्चात् शेरनी घाटी के ऊपरी भाग में चली गई थी। शेरनी मवेशियों के मार्ग पर होकर गई थी। यही मार्ग आगे चलकर नेर नयोदी को पार करता है। दो मील आगे जिस स्थान पर यह मार्ग अल्मोड़ा सड़क से मिलता है, पत्थर पर शेरनी के खोज खो गये थे।

दो दिन तक आसपास के ग्रामवासी अपने घरों से दूर नहीं गये। केवल आवश्यक कामों के लिये ही वे बाहर निकलते थे। तीसरे दिन तक हरकारे ने आकर मुझे सूचना दी कि दल्कनिया से ५ मील दूर लाहाली के गाँव में नरभक्षिणी ने एक हत्या कर डाली थी।

मैंने शीघ्र ही अपनी तैयारियाँ कर लीं और दोपहर के कुछ बाद अपने चार पथ प्रदर्शकों को लेकर मैं चल पड़ा। दो मील की कड़ी चढ़ाई समाप्त कर हम दल्कनिया के दक्षिण में स्थित पहाड़ की चोटी पर पहुँच गये। तीन मील नीचे घाटी में शेरनी ने हत्या की थी। इसके अतिरिक्त मेरे पथ प्रदर्शक और कुछ मुझे न बता सके। लामाला के समीपस्थ ग्राम के वे रहनेवाले थे। १० बजे उन्हें यह खबर मिली थी। ग्रामवासियों के अनुरोध पर वे मुझे सूचित करने दल्कनिया चले आये थे।

पहाड़ के ऊपर जब हम खड़े थे पूर्ण शान्ति न थी। सुस्ताने के लिये वहाँ बैठ कर मैं धूम्रपान करने लगा। मेरे साथी इशारे से मुझे आसपास की मुख्य

जगहें बनाते जा रहे थे। हमारे नीचे एक बड़ी चट्टान के नीचे छोटी सी झोपड़ी थी। इस झोपड़ी की कहानी मेरे साथियों ने मुझे इस प्रकार बताई

चार वर्ष पूर्व एक भोटिया (भूटान की एक जाति जिनकी मुख्य जीविका बकरों व याकों पर सामान लाद कर व्यापार करना है) इस झोपड़े में रहता था। जाड़ों में वह अपनी बकरियों पर नमक, गुड़ आदि लाद कर दूर दूर के पहाड़ी प्रदेशों में व्यापार करता था और गर्मी व बरसात में अपनी बकरियों को लेकर इसी झोपड़े में रहता था। इस प्रकार बकरियों को आराम भी मिल जाता था और वे आगामी वर्ष के काम के लिये तैयार हो जाती थीं। एक बार इन बकरियों ने उस किस्सा सुनानेवाले मनुष्य की फसल का नुकसान कर दिया। जब ये लोग शिकायत करने ऊपर पहुंचे तो भोटिये को नदारद पाया। पास ही जंजीर से बंधा हुआ मरा कुत्ता पड़ा था जो झोपड़ी की रखवाली करता था। लोगों को यह रहस्यमय व्यापार देख सन्देह हुआ। अतएव कुछ लोगों के एक टोले ने भोटिये की खोजना आरम्भ कर दिया। ४०० गज की दूरी पर खिजरों से लदा हुआ एक वांझ का पेड़ था। इसी वृक्ष के नीचे भोटिये का अस्थिपिंजर पड़ा हुआ था और उसके फटे कपड़े भी। यही चौगढ़ की नरभक्षिणी का प्रथम मानव शिकार था।

पहाड़ से एकदम नीचे उतरने का कोई मार्ग न था। आदमियों ने मुझे बताया कि कुछ भाग चढ़कर एक ढालू रास्ते से काला आगी पहुंचा जा सकता था। रास्ता खराब था।

हम लोग आधा मार्ग तय कर चुके थे कि अकस्मात मुझे ऐसा लगा जैसे कोई हमारा पीछा कर रहा है। यद्यपि दिल इस बात को मानने को तैयार न था क्योंकि इस प्रदेश में अब केवल एक आदमखोर शेरनी रह गई थी और उस शेरनी ने तीन मील दूर सिंगा को मार डाला था। उसकी लाश को छोड़ने की कोई सम्भावना न थी। जब हम चोटी के चौड़े भाग पर पहुंच गये थे किंतु फिर भी मेरे हृदय में सन्देह बना था। अतः आदमियों को वहां पर खड़ा कर मैं काल्पनिक शेरनी की खोज में चल पड़ा। जंगल में वापस पहुंच कर मैं सावधानी से चलकर आदमियों को आगे करता। जंगल में शेरनी के कोई भी चिन्ह न थे। फिर भी इस घटना के पश्चात् मैंने आदमियों को आगे चलने को आदेश दिया। पाइन्ट-४०० बन्दूक तैयार किये मैं चला। जब हम उस ढाल से गांव में पहुंच गये वहां से ये आदमी मेरा सामान भेज गये थे मेरे साथियों ने मुझसे विदा मांगी।

मैंने बड़ी प्रसन्नता से उन्हें अनुमति दे दी, यद्यपि अभी एक मील और घने जंगल में मुझे जाना था, किंतु इतने आदमियों की रक्षा करने के बदले केवल अपनी ही रक्षा करना मैंने आसान समझा। कुछ नीचे एक स्वच्छ जलस्रोत था। इसी सोते से गाँववाले पानी भरा करते थे। यहाँ मुझे गीली मिट्टी में आदमखोर के ताजे खोज मिले। ये खोज गाँव की ओर से आये थे। कुछ ही दूर ऊपर थोड़ी देर पहले मुझे ऐसा लग रहा था कि शेरनी हमारा पीछा कर रही है। इन सब बातों पर सोचते हुए मुझे प्रतीत हुआ कि लाश की खोज में मेरा आना निरर्थक हुआ है।

जंगल से ज्यों ही मैं बाहर आया कि सामने लोहाली का गाँव दिखलाई पड़ा। यह गाँव ५-६ मकानों का था। एक घर के द्वार पर इस समय सब लोग एकत्रित थे।

मुझे जंगल से निकलते हुए लोगों ने देख लिया था। मेरा स्वागत करने के लिये कुछ मनुष्य आगे बढ़ आये। एक वृद्ध ने झुक कर मेरे पैर छू लिये। उसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी।

"साहब, मेरी लड़की को बचा लो," उसने अस्फुट स्वर से मुझसे प्रार्थना की।

संक्षेप में उसने अपनी दुःखभरी कथा मुझे सुना दी। उसकी इकलौती पुत्री जो विधवा थी अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ जंगल में ईंधन लाने गई। पहाड़ की एक ओर घाटी में होता हुआ एक सोता बहता था। इसी सोते की दूसरी तरफ कुछ सीढ़ीनुमा खेत थे। इन्हीं खेतों में उस वृद्ध की लड़की लकड़ियाँ बीन रही थी। कुछ देर बाद सोते के किनारे खड़ी हुई स्त्रियों ने लड़की की चीत्कार सुनी। देखा तो शेरनी लड़की को लिये हुई कुछ कटीली झाड़ियों के झुरमुट में चली जा रही थी। औरतें सरपट गाँव को भागीं और हल्ला मचाया। भयभीत गाँववालों ने लड़की की खोज में जाने का कोई प्रयत्न न किया। हाँ, मुझे बुलाने के लिये पास के गाँव से चार मनुष्य भेज दिये गये। लगभग आधे घंटे बाद घायल लड़की लड़खड़ाती हुई घर आ पहुँची। उसका कहना था कि जब शेरनी उस पर उछली तब रक्षा का अन्य उपाय न देख वह पहाड़ से नीचे कूद पड़ी, किन्तु शेरनी ने उसे हवा में ही पकड़ लिया और [illegible] को लिये नाले आ गई। इसके बाद उसे कुछ याद न था। होश आने पर उसने अपने

का पानी के समीप पाया। चिल्लाने की शक्ति उसमें न थी अतः हाथ-पैरों से घिसटती हुई वह घर पहुंच गया।

वृद्ध की कहानी सुन लेने पर मैंने दरवाजे से झाड़ को हटाया और अन्दर जाकर घायल लड़की के ऊपर पड़ी हुई खून से सनी चादर को अलग किया। लड़की की दयनीय दशा का वर्णन करने का मैं साहस भी नहीं कर सकता। यदि मैं आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित डाक्टर होता तो भी सम्भवतः मैं उसकी जान न बचा पाता। फिर मैं तो था एक साधारण मनुष्य। दवाई के रूप में मेरी जेब में थोड़ा सा पोटासियम परमैंगनेट पड़ा हुआ था। ऐसी परिस्थिति में लड़की के प्राण बचाना असम्भव था। बन्द कमरे में बहुत गर्मी के कारण घाव पक चुके थे। गनीमत थी कि वह बेचारी केवल अर्धचेतनावस्था में थी। लड़की का पिता मेरे साथ ही कमरे में आ गया था। केवल उसे सन्तुष्ट करने के लिए मैंने लड़की के घावों को अच्छी तरह पोटासियम परमैंगनेट मिश्रित जल से धो दिया।

अपने पड़ाव पर लौटने के लिये अब विलम्ब हो चुका था। अतः रात काटने के लिये कोई स्थान खोजना था। कुछ दूर सोते के किनारे एक वृहत्काय पीपल का वृक्ष था। इस पीपल के नीचे पूजा आदि करने के लिये एक चबूतरा बना हुआ था। इस चबूतरे पर कपड़े उतार कर मैंने सोते में स्नान किया और फिर भरी राइफल लेकर पेड़ से पीठ लगाये रात काटने को तैयार हो गया। वैसे यह स्थान रात व्यतीत करने के लिये अनुकूल न था किंतु गाँव के उस अंधकारमय गर्म कमरे से जहां मक्खियों का झुंड भिनभिना रहा था और यातना में पड़ी हुई एक स्त्री अपनी अन्तिम घड़ियां गिन रही थी यह स्थान हर प्रकार से बेहतर था।

रात में गाँव से आती हुई करुण क्रन्दन से मालूम हो गया कि घायल बालिका के कष्टों का अन्त हो गया है। प्रातःकाल मैं जब गाँव से गुजरा तो उसकी अन्त्येष्टि क्रिया का आयोजन हो रहा था।

दल्कानिया तथा कोल्हीखाली हत्याओं को देख कर यह स्पष्ट हो गया था कि वृद्धा शेरनी साधारणतः अपनी पाठी पर ही निर्भर रहा करती थी। घायल कर लेने पर मनुष्यों को खत्म करने का काम शेरनी पाठा से कराती थी।

प्रायः नरभक्षियों द्वारा आक्रान्त मनुष्यों में से विरला ही कोई बच कर भाग

पाता हूँ किंतु इस विशेष नरभक्षिणी द्वारा आक्रमण होने पर अधिकांश लोग केवल घायल हुए थे। समीपस्थ अस्पताल ५० मील दूर था। बाद में नैनीताल लौटने पर मैंने सरकार से निवेदन किया कि इस गाँवों के मुखिया को जहाँ कि आदमखोरों का प्रकोप हो कीटाणुनाशक औषधियाँ एवं पट्टियाँ आदि भेज दी जाएँ। दूसरी बार उधर लौटने पर मुझे जानकर हर्ष हुआ कि मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली गई थी और इन औषधियों के द्वारा कई लोगों के प्राण बच गये।

दल्कनिया में एक सप्ताह और रह कर मैंने शनिवार को नैनीताल वापस लौटने का निश्चय कर लिया। नरभक्षिणी के राज्य में मुझे लगभग एक मास हो चुका था। निरन्तर खुले स्थानों में सोने से व खतरे के स्थानों में न जाने कितने मील चलने से मैं अपने को अस्वस्थ सा अनुभव करने लगा था।

मेरी यह घोषणा सुनकर ग्रामीणों को बड़ा दुःख हुआ। मुझसे उन्होंने अनुरोध किया कि मैं जाने का विचार स्थगित कर दूँ। मैंने उनको वचन दिया कि मैं जल्दी ही लौट आऊँगा।

इतवार के दिन गाँव का मुखिया बोला, साहब जाने से पहले हमारे लिये कुछ शिकार मारते जाइये।

मैंने उसकी प्रार्थना को तत्काल स्वीकार कर लिया और आध घंटे बाद मैं अपनी २७५ राइफल व पाँच कारतूस लेकर ५ आदमियों सहित जंगल को चल पड़ा। सामने पहाड़ की ढाल पर मैंने अपने कैम्प से कई बार घुरड़ों को चरते हुए देखा था।

मेरे साथ के ५ आदमियों में से एक काफी लम्बा एवं दुबला-पतला था। उसका चेहरा अत्यंत कुरूप था। वह पहले कई बार मेरे सामने आ चुका था। मैं उसकी बातों को बड़े ध्यान से सुनता था। कई बार वह मुझे अपनी आदमखोर से मुठभेड़ वाली कहानी सुना चुका था यहाँ तक कि मुझे उसकी कहानी कण्ठस्थ हो गई थी और मैं नींद में भी उसे दुहरा सकता था। उसी के शब्दों में मैं उसकी कहानी लिखता हूँ। यह घटना ४ वर्ष पूर्व घटित हुई थी।

“सामने की ढाल पर उस चीड़ के पेड़ को आप देख रहे हैं न साहब?” उसने उंगली उठाते हुए कहा।

‘हाँ हाँ’ ‘उस पेड़ जिसके पूर्व की ओर वह बड़ा सा चट्टान है। बस इसके ऊपर झाड़ी में शेर ने मेरे पर आक्रमण किया था। मैं हंसियानुमा खाल

मकान की दीवार की भांति एकदम सीधा खड़ा है। पहाड़ियों के अतिरिक्त इसपर कोई भी पैर नहीं जमा सकता। उस दिन मैं और मेरा आठ वर्षीय पुत्र इस ढाल पर घास काट रहे थे। घास काट कर हम ऊपर मैदान पर रखते जाते थे। ढाल के किनारे पर खड़े होकर मैं घास का गट्ठर बना रहा था कि अकस्मात् आदमखोर मुझ पर कूद पड़ा। मेरी दाहिनी आंख के नीचे तथा ठोड़ी व गर्दन पर उसने अपने पैने दांत गड़ा दिया। उसके वजन से और हमले की झपेट से मैं पीठ के बल गिर पड़ा। शेर मेरे ऊपर आ गया था। उसके सीने से मेरा सीना चिपका हुआ था और मेरी टांगों के बीच उसका पेट था। गिरते समय मैंने बांज की एक शाखा पकड़ ली थी। इस देख मेरे मस्तिष्क में एक विचार आया। यदि मैं अपनी टांगों को समेट कर शेर के सीने से भिड़ा दूं और उसे धकेल दूं तो कदाचित् बचकर भागने का अवसर मिल जाय। शेर मेरे चेहरे की हड्डियों को चूर चूर करता जा रहा था। आह कैसी यातना थी! साहब मैं फिर भी बेहोश न हुआ।

हमारे गांव का सबसे तगड़ा युवक मैं ही था उसने सगर्व अपनी मांस पेशियों को फुलाते हुए आगे कहा। धीरे धीरे मैंने अपने पैर सिकोड़ कर शेर की छाती में लगा लिये और बायें हाथ का जोर लगाते हुए एक झटके के साथ मैंने शेर को अपनी टांगों पर साधते हुए हवा में उठा लिया। दूसरे क्षण शेर ढाल में नीचे लुढ़कता नजर आया। यदि पेड़ की टहनी को मैं कस कर पकड़े न होता तो स्वयं गिर जाता।

भय के मारे मेरा लड़का मंत्रमुग्ध सा खड़ा ही रह गया था। मैंने उसकी धोती से अपना मुंह लपेटा और गांव पहुंच गया। घर पहुंच कर मैंने अपनी स्त्री से कहा कि मेरे मित्रों को बुला दो। मरने से पहले मैं सबसे मिलना चाहता था।

'मेरे मित्र मुझे चारपाई पर लिटा कर ५० मील दूर अल्मोड़े के अस्पताल ले जाना चाहते थे किंतु मैंने उन्हें मना कर दिया। पीड़ा अथाह थी मेरा अन्त समीप था और मेरी प्रबल इच्छा थी कि मेरी मृत्यु उसी ग्राम में हो जहां मेरा जन्म हुआ था।

जब लोगों ने मुझे पानी पिलाने का प्रयत्न किया वह मेरे गले के घावों से बाहर बह निकला।



मैं वेदना से तड़पता हुआ अपने अन्त की प्रतीक्षा कर रहा था क्योंकि उस पीड़ा से मृत्यु हर प्रकार अच्छी थी। धीरे-धीरे स्वयं ही मेरे घाव भर गए और मैं स्वस्थ हो गया। साहब जैसा आप अब देख रहे हैं मैं बूढ़ा हो चला

हूं। अब मेरा शरीर भी दुर्बल हो गया है। लोग मुझे घृणापूर्वक देखते हैं।

'मेरी शत्रु वह नरभक्षिणी अभी जीवित है। वह शेरनी के रूप में कोई प्रेतात्मा है और जब कभी भी उसे खून की जरूरत होती है वह शेर का रूप धारण कर हत्याएं करता है। लोगों का कहना है कि आप साधु हैं। जो शक्तियां आपकी रक्षा करती हैं वे प्रेतात्मा से बड़ी हैं अन्यथा आप तीन दिन रात जंगल में अकेले रह कर कैसे लौट आये ?'

उसके स्थूलकाय शरीर को देख कर मालूम होता था कि वह अपने समय में सचमुच ही एक बड़ा बलिष्ट पुरुष रहा होगा अन्यथा साधारण मनुष्य की शक्ति नहीं कि वह शेर को टांगों पर रख कर उछाल दे।

यही विलक्षण मनुष्य इस समय हमारा पथ प्रदर्शक बना हुआ आगे आगे चल रहा था। उसके कंधे पर एक सुन्दर सी कुल्हाड़ी थी। टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होते हुए उसने हमें नीचे घाटी में पहुंचा दिया।

मचौर नदी पार करके हम कुछ ऐसे खेतों के पार आ पहुंचे जिनको आदमखोर के भय से उजाड़ छोड़ दिया गया था। इसके बाद हमें बड़ी कड़ी चढ़ाई चढ़नी पड़ी। मेरे साथी में अब भी ताकत की कमी न थी। मैं बीच-बीच में ठहर कर आसपास के सुन्दर दृश्य की सराहना कर रहा था अन्यथा उसके साथ-साथ चलना कठिन हो जाता।

पेड़ों के जंगल से निकल कर हम घास के ढाल पर पहुंच गये। इसी ओर एक पत्थर की विशाल चट्टान थी। लगभग १ फीट तक यह ऊपर को चली गई थी। इस चट्टान के ऊपर थोड़ी सी हरियाली थी जिस पर चरते हुए घुरड़ को मैं आने से पहले ही देख चुका था। हम लोग कुछ ही दूर गये होंगे कि नीचे घाटी से एक घुरड़ निकल कर ऊपर को चढ़ने लगा।

मेरा साथी घास हो घुटनों के बल हो गया और भड़कता हुआ आंखों से ओझल हो गया। चट्टान की तलहटी में सोया हुआ एक दूसरा घुरड़ बन्दूक की आवाज से चौंक कर चट्टान के ऊपर दौड़ा। पत्थर की चट्टान पर घुरड़ एवं थार के अतिरिक्त अन्य कोई भी जानवर इस प्रकार दौड़ने का साहस नहीं कर सकता।

घुरड़ ऊपर को चढ़ता ही जा रहा था। बन्दूक की मक्खी को १० गज के

साच पर रख कर म उसके रुकने की प्रतीक्षा करने लगा। अन्त में ऊपर एक चट्टान पर खड़ा होकर वह हमें ताकने लगा। मेरी गोली लगने पर वह लड़खड़ाया समझा और फिर धीरे-धीरे चढ़ने लगा। दूसरी गोली से वह गिर पड़ा और लुढ़कता हुआ वहां आ गिरा जहां से वह चला था। लुढ़कता-लुढ़कता अन्त में वह हमसे १५ गज नीचे एक पगडंडी पर रुक गया।

इसके बाद जो घटना घटित हुई वह मेरे लम्बे शिकारी जीवन की एक अद्वितीय घटना थी। इससे पूर्व केवल एक अवसर पर मैंने ऐसा दृश्य देखा था किंतु उस समय लुटेरा एक बाघ था।

घुरड लुढ़कता हुआ आकर जैसे ही रुका वैसे ही पास के नाले से बड़ा-सा रीछ (Himalayan bear) निकल कर सीधा घुरड के पास आ गया। फिर वह वहां पर बैठ गया और घुरड को गोद में उठा कर सूंघने लगा। उसी समय मैंने गोली चला दी। या तो मुझसे बन्दूक चलाने में कुछ जल्दी हो गई या मैंने अधिक दबा कर निशाना साधा क्योंकि सीने के बजाय गोली भालू के पेट में जा लगी।

इस आकस्मिक वज्रापात को रीछ ने घुरड की ही करतूत समझ कर उसे जोर से उछाल कर दूर फेंक दिया और गर्राता हुआ नीचे को भागा। जिस समय वह १ गज नीचे से भागता जा रहा था मैंने अपना अन्तिम कारतूस उस पर दाग दिया। गोली पिछले धड़ के मांस में जा धंसी। मैंने आदमियों को घुरड उठाने भेज दिया और स्वयं रक्त के चिन्ह देखने चल दिया। खून से मालूम हो गया कि रीछ को चोट करारी लगी है किन्तु फिर भी खाली राइफल लेकर उसको खोजना उचित न था। प्रायः ऐसे अवसरों पर भालू का मुकाबला करना बड़ा कठिन होता है। साधारणतया भी रीछ स्वभाव का तेज जानवर होता है।

सीमा यहां से बहुत दूर था। अतः वहां से कारतूस मंगवाने का समय न था। इसलिए यह निश्चय हुआ कि पत्थर और कुल्हाड़ों से भालू को समाप्त कर दिया जाय।

पहाड़ काफी ऊंचा था और उस पर झाड़ियां छितरी रूप में थीं। ऊपर ऊपर चलते रहने से हमारा काम बन सकता था और न यह भय था कि हमारा टोली का कोई भी सदस्य खतरे में रहेगा। आगे-आगे मैंने चलना शुरू किया और

पीछे पीछे वे दो मनुष्य एक-एक घुरड़ को अपनी पीठ पर लादे हुए चले आ रहे थे।

रक्त की धार नीचे नाले की ओर चली गई थी। यहां से हमारी टोली दो भागों में विभाजित हो गई। मैं और मेरा कुल्हाड़ीवाला साथी नाले के करीब करीब चल रहे थे और शेष आदमियों को कुछ दूर पर चलने का आदेश दे दिया था।

हमसे पचास गज नीचे नाले में कुछ छोटे बांसों का एक पुंज था। जब इस झुरमुट में पत्थर फेंका गया तो भालू गुस्से में चीखता हुआ बाहर निकल आया। दूसरे ही क्षण हमारी टोली के लोग फुरती से पहाड़ पर जा चढ़े। मुझे इस ढंग की कसरत का अभ्यास नहीं था। जब मैंने पीछे मुड़ कर देखा भालू नीचे को वापस भाग रहा था। मैंने आवाज लगा कर अपने साथियों से पुनः रीछ का पीछा करने के लिये कहा। हम लोग बीच-बीच में उसपर पत्थरों की बौछार करते जा रहे थे जिनका उत्तर रीछ गुर्राकर देता जा रहा था। अन्त में एक मोड़ पर भालू अदृश्य हो गया। अब फिर आगे रक्त की धार का अनुसरण करना उचित न था क्योंकि हम लोग पथरीले प्रदेश में आ गये थे। किसी भी चट्टान के पीछे भालू छिपा रह सकता था।

कुछ देर घूमकर दायीं ओर से हम लोग आगे बढ़े। मैं एक ऊंची चट्टान पर जा चढ़ा और झुक कर नीचे झांका तो भालू को लेटा हुआ पाया। मैंने एक १५ सेर का ढोंका उठा लिया और निशाना लेकर उसे रीछ पर गिरा दिया।

पत्थर रीछ की नाक के कुछ आगे गिरा और उसी समय वह उठ कर चल दिया। फिर वह हमको पहाड़ की बगल में दिखाई पड़ा। फिर से उसका पीछा सरगर्मी से शुरू हो गया। यहां ढलान सरल हुआ था अतः हम भी दौड़ते हुए उसका पीछा करते रहे। लगभग एक मील दौड़ने पर हम लोग कुछ सीढ़ीनुमा खेतों में आ पहुंचे। बरसात के पानी से इन खेतों में नालियां-सी बन गई थीं। इन्हीं में एक नाली में रीछ ने जाकर शरण ली।

मेरे कुल मित्र धार में मल्लयुद्ध करनेवाला केवल एक ऐसा पाठा था जिसके पास कुल्हाड़ी थी। अतः सर्वसम्मति से जल्लाद के काम के लिये उसी को चुना गया। बिना किसी झिझक के और सावधानी से वह रीछ के पास

पहुंच गया और एक बार हवा में अपने चमकीले कुल्हाड़े को घुमा कर उसने फल के उल्टे भाग से रीछ के माथे पर एक भरपूर हाथ जमा दिया। अपने परिश्रम का परिणाम उल्टा देखकर वह स्तम्भित रह गया। कुल्हाड़ी का सिरा रीछ की खोपड़ी पर से ऐसा उछला जैसे मानो वह रबर के ढेर पर मारा गया हो। रीछ गुस्से से चीखकर पिछले पाँवों पर खड़ा हो गया किंतु भाग्यवश उसने हमला नहीं किया।

रीछ कुछ दूर चल कर फिर एक नाली में छिप गया। अब मेरी बारी थी। परन्तु एक चोट खा लेने पर रीछ सतर्क हो गया था और मुझे पास फटकने भी न देता था। बड़ी कठिनाई से मैं चक्कर काटकर उसके समीप पहुंच गया।

मुझे बचपन से ही जंगल जाकर एक लकड़हारा बनने की आकांक्षा थी। इसलिए मुझे कुल्हाड़े से काट करने का अच्छा अभ्यास था। मैं दियासलाई की सींक को कुल्हाड़े के फल से एक बार में चार कर दो कर सकता था। मुझे कुल्हाड़े के स्वामी की भांति कुल्हाड़े के फिसलकर पत्थरों पर खराब होने का भय न था। जैसे ही मैं रीछ के समीप पहुंचा मैंने कुल्हाड़े का समूचा फल उसकी खोपड़ी में धंसा दिया।

रीछ की खाल पहाड़ियों के लिए एक बहुमूल्य वस्तु है। जब मैंने कुल्हाड़े के मालिक से कहा कि वह पुरड़ के मांस के दो हिस्सों के साथ ही साथ रीछ की खाल को भी ले सकता है तो उसके गर्व की सीमा न रही। अन्य लोग उसे ईर्ष्या भरी दृष्टि से देख रहे थे।

अब घटनास्थल पर गाँव के और भी कई मनुष्य आ गये थे। पुरड़ के मांस का बंटवारा हो रहा था और भालू की खाल निकाली जा रही थी। मैं गाँव वापस चला आया।

मैं दिन भर का थका हुआ था। यदि उस रात नरभक्षिणी उधर आ निकलती तो सचमुच ही मुझे वह ऊंघता हुआ पाती।

जिस रास्ते से मैं लोहाघाट से चम्पावत आया था वह बड़ी खराब था। कई स्थानों पर विकट चढ़ाइयां चढ़नी पड़ती थीं। जब मैंने अपना विचार गाँववालों को बताया उन्होंने राय दी कि मुझे टनकपुर होकर जाना चाहिए। इस रास्ते से मोटर तक सवारी मिलती थी और फिर साथ तीन मीलावाला पहुंचा जा सकता था। लालाबाग से मैं ननीताल कार से जा सकता था।

यात्रा की तयारी करने के लिये मैंने अपने आदमियों से रात ही में कह दिया था। उन्हें सामान बाँधने के लिये पीछे छोड़कर मैं दिन निकलने से कुछ पूर्व ही दलकनियावालों से विदा लेकर चल पड़ा। जिस पगडंडी से मैं इस समय जा रहा था वह उससे भिन्न थी जिससे हम लोग दलकनिया आये थे। इस पगडंडी से गाँववाले पहाड़ की तलहटी के बाजारों में सौदा लेने जाया करते थे। यह पगडंडी बाँझ और चीड़ के जंगलों में से होकर गई थी।

गत सप्ताह में बाघिन की कोई सूचना नहीं मिली थी। इसी से मैं और भी सतर्क हो गया था। अन्त में एक घंटे बाद मैं वन में से निकल कर पहाड़ की चोटी जा पहुँचा। पहाड़ का यह खुला हुआ भाग लगभग १०० गज लम्बा एवं ५० गज चौड़ा था। इसका आकार कुछ-कुछ नासपाती सा था और इसके बीच में बंधे हुए पानी का एक पोखर था। साम्भर इत्यादि इस पोखर से पानी पिया करते थे और किनारे पर लोटा करते थे। खोज देखने के लिये मैं पोखर के समीप चला आया। जलाशय के किनारे गीली मिट्टी पर बाघिन के खोज अंकित थे। जिधर से मैं आया था उसी ओर से बाघिन भी आई थी। मेरे पहुँचने से वह कदाचित सामने के घने जंगल में चली गई थी। मैंने एक सुअवसर खो दिया था क्योंकि यदि जरा सावधानी से मैं आगे देखता हुआ चला होता तो पहले मैंने ही उसे देखा होता। फिर भी मैं लाभ में था क्योंकि बाघिन अवश्य ही मुझे देख चुकी थी अन्यथा वह पोखर से हड़बड़ा कर भागती नहीं। वह यह भी देख चुकी थी कि मैं अकेला था। कदाचित वह यह अनुमान लगाती होगी कि उसी की भांति मैं भी पोखर में पानी पीने जाऊँगा। अवश्य ही वह आड़ से मुझे देखती जा रही होगी। अब तक मेरी गति बिलकुल स्वाभाविक थी और यदि मैं उसे दिखला पाता कि उसकी उपस्थिति का मुझे ज्ञान नहीं है तो सम्भवतः वह मुझे दूसरा अवसर दे देती। अतः झुकते हुए मैंने कई बार माथा और पानी को हाथ से हिलाया। साथ ही साथ बड़ी सतर्कता से मैं टोप के नीचे से इधर-उधर देखता जा रहा था। इसके बाद कुछ सूखी लकड़ियाँ बीनता हुआ मैं धीरे-धीरे चट्टान के नीचे आ गया। यहाँ मैंने कुछ आग जला ली और चट्टान से पीठ सटा कर सिगरेट पीने लगा। सिगरेट के समाप्त होने तक आग

भी सम्भल चुकी थी। फिर मैं अपने बायें हाथ पर सर रख कर लेट गया। राइफल मैंने जमीन पर रख दी किंतु उंगली घोड़े पर तैयार थी।

मेरे ऊपर की चट्टान काफी ऊंची थी और उस पर किसी भी जानवर का खड़ा होना असम्भव था। मुझे केवल सामने की ओर से सतर्क रहने की आवश्यकता थी। सामने की झाड़ी भी लगभग २० गज दूर थी अतः मैं भली भांति सुरक्षित था। यद्यपि अभी तक मैंने शेरनी की आहट नहीं पाई थी और न उसे देखा ही था परन्तु मुझे दृढ़ विश्वास था कि वह मुझे देख रही है।

मेरे टोप के किनारे से मेरी आंखें ढकी हुई थीं किन्तु मैं नीचे से भली भांति देख सकता था। जहां तक मेरी दृष्टि पहुंच सकती थी मैंने जंगल के चप्पे-चप्पे को भली भांति देख डाला। वायु निस्पन्द थी और पेड़ के पत्ते तक स्थिर थे। मैं अपने आदमियों को आदेश दे आया था कि वे इकट्ठे होकर गाते हुए मुझसे मिलें। अभी तक वे पहुंचे न थे और कम से कम डेढ़ घंटे तक उनके आने की आशा भी न थी। इस बीच सम्भवतः शेरनी मुझ पर आक्रमण करने या मारको ढूंढने के लिये झाड़ से बाहर निकल आये।

कुछ अवसरों पर समय की गति बड़ी मन्द रहती है। कभी एक-एक पल एक एक वर्ष के समान प्रतीत होता है और कुछ अवसरों पर पता भी नहीं चलता कि समय कब कट गया। मेरा बायां हाथ जिस पर मैं सर रखे हुआ था बड़ी देर से सुन्न हो गया था किन्तु फिर भी नीचे घाटी से आती हुई मेरे आदमियों के गाने की आवाज मुझ तक इस समय सुनाई पड़ी। आवाजें तेज होती गईं और उसी समय मुझे वे एक मोड़ पर दिखाई पड़े। सम्भवतः इसी मोड़ पर शेरनी ने मुझे पानी पीकर लौटते समय देख लिया था। यह दूसरी असफलता थी और इस बार का अंतिम अवसर!

जब कुछ देर मेरे आदमी सुस्ता लिये तब हम हरसान के डाकबंगले की ओर चल दिये। यह रास्ता २० मील लम्बा था। लगभग १०० गज सुन्ल मग्नान में सन्न धवन पर हम लोगों का रास्ता एक घने जंगल में से होता हुआ चला गया था। यहां से मैंने अपने आदमियों को आगे कर लिया और पीछे पीछे स्वयं चलने लगा। इसी भांति ना मील चल लेने पर हमें मार्ग में बैठा हुआ एक मनुष्य दिखाई दिया। वह अपनी भैंसों को चरा रहा था। हमारे जलपान का

और उसमें घास और झाड़ियों का घना जंगल उग आया था। नरभक्षिणी शेरनी के उत्पात का अभी अन्त नहीं हुआ था और वह अब भी स्वच्छन्दतापूर्वक जंगलों में विचरण कर रही थी। इसलिए इस झाड़ी में जाना उचित न था। दाहिनी ओर एक हरा भरा ढाल था किन्तु बिल्कुल खुली जगह होने के कारण उधर से छिप कर लाश के समीप पहुँचना कठिन था। पहाड़ की चोटी से लेकर नीचे नयार नदी तक एक नाला चला गया था। इस नाले में घना जंगल था और यह नाला लाश के पास से ही निकला था। जिस वृक्ष पर गिद्ध बैठे हुए थे वह इसी नाले की कगार पर था। इसी नाले में होकर आगे बढ़ने का मैंने निश्चय किया। जब तक मैं ग्रामीणों की सहायता से कूबन की योजना बना रहा था तब तक मेरे आदमियों ने मेरे लिये चाय तैयार कर दी। दिन डूबने को था किन्तु इतना समय था कि मैं लाश को देख कर अपने पड़ाव पर वापिस लौट आऊँ।

जाने से पहले मैं अपने मनुष्यों को आदेश दे गया कि यदि वे बन्दूक की आवाज सुनें और मुझे लाश के पास की खुली जगह में खड़ा देख लें तो २–४ आदमी खुले मैदान में होते हुए मेरे पास भेज दिए जायें। यदि इसके विपरीत वे बन्दूक की आवाज न सुनें और मैं सुबह तक न लौटूँ तो मुझे खोजने का आयोजन किया जावे।

इस नाले में बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं और वह रसभरी (Raspberry) की झाड़ियों से भरा हुआ था। इसलिये मुझे धीरे-धीरे आगे बढ़ना पड़ रहा था। अन्त में बड़ी चढ़ाई चढ़ चुकने पर मैं उस वृक्ष के पास पहुँच गया जिस पर गिद्ध बैठे हुए थे। परन्तु इस स्थान से लाश नहीं दिखाई पड़ रही थी। जिस उजड़े हुए खेत को मैं दूरबीन से साधा देख चुका था पास आने पर ज्ञात हुआ कि वह अर्धचन्द्राकार है। एक ओर घना जंगल था और दूसरी ओर पहाड़। लाश को देखने के लिए या तो वृक्ष पर चढ़ना पड़ता या एक लम्बा चक्कर लगाना पड़ता।

मैंने वृक्ष की शरण लेना उचित समझा। गाय की लाश पेड़ से लगभग २० गज दूर पड़ी हुई थी और कदाचित् तेंदुआ इसके भी समीप था अतएव बिना तेंदुए को छेड़े हुए वृक्ष पर चढ़ना असम्भव था। यदि वृक्ष पर गिद्ध न होते तो मैं पेड़ पर चढ़ने का प्रयत्न भी न करता। वृक्ष पर लगभग २ गिद्ध

बैठे हुए थे। दो और गिद्धों के आ जाने पर वृक्ष में कलरव सा मच गया। यह वृक्ष पहाड़ की कगार पर झुका हुआ था और लाश की ओर इसमें से एक मोटी शाखा निकली हुई थी। बन्दूक लिए हुए इस शाखा तक पहुंचने में मुझे कठिनाई हुई। इस बार जब गिद्धों में फिर से झगड़ा शुरू हुआ तो मैं आगे बढ़ कर एक टहनी पर जा बैठा। यदि जरा भी पांव इधर से उधर हो जाता तो नीचे गिरने से हड्डी-पसली चूर-चूर हो जाती।

इस स्थान से लाश साफ दिखाई पड़ रही थी। लाश का थोड़ा-सा भाग खाया गया था। मुझे टहनी पर बैठे कोई १० ही मिनट हुए होंगे कि दोनों नवागंतुक गिद्ध पेड़ से उड़कर जमीन पर आगये। वृक्ष पर के अन्य गिद्धों ने उनका विशेष आदर सत्कार नहीं किया था। ये गिद्ध भूमि पर बैठे ही थे कि पुनः उड़ गये। उसी क्षण मेरी ओर की झाड़ियों में से एक सुन्दर तेंदुआ बाहर निकल आया।

जिन लोगों ने तेंदुए को अपने प्राकृतिक घर जंगल में नहीं देखा है वे उसकी चपलता और सुन्दर रंगीन खाल की कल्पना भी नहीं कर सकते। हमारे भारतीय जंगलों का यह सब से सुन्दर और शानदार जानवर है। उसका सौन्दर्य केवल बाहरी ही नहीं है क्योंकि उसके शरीर की प्रत्येक मांसपेशी में बल भरा हुआ है। साहस एवं बल में उसकी तुलना किसी अन्य पशु से नहीं की जा सकती। भारत में कई जगह तेंदुवे की परिभाषा की जाती है — गल्ले आदि का नुकसान पहुंचाने वाला एक बेकाम जानवर (Vermin) किन्तु इस सुन्दर पशु को यह नाम देना अन्याय है। तेंदुवे को बेकाम हानिकर जानवर केवल वे ही कह सकते हैं जिन्होंने चिड़ियाघरों में बन्द कमजोर, रोगी और भूख से क्षीणकाय तेंदुवा को देखा हो।

पर इस समय मेरे सामने खड़ा तेंदुआ सुन्दर तो था किन्तु दण्डनीय था क्योंकि उसने गांव के मवेशियों को मारना शुरू कर दिया था। मैं गांववालों को वचन दे चुका था कि उनके इस छोटे दाम को मैं अवसर मिलने पर अवश्य मार दूंगा। वह अवसर अब आगया था और मेरी समझ में तेंदुए ने बन्दूक की आवाज भी न सुनी होगी कि वह लोट गया।

मनुष्य को अपने जीवन में कई अकल्पनीय परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इनमें सबसे विचित्र है—किसी मनुष्य विशेष या परिवार पर दुर्भाग्य

का आना। उदाहरणार्थ इसी मृत गाय के स्वामी को ले लीजिए। उसकी आयु आठ वर्ष की थी। दो वर्ष पूर्व घास काटते समय उसकी माता को आदमखोर ने मार डाला था। इस घटना के ठीक एक वर्ष पश्चात उसके पिता की भी यही गति हुई। पिता के छोड़े से ऋण को चुकाने में घर की हाँडी तक बिक गई और इस लड़के ने केवल एक गाय लेकर अपनी जीविका आरम्भ कर दी। गाँव के २० – ० मवेशियों के झुंड में से तेंदुवे ने इसी लड़के की गाय को चुना। (लड़के के दुःख को दूर करने के लिए मैंने उसे एक नई पहाड़ी गाय ले दी। किन्तु इससे उसे विशेष सांत्वना न मिली—वह मृत सफेद गाय उसकी चिरसंगिनी थी।)

दल्कानिया पहुँचते ही मैंने अपने कटरों को बाँधना आरम्भ कर दिया यद्यपि मुझे शेरनी द्वारा इन कटरों के मारे जाने की आशा कम थी।

नंधौर घाटी के पाँच मील नीचे एक बड़ी सी चट्टान की तलहटी पर एक छोटा-सा गाँव बसा हुआ है। यह चट्टान लगभग हजार फीट ऊँची है।

गत महीनों में आदमखोर इसी गाँव की सीमा पर चार मनुष्यों को मार चुका था। तेंदुवे को मारने के बाद ही मेरे पास गाँववालों के कुछ प्रतिनिधि यह अनुरोध लेकर पहुँचे कि मैं अपने वर्तमान पड़ाव को उठा कर गाँव के समीप ले चलूँ। शेरनी को कई बार गाँव के ऊपर की चट्टान पर ग्रामीणों ने देख लिया था और ऐसा प्रतीत होता था कि चट्टान के ऊपर की किसी गुफा में ही उसकी माँद थी। मुझे बताया गया कि आज ही सुबह घास काटती हुई कुछ स्त्रियों ने शेरनी को देख लिया था। इसी कारण समस्त ग्राम में आतंक था और लोगों को घरों से बाहर निकलने तक का साहस नहीं होता था। मैंने गाँववालों तथा भेजे गए प्रतिनिधि मंडल को वचन दिया कि मैं भरसक उनकी सहायता करूँगा। मैं दूसरे दिन सवेरे ही रवाना हो गया। गाँव के सामनेवाले पहाड़ पर चढ़ कर मैं बड़ी देर तक अपनी दूरबीन से चट्टान को देखता रहा। इसके बाद घाटी को पार कर मैं गाँव के ऊपर चट्टान पर पहुँच गया। यहाँ चढ़ने में मुझे बड़ी कठिनाई हुई क्योंकि पाँव फिसलने से नीचे गिर पड़ने का भय था। यदि वहाँ शेरनी इस जगह आक्रमण कर देती तो अपनी रक्षा करना भी असम्भव था।

दो बजे मैंने चट्टान को भली प्रकार देख लिया और भोजन करने के

लिये अपने खीमे को लौट ही रहा था कि पीछे की ओर से दो आदमी मेरी ओर दौड़ते हुए दिखाई पड़े। मेरे पास पहुँचने पर उन्होंने मुझे बताया कि एक गहरे नाले में (जहाँ मैं दिन में जा चुका था) शेरनी ने एक बैल को अभी अभी मार डाला था।

यह नाला दो सौ गज गहरा और सौ गज चौड़ा था। स्थान पर पहुँचने पर मुझे मालूम हुआ कि गिद्धों ने कुछ हड्डियाँ और खाल के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं छोड़ा। यह स्थान गाँव से केवल एक सौ गज के फासले पर था किन्तु ऊपर जाने के लिये कोई सीधा रास्ता न था। अब मेरा पथ प्रदर्शक मुझे दो फर्लांग घाटी से नीचे ले आया। इसी स्थान से मवेशियों के चलने का एक मार्ग भी शुरू हुआ था। यह मार्ग घने जंगल में से होता हुआ घूम कर गाँव को जाता था। इसी मार्ग से हम गाँव पहुँचे। गाँव पहुँचने पर मैंने मुखिया को बताया कि गिद्धों ने लाश को समाप्त कर दिया है। मैंने उससे एक बछड़ा और कुछ मजबूत रस्सियों का प्रबन्ध करने को भी कह दिया। जब सब ये प्रबन्ध हो रहे थे मेरा भोजन दलकनिया से आ गया।

सूर्यास्त में देर न थी जब मैं कुछ आदमियों को लेकर नाले वापस गया साथ में एक तगड़ा बछड़ा भी ले लिया था। स्थान से ५० गज दूर बरसाती पानी द्वारा बहा हुआ एक चीड़ का वृक्ष पड़ा था। इस वृक्ष का एक सिरा नाले के तल में खूब गहरा धँसा हुआ था। इसी वृक्ष के बाहर निकले हुए सिरे से बछड़े को मजबूती से बाँध कर गाँववाले गाँव को वापिस चले गये। आसपास में कोई वृक्ष न थे इसलिये मुझे नाले की कगार पर ही बैठना पड़ा। यह कगार नाले से २० फीट ऊँची थी। कगार के कुछ नीचे चट्टान अन्दर की ओर मुड़ गई थी और यह मुड़ा हुआ भाग ऊपर से नहीं दिखाई पड़ता था। बैठने के लिये यह बड़ी खराब जगह थी। अतः जिधर से शेरनी के आने की सम्भावना थी उसी ओर पीठ करके मैं बैठ गया। मुझसे [illegible] गज दूर सामने बछड़ा बँधा हुआ था।

सूर्य डूब चुका था जब बछड़ा सहसा नाले के ऊपर की ओर देखने लगा। दूसरे ही क्षण ऊपर से एक पत्थर लुढ़कता हुआ नीचे आ गिरा। जिधर से आवाज आई थी उस ओर बन्दूक घुमाना व्यर्थ था इसलिये मैं चुपचाप बैठा रहा। कुछ देर बाद बछड़ा मेरी ओर मुड़ गया। स्पष्ट था कि वह

जानवर को देख कर भयभीत हो गया था और वह जानवर चट्टान के नीचे की गुफा में था।

थोड़ी ही देर में अपने नीचे मैंने शेर के सर को निकलते हुए देखा। शेर के सिर पर गाली केवल विशेष अवसरों पर ही चढ़ाई आती है और तनिक भी हिलने डुलने से शेर मुझे देख लेता। दो या तीन मिनट तक शेर का सिर स्थिर रहा और फिर एक छलांग में वह कटरे पर टूट पड़ा। जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूं कटरे का मुंह शेर की ओर था। सामने से आक्रमण करने में कटरे के सींगों से शेर को चोट आने की सम्भावना थी। अतः शेर ने कटरे पर पीछे से आक्रमण किया। न तो शेर को इधर-उधर दांत ही मारने पड़े और न कोई युद्ध ही हुआ। दो शरीरों के परस्पर टकराने के शब्द के अतिरिक्त कोई आवाज तक न हुई। दूसरे ही क्षण शेर कटरे के ऊपर था। कटरा स्थिर पड़ा हुआ था और शेर उसे गले से दबाये हुए था।

प्रायः लोगों का ऐसा विश्वास है कि शेर अपने शिकार की गर्दन पर थप्पड़ मार कर मारता है। यह असत्य है। शेर अपने शिकार को दांतों से मारता है। शेर की दाहिनी बगल मेरी ओर थी। सावधानी से निशाना लेकर मैंने अपनी २७५ उस पर चला दी। कटरे को छोड़ कर बिना बोले शेर मुड़ा और कूद कर घाटी में अदृश्य हो गया। अवश्य ही मेरा निशाना चूक गया—कारण मुझे स्वयं मालूम न था। यदि शेर ने मुझे या राइफल की चमक को नहीं देखा तो उसके लौटने की सम्भावना थी। इसलिये मैं राइफल फिर से भर कर बैठा रहा। शेर के चले जाने पर भी कटरा उसी भांति स्थिर पड़ा रहा। अब मुझे भय होने लगा कि कहीं भूल से मैंने शेर के स्थान पर कटरे पर गोली न चला दी हो। दस या पन्द्रह मिनट बीत चुके होंगे जब शेर दूसरी बार फिर मेरे नीचे की गुफा से बाहर निकला। इस बार भी वह थोड़ी देर तक रुका रहा फिर धीरे-धीरे चलता और कटरे के पास आकर उसे देखने लगा। इस अवसर पर निशाना चूकने की सम्भावना न थी क्योंकि शेर की पूरी पीठ मेरी ओर थी। सावधानी से निशाना लेकर मैंने घोड़ा दबा दिया। मरने की अपेक्षा जैसी कि मुझे आशा थी शेर बाईं ओर उछल कर बगल के छोटे से नाले में घुस गया। नीचे उतरने में वह पत्थर लुढ़काता गया।

केवल ३० गज के फासले पर काफी अच्छी रोशनी में मैंने दोनों गोलियाँ चलाई थी और चारों ओर मीलों तक उनकी आवाज गाँववाले सुन चुके थे। यदि वे मुझसे आकर इन गोलियों के विषय में पूछते तो भटरे पर लगी हुई गोलियों के दो छिद्र के अतिरिक्त मैं उन्हें बता ही क्या सकता था? यह स्पष्ट था कि मेरी दृष्टि क्षीण हो गई थी या चट्टान पर चढ़ते समय टक्कर लगने से बन्दूक की मक्खी अपनी सीध से खिसक गई थी।

आसपास की छोटी छोटी वस्तुओं पर दृष्टि डालने से पता चला कि मेरी आँखों में कोई भी दोष न था और ठीक से देखा तो मक्खी को भी सही स्थान पर पाया। दोनों बार निशाना चूकने का केवल एक ही कारण हो सकता था—मैंने निशाना ही सही नहीं साधा।

शेर के तीसरे बार लौटने की कोई सम्भावना न थी और यदि वह लौटता भी तो धुँधले प्रकाश में उस पर वार करके उसे घायल करना उचित नहीं था। इसलिए चट्टान पर बैठे रहना व्यर्थ था।

मेरे कपड़े दिन भर के परिश्रम के पश्चात पसीने से लथपथ हो गये थे। ठंडी वायु चल रही थी और प्रतिक्षण उसमें ठंड बढ़ती ही जा रही थी। चट्टान भी गीली और ठंडी थी। इन कष्टों के मारे बुरा हाल हुआ जा रहा था। उधर मैं गाँव में तमाखू गर्म चाय का भी स्वप्न देख रहा था। किन्तु इन सब बातों से अधिक खतरनाक था आदमखोर का भय। अंधकार हो चला था। गाँव पहुँचने के लिए तो पर्वतों का दुर्गम पथ घने जंगलों में हो कर गया था। गाँववालों को सन्देह था कि उन्होंने बाघ मार को देखा था। इसके अतिरिक्त मेरे पास अन्य कोई सबूत न था कि शेरनी कहाँ है या फिर जिस शेर पर मैंने अभी गोली चलाई थी आदमखोर था। शेरनी इस समय ५० मील दूर भी हो सकती थी और बिल्कुल समीप भी। इन सब बातों को सोचकर उस स्थान में रहना कष्टदायक होने पर भी मैंने उसी चट्टान पर रात्रि व्यतीत करने का निश्चय कर लिया।

रात में आदमखोर शेरों के शिकार करने का यह मनोविनोद सब जैसा मगर। ज्यों ज्यों मैंने इस विषय में सोचा त्यों त्यों इस धारणा को सत्य पाया। जब यह शेरनी दिन के प्रकाश में नहीं मारी जा सकी तो फिर उसे अपना आप पूरा करने मरने के लिए छोड़ देना ही उचित था।

जब प्रातःकाल का धुंधला प्रकाश इधर-उधर फैलने लगा तो मैं चट्टान पर से उतर पड़ा। उतरने में मेरा पाँव रपट गया किन्तु भाग्यवश मैं रेत में गिरा।

मैं जब गाँव पहुँचा तो लोग जाग चुके थे। एक छोटी मोटी भीड़ ने मुझे घेर लिया और मुझ पर प्रश्नों की बौछार सी शुरू हो गई। उत्तर में मैं केवल यही कह सका मैं तो मनगढ़ंत शेरों पर खाली कारतूस चलाता रहा।

धधकती हुई आग के समीप बैठकर गर्म चाय पीने से मेरे सुन्न शरीर में गर्मी लौट आई। फिर कुछ मनुष्यों को लेकर मैं रात्रि के घटनास्थल पर पहुँचा। मैंने अपने साथियों को बताया कि किस भाँति गुफा से शेर बाहर निकला था और किस तरह मैंने उस पर गोली चलाई थी। जैसे ही मैंने नाले की उस ओर इशारा किया जिधर शेर भागा था कि कोई चिल्ला उठा ये देखिये साहब शेर मरा हुआ पड़ा है।

रात्रि के जागरण से मेरी आँखें थकी हुई थीं। परन्तु सामने गिरे हुए शेर को पहचानने में मुझे कोई कष्ट न हुआ।

जब गाँववालों ने मुझसे सीधा सा सवाल किया कि दुबारा मैंने शेर पर गोली क्यों चलाई मैंने उन्हें बताया कि दूसरी बार फिर शेर निकला था और गोली चलाने पर नाले के उस ओर चला गया था। इतने में ही लोग फिर चीख उठे लो यह पड़ा है दूसरा शेर।

दोनों शेरों का आकार एक सा था और जहाँ से मैंने गोली चलाई थी वहाँ से ६० गज के फासले पर वे पड़े हुए थे।

जब मैंने गाँववालों से दूसरे शेर के विषय में पूछा उन्होंने बताया कि आज तक केवल एक ही शेर सबको दिखा गया था। अन्य पशुओं की अपेक्षा शेरों का गर्भकाल कुछ अधिक लम्बा होता है—[illegible]। यदि इन मरे हुए शेरों में से एक भी गर्भिणी शेरनी थी तो यह स्पष्ट था कि उसे जोड़ा मिल गया था।

नाले में पहुँचने के लिये एक पगडण्डी बना दी गई और सब गाँववालों के साथ मैं भी जा पहुँचा। शेरनी के समीप आने पर मेरा आश्चर्य बढ़ने लगा क्योंकि वह एक बड़ी शेरनी थी। उसके पंजों का निरीक्षण करने के लिये मैं उसके पास बैठ गया।

गेहूं की फसल काटती हुई स्त्री पर जब शेरनी ने आक्रमण करने का प्रयत्न किया था तब वह खेत के किनारे अपने साफ खोज छोड़ती गई थी। नरभक्षिणी के खोज तब मैंने प्रथम बार देखे थे और खूब सावधानी से उनका निरीक्षण कर लिया था। खोजों से मुझे मालूम हो गया था कि शेरनी अत्यन्त बूढ़ी थी और बड़ी आयु होने के कारण उसके पांव बाहर की ओर मुड़ गए थे। अगले पंजों की गद्दियों में गहरी लकीरें पड़ी हुई थीं और दाहिने पंजे की गद्दी में एक गहरी लकीर आगे पड़ी हुई थी। अंगूठे अत्यन्त लम्बे थे (किसी भी अन्य शेर के इतने लम्बे अंगूठे मैंने नहीं देखे)। इस विशेष पैरोंवाली आदमखोर शेरनी को १०० शेरों के झुंड में भी आसानी से पहिचाना जा सकता था।

दुर्भाग्य से सामने पड़ी हुई मृत शेरनी चौगढ़ की नरभक्षिणी न थी।

जब मैंने एकत्रित गांववालों को यह बात बताई तो उनमें अविश्वास की एक लहर-सी दौड़ गई। मैं ही स्वयं पहले अवसर पर उन्हें बता चुका था कि शेरनी बूढ़ी है और इसी स्थान पर चार मनुष्य मारे जा चुके थे—इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता था? पर वे तो सभी शेरों को एक समान जानते हैं।

ऐसी अवस्था में दूसरा शेर अवश्य ही नर था। भगवान की दया से उस रात सुन्दर तगड़ा शेर पाया।

शेरों को मरे हुए १६ घण्टे हो चुके थे और धूप तेज थी। ऐसी अवस्था में मुझे खाल उतारने में बड़ी कठिनाई हुई।

दोपहर तक यह काम समाप्त हो गया। आदमियों पर खाल लदवाकर मैं गांव को चल दिया।

प्रातःकाल आसपास के गांववाले और उनके मुखिया मेरे पास आये। जाने से पहले मैंने उन्हें चेतावनी दी थी कि चौगढ़ की आदमखोर शेरनी अभी मरी न थी और भविष्य में यदि जरा भी असावधानी हुई तो वह अपने अवसर को चूकेगी नहीं। यदि लोग मेरी चेतावनी की अवहेलना न करते तो आदमखोर शेरनी और शिकार न कर पाती (जैसा कि उसने बाद के महीनों में किया)।

फिर कोई खबर नरभक्षिणी की मुझे न मिली। एक सप्ताह लगातार नैनीताल में और एक वर्ष में लड़ाई का बन्द किया जैसा मुझे कुछ जिज्ञासा से मिलना था।

४

मार्च १९२ में हमारे जिला कमिश्नर श्री विवियन आल्मस्वार्थ के राज्य में दौरा कर रहे थे। मार्च २२ को मुझे उनका पत्र मिला जिसमें उन्होंने मुझसे तल्लाट माल्लाआगर आने का अनरोध किया था। वहां वह मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। ननीताल से माल्लाआगर लगभग ५ मील है। मैं दो दिन बाद माल्लाआगर के डाकबंगले पर जा पहुंचा। यहां विवियन परिवार टिका हुआ था।

भोजन करते समय मुझे उन लोगों ने बताया कि वे डाकबंगले में २१ तारीख को पहुंचे और जब वे बरामदे में चाय पी रहे थे तब बंगले के अहाते में घास काटती हुई छः स्त्रियों में से एक को आदमखोर शेरनी मारकर उठा ले गयी।

फुर्ती से राइफल लेकर श्री विवियन ने शेर का अनुसरण किया। खून के चिन्हों का पीछा करते हुए वे एक ऐसे स्थान पहुंचे जहां शेरनी ने मृत युवती को एक बांज के वृक्ष के नीचे की झाड़ी में ठूस रखा था।

बाद में जब मैंने घटनास्थल का निरीक्षण किया तो ज्ञात हुआ कि विवियन के पहुंचते ही शेरनी पहाड़ से नीचे की ओर चली गई थी और एक रसभरी की झाड़ी में छिप कर सब कुछ देखती रही। यह झाड़ी लाश से केवल ५ गज दूर थी।

तत्काल एक मचान बनाकर कुछ लोगों के साथ विवियन लाश पर बैठ गये परन्तु रात भर बैठे रहने पर भी शेरनी नहीं लौटी।

दूसरे दिन प्रातःकाल दाहसंस्कार के लिए स्त्री की लाश को उठवा लिया गया और बंगले से कुछ दूर पर एक बछड़ा बांध दिया गया। उसी रात शेरनी ने बछड़े को मार डाला और दूसरी रात विवियन दम्पति मचान पर बैठ गये।

कुछ देर बाद संध्या के झुटपुटे में उन्होंने लाश के समीप किसी पशु को आते हुए देखा। इस पशु को उन्होंने भालू समझा। दुर्भाग्य से यदि यह भूल न होती तो अपने साहसपूर्ण परिश्रम का फल अवश्य मिलता और वे नरभक्षिणी को मार देते क्योंकि विवियन दम्पति का राइफल का निशाना अच्छा था।

२५ तारीख को श्री तथा श्रीमती विवियन माल्लाआगर से चले दिये। इधर मैंने दूकानियों से अपने चार बछड़े भी मंगवा लिये। चूंकि अब शेरनी इस चारे पर लपकने लगी थी अतः मैंने जंगली सड़क पर

इसलिए अपने कटरों को कुछ दूरी पर बांधना आरम्भ कर दिया। निरन्तर तीन रात शेरनी कटरों के समीप से उन्हें बिना मारे निकल गई परन्तु चौथी रात्रि को बंगले के समीपवाला कटरा मार डाला गया। सबेरे लाश देखने पर बड़ी निराशा हुई क्योंकि कटरे को एक तेन्दुआ ने मारा था। इस तेंदुआ को मैंने रात में बंगले के ऊपर की ओर गुर्राते सुना था। यद्यपि मेरी इस तेंदुआ को मारने की इच्छा न थी क्योंकि इस प्रदेश में बन्दूक की आवाज सुनकर शेरनी सतर्क होकर भाग सकती थी परन्तु यह भी स्पष्ट था कि यदि मैं तेंदुआ को न मारता तो वे मेरे सब कटरों को चट कर जाते। इसलिए मैंने ढूँढ कर इस तेंदुआ को मार डाला।

कालाआगर डाकबंगले से जंगली सड़क पश्चिम की ओर मीलों तक चीड़ बांज और बुरूंस के सुन्दर वन में होकर गई है। शिकार की दृष्टि से कुमायूँ में इससे सुन्दर अन्य वन कोई नहीं है। साम्भर काकड़ और सूअरों के अतिरिक्त यहां नाना प्रकार की चिड़ियाँ भी पाई जाती हैं। दो अवसरों पर मुझे सन्देह हुआ कि शेरनी ने इस जंगल में साम्भर मारा है किन्तु बहुत खोजने पर भी लाशें न मिल पाईं।

इसके पश्चात दो सप्ताह तक मैं दिन भर जंगल में और सड़कों पर घूमता रहा। इस बीच दो अवसरों पर मैं शेरनी के समीप पहुँचा।

एक बार मैं कालाआगर के पश्चिम में स्थित एक उजड़े हुए गाँव से लौट रहा था। पगडंडी पर चलते चलते जब मैं चट्टानों के समीप पहुँचा तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि आगे खतरा है। पहाड़ की चोटी से जंगल की सड़क तक ३० गज का फासला था। ये चट्टानें पगडंडी के मध्य में थीं और चट्टानों से कुछ आगे एक [illegible] पिन के आकार का मोड़ था। इस मोड़ से १०० गज आगे एक मोड़ और था। फिर यह रास्ता सड़क से मिल जाता था।

इस मार्ग से मैं कई बार गुजर चुका था। किन्तु चट्टानों के पास से निकलने में मुझे भय आज ही मालूम हो रहा था। सड़क पर पहुँचने के लिए अन्य दो रास्ते लम्बे थे और झाड़ियों में होकर गये थे। सूर्य छिपने को था अतः बिना देर किए मैं चट्टानों की ओर अग्रसर हुआ।

हवा ऊपर की ओर चल रही थी अतः मैं बाईं ओर की झाड़ी को मार

शेसन की आवश्यकता न थी। केवल १ गज तक खतरा था। कंधे पर बन्दूक तैयार रखकर मैंने सावधानी से आगे बढ़ना आरम्भ किया। मेरी दृष्टि चट्टानों पर गड़ी हुई थी और मैं एक एक कदम सावधानी से रखता हुआ बढ़ रहा था।

चट्टान से लगभग ३ गज के फासले पर कुछ खुली हुई भूमि थी। इसी खुले हुए स्थान में एक मादा काकड़ चर रही थी। मैं उसे कनखियों से देखता हुआ आगे बढ़ गया। मुझे देखते ही उसने सर उठा लिया और मूर्तिवत् खड़ी हो गई। (जब जानवर समझते हैं कि उन्हें किसी ने देखा नहीं है वे इसी प्रकार ठिठक कर रह जाते हैं। यह काकड़ आदि जानवरों की विशेष प्रकृति है।) मोड़ पर पहुँच कर मैंने पीछे देखा तो काकड़ को पुनः चरने में संलग्न पाया। मोड़ से मैं कुछ ही आगे गया कि वह मादा काकड़ भौंकती[1] हुई ऊपर को भागी। शीघ्र लौट कर मैं मोड़ पर पहुँचा तो पगडंडी के नीचे कुछ झाड़ियों को हिलते पाया। यह स्पष्ट था कि काकड़ ने शेरनी को पगडंडी पर देख लिया था। झाड़ियाँ या तो किसी चिड़िया के घुसने से हिली थीं या शेरनी के घुसने से। आगे बढ़ने से पहले इस का पता चलाना जरूरी था।

पगडंडी की लाल मिट्टी चट्टानों पर से टपकते हुए जल से गीली हो गई थी। चलते समय इस गीली भूमि पर मैं अपने पदचिह्न छोड़ता गया था। अब मेरे पदचिह्नों के ऊपर शेरनी के पदचिह्न स्पष्ट अंकित थे। इसी स्थान पर शेरनी चट्टानों के ऊपर से कूदी थी। मेरा अनुसरण करते हुए उसे काकड़ ने देख लिया था और काकड़ के भौंकने पर वह पगडंडी छोड़ कर झाड़ी में अदृश्य हो गई थी। जंगल के प्रत्येक भाग से शेरनी परिचित थी और मुझे मारने का प्रथम अवसर पाकर कदाचित् वह दूसरे मोड़ पर मेरी प्रतीक्षा कर रही थी।

अब पगडंडी पर होकर चलना उचित न था। अतएव मैं खुली हुई भूमि से होता हुआ सड़क की ओर चला। यदि पर्याप्त प्रकाश होता तो अवश्य ही

[1]काकड़ की बोली बिल्कुल कुत्ते की सी होती है। इसे barking deer भी कहते हैं।

मैं शेरनी पर विजय पा लेता क्योंकि उसके चट्टान का आश्रय छोड़ते ही अब सब बातें मेरे अनुकूल पड़तीं। उसी की भांति मैं भी इस वन से भली प्रकार परिचित था। मुझे मालूम था कि वह मुझे मारना चाहती है परंतु उसके बारे में मेरा क्या इरादा था यह वह नहीं जान सकी थी।

परंतु मैं इन सब बातों से लाभ न उठा सका क्योंकि संध्या रात्रि में परिणित होती जा रही थी।

मैं पहले भी कहीं लिख चुका हूं कि हमारे शरीर में एक ऐसी अदृश्य इंद्रिय है जो हमें भावी आशंका की चेतावनी दे देती है। यह शक्ति बड़ी तीव्र है। परन्तु यह किस भांति काम करती है यह मैं स्वयं नहीं जानता।

उदाहरणार्थ इसी अवसर को लीजिये। मैंने न तो शेरनी को देखा सुना ही था और न उसकी उपस्थिति मुझे किसी पशु पक्षी ने ही बतलाई थी। परन्तु फिर भी चट्टानों के समीप पहुंचते ही मेरा हृदय धड़क उठा था और मुझे दृढ़ विश्वास हो गया था कि चट्टानों में नरभक्षिणी मेरी प्रतीक्षा में छिपी हुई है। इस आशंका की पुष्टि कुछ देर बाद काकड़ की आवाज को सुनकर हो गई। दूसरा प्रमाण था मेरे पदचिह्नों पर अंकित शेरनी के खोज।

८

जो पाठक मेरी कहानी को धैर्यपूर्वक पढ़ रहे हैं उन्हें मैं शेरनी से अपनी प्रथम एवं अन्तिम मुलाकात का सविस्तार वर्णन सुनाना चाहता हूं।

यह मिलन ११ अप्रैल १९३० को संध्या में हुआ—मेरे कालाआगर पहुंचने के १० दिन पश्चात।

उस दिन मैं जंगली सड़क पर अपने कटरे बांधने गया हुआ था। बंगले से एक मील दूर मुझे लकड़ियां काटते हुए कुछ मनुष्यों की एक टोली मिली। इस टोली में के एक वृद्ध मनुष्य के १८ वर्षीय पुत्र को आदमखोर ने एक महीने पहले मार डाला था। मैं सुस्ताने के लिये सड़क के किनारे बैठ गया और वह बूढ़ा मुझे अपनी कहानी सुनाने लगा। उस दिन वे लोग लकड़ियां काटने जंगल गये हुए थे। जब शेरनी ने बूढ़े के लड़के को पकड़ा तो अन्य लोग भाग खड़े हुए। इस समय भी इस टोली में ५— एक मनुष्य थे जो लड़के की मृत्यु के समय

घटनास्थल पर उपस्थित थे। वृद्ध ने उनको दोष देना आरम्भ कर दिया कि उसके लड़के की मृत्यु के मुख में छोड़ कर वे भाग गये थे। यह सुनते ही गरम बहस शुरू हो गई। उन मनुष्यों का कहना था कि वृद्ध ने ही सर्वप्रथम चिल्लाकर भगदड़ मचाई थी। मुझे अफसोस हुआ कि व्यर्थ ही मैंने यह प्रसंग छेड़ दिया अन्यथा यह वादविवाद ही न उठता। झगड़ा समाप्त करने के लिये मैंने वृद्ध से कहा कि जिस स्थान पर उसके पुत्र की मृत्यु हुई थी उसी स्थान पर मैं एक बकरा बांधूंगा।

दो बकरों को मैंने डाकबंगले वापस भिजवा दिया और एक बकरे को बांधने के लिये ले चला। मैंने दो आदमियों को साथ ले लिया।

जंगली सड़क पर पहुंचने के लिये दो मील तक एक टेढ़ी मेढ़ी पगडंडी से जाना पड़ता था। इसी पगडंडी के किनारे एक बांझ का जंगल था जिसमें वृद्ध का पुत्र मारा गया था। बांझ की झाड़ी के किनारे से लगी हुई कुछ खुली भूमि थी। इस भूमि में एक बांझ के ठूंठ से मैंने बकरे को बांध दिया। इसके बाद एक मनुष्य को मैंने बकरे के लिये घास काट कर ले आने के लिये भेज दिया और दूसरे आदमी (मायासिंह जो कि प्रथम महायुद्ध में गढ़वाल पल्टन में रह चुका था और आजकल यू० पी० सिविल पाइनियर फोर्स में काम कर रहा है) को एक बांझ पर चढ़कर कुल्हाड़ी से आवाज करते हुए खूब जोर से हुंकार लगाने के लिये कह दिया—जैसा कि पहाड़ी लोग घास लकड़ी काटते समय करते हैं।

इसके बाद मैं कुछ दूर पर एक छोटी सी चट्टान पर जा बैठा। चट्टान के पीछे एक दम ढाल था और इस ढाल पर घना जंगल था।

मायासिंह जोर जोर से गाना गा रहा था और दूसरा मनुष्य कटी हुई घास ला लाकर बकरे के सम्मुख रखता जा रहा था। मैं बायें हाथ में राइफल लिये हुए चट्टान पर बैठा बैठा सिगरेट पी रहा था कि अकस्मात् मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि नरभक्षिणी आ गई है। मैंने फौरन संकेत से घसियारे को अपने समीप बुला लिया और सीटी से मायासिंह का ध्यान आकर्षित करते हुए उसे चुप रहने का आदेश दे दिया।

तीनों ओर से भूमि सूखी थी। मायासिंह मेरे सामने बाईं ओर था। घास लानेवाला मनुष्य सामने और बकरा दाहिनी ओर बंधा हुआ था। इस

भाग में शेरनी मुझे बिना देखे बाहर निकल नहीं सकती थी। केवल एक जगह वह इस समय हो सकती थी—मेरे पीछे चट्टान के नीचे के ढाल में।

चट्टान पर बैठते समय मैंने देख लिया था कि चट्टान के आगे का भाग बिल्कुल सीधा और चिकना था और पहाड़ से नीचे ८–१० फीट तक बढ़ा हुआ था। इसके नीचे झाड़ी थी। शेरनी इस पर चढ़ अवश्य सकती थी किंतु उसकी आवाज़ सुनकर मैं उसे देख सकता था।

इसमें सन्देह नहीं कि माधोसिंह की आवाज़ से आकर्षित होकर शेरनी चट्टान के नीचे आ गई थी। उसके ऊपर का स्थान ही मुझे उसकी उपस्थिति का ज्ञान हो गया था। मेरे लौटने देख के लोगों के चुप हो जाने से वह आशंकित हो गई थी। कुछ मिनट बाद मुझे नीचे जंगल में एक टहनी के टूटने का शब्द सुनाई दिया जिससे मैं निश्चिन्त सा हो गया। शेरनी लौट गई थी।

एक सुन्दर अवसर हाथ से निकल गया परन्तु अब भी मुझे उस पर गोली चलाने का मौका मिल सकता था क्योंकि हमारे जाते ही वह कटरे को मारने अवश्य लौटेगी। अभी ४–५ घंटे दिन और था और घाटी को पार कर दूसरी ओर के पहाड़ की ढाल से रास्ते पर गोली चलाई जा सकती थी। हाँ फासला २०–३० गज का पड़ता था। मेरी २७५ राइफल का निशाना बड़ा अचूक था और यदि शेरनी केवल घायल भी हो जाती तो भी अनुसरण करने के लिए रक्त की धार मिल ही जाती। आजकल से जंगलों में व्यर्थ भटकता रहा था—उससे यह कहीं अच्छा होता।

साथ के मनुष्यों को अकेले डाकबंगले भी नहीं भेजा जा सकता था। अतः विवश हो मैंने उन्हें अपने साथ ही रक्खा।

कटरे को और भी मज़बूती से बाँध कर मैं सामने के पहाड़ की ओर चल दिया।

१०० गज आगे चलने पर हमें एक नाला मिला। इस नाले से कोई दूर रास्ता घने जंगल में से हो कर गया था। दो आदमियों को साथ में लेकर झाड़ी में घुसना उचित न था। अतः मैंने नाले में होकर जाना निश्चय किया। इस भाँति नाले में पहुँच कर मैं ऊपर वाले रास्ते को पकड़ सकता था।

यह नाला लगभग १० गज चौड़ा और चार पाँच गहरा था। जैसे ही मैं

इससे उतरते कि पास की चट्टान पर से एक कुचकुचवा (एक छोटी जाति का उल्लू) फड़फड़ाता हुआ उड़ गया। जिस स्थान से वह उड़ा था वहां पर दो अंडे पड़े हुए थे। इन अंडों का रंग हल्का पीला था और इनमें भूरे छींटे पड़े हुए थे। इनका आकार बड़ा विचित्र था। एक अंडा लम्बा एवं नुकीला था और दूसरा एकदम गोल। मुझे भांति भांति के अंडों को जमा करने का शौक था। मेरे संग्रह में कुचकुचवे के अंडे नहीं थे। अतः मैंने इन्हें ले चलने का निश्चय किया। मेरे पास इस समय इन अंडों को रखने के लिये कोई चीज न थी अतएव मैंने उन्हें कुछ काई के बीच रख कर बायें हाथ की मुट्ठी में दाब लिया। नाले के नीचे पहुंचने पर किनारे अत्यन्त ऊंचे थे। बरसाती बहाव के कारण किनारे की चट्टान बिल्कुल चिकनी हो गई थी और उस पर पांव जमाना असम्भव था। इसलिये अपने आदमियों को अपनी बन्दूक थमाकर मैं खिसकता हुआ नीचे को उतरने लगा।

जैसे ही मैं नीचे रेतीली भूमि पर उतरा त्यों ही मेरे दोनों आदमी मेरी बगल में कूद कर आ खड़े हुए और घबराकर उन्होंने मेरे हाथ में राइफल थमा दी। वे शेरनी को बोलते सुन चुके थे। चट्टान पर से नीचे खिसकने की आवाज के कारण मैं कुछ सुन न पाया था। पूछने पर मेरे आदमियों ने बताया कि उन्होंने शेरनी की दबी हुई गुर्राहट सुनी थी। उन्हें मालूम न था कि गुर्राहट किस ओर से आई। शेर गुर्रा कर अपने शिकार को अपनी उपस्थिति बताया नहीं करते। यह सम्भव था कि शेरनी हमारे चले आने पर नाले के मुहान में हमारी प्रतीक्षा में जा छिपी थी और जैसे ही वह मुझ पर झपटने को प्रस्तुत हुई मैं चट्टान से नीचे खिसक गया। इसी से निराश हो कर सम्भवतः वह गुर्रा उठी हो।

यह अनुमान गलत भी हो सकता था। या फिर यह मानना पड़ता कि तीनों मनुष्यों में से शेरनी ने अपने भोजन के लिये मुझे ही चुना था।

हम तीनों इस समय नाले में खड़े थे। हमारे पीछे चट्टान थी बाईं ओर कुछ पत्थर के ढोके पड़े हुए थे और दाहिनी ओर भी चट्टानों की दीवार सी खड़ी थी। सामने एक विशाल चीड़ का वृक्ष गिरा हुआ था। इस वृक्ष के कारण नाले में एक बांध सा बन गया था और बहुत सा रेत जमा हो गई थी। यह रेतीली भूमि दाहिनी ओर चट्टानों के पीछे चली गई थी इसी पर रेत पाये म

बैठा था। रेत के कारण चलने में तनिक भी आवाज नहीं हो रही थी। जैसे ही इस चट्टान की दीवार से आगे बढ़कर मैंने पीछे देखा तो शेरनी से मेरी आँखें चार हो गईं।

स्थिति यह थी—

चट्टान के पीछे की रेतीली भूमि समतल थी। दाहिनी ओर चट्टानों की दीवार थी और एक ओर कंटीली झाड़ियाँ थीं। दूसरी तरफ भी एक चिकनी चट्टान थी। यह घिरी हुई रेतीली भूमि (जिस पर हम खड़े थे) लगभग ० फीट लम्बी व १ फीट चौड़ी थी। मुझसे ८ फीट की दूरी (बाद में नापा गया) पर आक्रमण के लिए सिकुड़ी हुई शेरनी थी। अगले पंजे उसने आगे को फैला रखे थे और पिछले पैर सिकोड़ रखे थे। उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी— जैसी मुस्कान दूर से लौटे हुए स्वामी का स्वागत करने के लिए एक स्वामीभक्त कुत्ते के मुँह पर लखी जा सकती है।

मेरे मस्तिष्क में विद्युत गति से दो विचार आये। एक तो यह कि मुझे प्रथम वार करना चाहिए और दूसरा यह कि वार इस भाँति किया जाय कि शेरनी घायल न हो पाये।

मेरी बन्दूक मेरे दाहिने हाथ में मेरी बाँह के ऊपर आड़ी रक्खी हुई थी। सेफ्टी कैच (बन्दूक को तैयार करने का या रोकने का एक पुर्जा) खुला हुआ था और शेरनी के ऊपर लक्ष्य साधने के लिए हाथ से तीन चौथाई चक्कर लगाना आवश्यक था।

मैंने एक हाथ से बन्दूक की कैच की ओर धीरे धीरे घुमाना आरम्भ किया। जैसे जैसे मेरा हाथ सीधा होता जा रहा था बन्दूक का वजन भी बढ़ता ही जा रहा था। अब हाथ को सीधा करना था। शेरनी की दृष्टि मुझपर से एक क्षण के लिए भी नहीं हटी—उसके चेहरे में प्रसन्नता का भाव झलक रहा था।

मेरी बन्दूक उठाने में जितना समय लगा मैं कह नहीं सकता। चूँकि मैं भी शेरनी पर से आँख नहीं हटा सकता था अतएव मैं बन्दूक की नाल की ओर देख न सका। प्रतिक्षण ऐसा मालूम होता था कि हाथ का यह चक्कर पूरा ही न होगा। मेरे हाथ का रुकना भी भार बना था।

अन्त में बन्दूक मेरे कंधे से जा लगी और जैसे ही ट्रिगर की नाल शेरनी के शरीर की सीध में आई मैंने घोड़ा दबा दिया।



प्रायः स्वप्न में हम देखते हैं कि कोई भयानक जन्तु हम पर आक्रमण कर रहा है और हम बन्दूक का घोड़ा दबाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु बन्दूक चलने से साफ इनकार कर देती है। कुछ कुछ ऐसे ही स्वप्निल संसार में मैं भटक रहा था किन्तु बन्दूक की आवाज़ और करारी फटकार ने मेरी तन्द्रा का निवारण कर दिया।

क्षण मात्र के लिए बाघनी स्थिर रही और फिर अगले पंजों पर सिर रख कर लुढ़क गई। बाघनी के छिद्र से रक्त का फव्वारा छूट पड़ा। गोली रीढ़ में लगती हुई हृदय में घुस गई थी।

चट्टान की आड़ के कारण मेरे आदमी इस घटना को देख न पाये थे। परन्तु मेरे सिर घुमाने से वे समझ गये थे कि मैंने बाघनी को देख लिया है और बाघनी समीप में है। माधोसिंह ने बाद में मुझे बताया कि वह चिल्लाकर मुझसे अंडे गिरा कर अपने हाथों में राइफल पकड़ने के लिए कहना चाहता था।

गोली चलाने के बाद ही मैंने संकेत द्वारा माधोसिंह को पास बुलाया और उसे अपनी बन्दूक थमा दी। मेरे पैर जवाब दे रहे थे। पास ही गिरे हुए पेड़ पर मैं जा बैठा। बाघनी के पंजों की गद्दियाँ देखने से पहले ही मैंने चौगढ़ की नरभक्षिणी को पहचान लिया।

भाग्य-देवता की जिस कैंची ने उसे ६४ मानव जीवन-सूत्रों को काटने में सहायता दी थी आज उसी से स्वयं उसका जीवन-सूत्र कट गया था। ज़िले के लोगों का कहना था कि उसने १२८ मनुष्य मारे थे।

निम्नलिखित तीन बातें जिन्हें आप मेरे प्रतिकूल समझेंगे वास्तव में मेरे अनुकूल थीं (अ) मेरे बायें हाथ में रखे हुए अंडे (ब) हल्की बन्दूक जिसे मैं लिये हुए था और (ग) मेरी मुठभेड़ साधारण शेर से नहीं बल्कि एक नरभक्षिणी से हो रही थी। यदि मेरे हाथ में अंडे न होते तो तत्काल मैं दोनों हाथों से बन्दूक पकड़ कर पीछे घूमता। मुझे स्थिर देख कर ही बाघनी ने मुझ पर शीघ्र आक्रमण नहीं किया था। यदि बन्दूक हल्की न होती तब मैं तो न उसे घुमा ही पाता और न ठीक सीधा करके चला पाता। और यदि बाघनी एक साधारण शेरनी होती तो अपने को घिरा हुआ पाकर मुझसे आगे मार्ग में झपटती हुई निकल जाती। बाघनी की झपट का परिणाम साधारण नहीं हो सकता।

अपन साथिया का मन करने की रस्सी लाने के लिये भेज दिया (क्योंकि अब रस्सी उतरना का साधन के लिये चाहिए था) और मैं स्वयं अंडा का उनकी स्वामिनी को लौटाने की ओर चल दिया।

अपन अन्य शिकारी भाइयों की भांति मैं भी कुछ अन्धविश्वासी हूं। गत वर्ष मैं इन गरुडों के पीछे मारा मारा फिर रहा था और फिर भी असफल रहा। अंडा के उठाने के कुछ ही क्षणों पश्चात मेरा भाग्य पलट गया था।

हाथ में रखने रहने से अंडे अभी गर्म थे। मैंने उन्हें चट्टान के ऊपर रख दिया और जब आध घण्टे बाद मैं उधर से गुजरा तो मैंने कुचकुचवी को उनके ऊपर बैठा पाया। उसके पंखों का रंग बिल्कुल चट्टान से मिलता जुलता था और देखने से पता नहीं चलता था कि अंडे कहां अदृश्य हो गये।

और उस दिन से आज तक आस पास के विस्तृत प्रदेश में एक भी नर हत्या न हुई।

सामने टंगे हुए नक्शे पर मैंने अब एक और क्रॉस चिह्न अंकित कर लिया है—इस क्रॉस व तारीख की अधिकारिणी चौगढ की आदमखोर शेरनी थी। यह क्रॉस काल्दाआगर से मील पश्चिम की ओर है और तारीख है ११ अप्रैल १९३०।

शेरनी के नाखून टूटे हुए थे और दांत भी। इन्हीं कारणों से वह नरभक्षिणी बन गई थी और अपने शिकार को भली प्रकार मार नहीं सकती थी। उसकी सहायिका पाठी को मैं पहले अवसर पर भूल से मार चुका था।



पौलगढ़ का कुँआरा

हमारे जाड़ा के घर से ... मील दूर जंगल के मध्य में लगभग ८०० वर्ग गज का एक खुला हुआ मैदान है। इस मैदान में हरी घास का गलीचा-सा बिछा हुआ है और स्थान स्थान पर वह बड़े वृक्षों एवं बेंत का जंगल सा उग आया है। इसी खुली हुई भूमि में मैंने सब प्रथम उस शेर को देखा जो कि समस्त मध्यप्रान्त में पौलगढ़ का कुआरा के नाम से प्रसिद्ध होगया था। सन १९०७ से १९ ० तक कई साल इस शिकार की टोह में रहे थे।

प्रातःकाल का समय था। सूर्योदय हुए अभी देर न हुई थी जब मैं पूर्वोक्त पुर टकड़े के सामने की ढाल जमीन पर जा पहुँचा। कुछ दूर पर एक स्वच्छ जलाशय के किनारे २०-२५ वन-मुर्गियों का झुंड सूखी पत्तियों के ढेर में से अपना चारा खोज रहा था। हरियाले मैदान में ओसकण झिलमिल कर चमक रहे थे। इसी मैदान में ५०-६० चीतल भी चरने में व्यस्त थे। मैं एक दूर पर बैठा हुआ इस सुन्दर दृश्य का अवलोकन कर रहा था कि सबसे समीप खड़ी एक चितलिया ने सर ऊपर उठाकर कूकना आरम्भ कर दिया। दूसरे ही क्षण मेरे नीचे की घनी झाड़ियों में से कुआरा शेर मैदान में निकल आया। कुछ देर तक वह ऊँचा सिर किये गर्वीली दृष्टि से समस्त दृश्य का सिंहावलोकन करता रहा और फिर अकड़ता हुआ धीरे धीरे मैदान को पार करने लगा। जाड़े की ऋतु के कारण उसकी खाल अत्यन्त सुन्दर थी और इस समय उस पर सूर्य की सुनहली रश्मियाँ पड़ कर उसे और भी सुन्दर बना रही थीं। उसके स्वागत स्वरूप चीतलों ने इधर उधर हट कर बीच में रास्ता सा बना दिया था। वह उसी मार्ग से झूमता हुआ चल दिया। कितना सुन्दर लगता था वह!

फिर आगे बढ़ कर उसने जलाशय में अपनी प्यास बुझाई और कूद कर वह वन में अदृश्य होगया। जंगल में घुसने से पूर्व वह तीन बार गरजा। मैदान में उसके निकलते ही समस्त वन प्राणियों ने चीत्कार करना शुरू कर दिया था। कदाचित् उसकी इच्छा के अभिवादन का यह प्रत्युत्तर था।

वास्तव में उस दिन कुँआरा अपनी माँद से बहुत दूर निकल आया था क्योंकि उसका घर छः मील दूर एक नाले में था। इसे प्रदेश में जहाँ कि अधिकांश शेरों का शिकार हाथियों की सहायता से होता है उसने अपना घर सोच समझ कर बनाया था। एक मील लम्बा यह नाला पहाड़ों की तलछट की ओर चला गया था और इसके दोनों ओर पर्वत खड़े थे। नाले के ऊपरी सिरे पर लगभग बीस फीट ऊँचा एक झरना था और नीचे के मुहाने पर पानी से लाल मिट्टी कट गई थी इसी कारण इस ओर नाला सकरा हो गया था। अतएव कोई भी शिकारी यदि कुँआरे के घर जाकर उससे टोह लेने का प्रयत्न करता तो उसे विवश होकर पैदल ही जाना पड़ता। सरकारी कानूनों के अनुसार रात्रि में शिकार करना भी मना है। इस प्रकार कुँआरा अपने बहु वाञ्छित चर्म के शिकारियों की घातक बन्दूकों से बचाये हुए था। कई अवसरों पर शिकारी कुँआरे का चटरा पर लक्ष्य चूके थे। परन्तु उस पर गोली कभी भी न चल पाई थी यद्यपि दो अवसरों पर वह मौत से आँखमिचौनी खेल चुका था। प्रथम अवसर पर वह हाँके में निकल आया था परन्तु फ्रेड ऐंडरसन की राइफल मचान की रस्सी में उलझ कर रह गई। दूसरी बार हाँके से पहले ही वह मचान के समीप आ खड़ा हुआ किन्तु जब उसने छुट्टी एडी मान्ट का अपना पाइप भरने में संलग्न पाया तो तम्बाकू के आविष्कारक की दुहाई देता हुआ वन में अदृश्य हो गया। इन दोनों अवसरों पर वह मचान से केवल दो फीट की दूरी पर देखा गया था। ऐंडरसन के कथनानुसार उसका आकार एक टट्टू के बराबर था किन्तु एडी उसकी उपमा एक गधे से देते थे।

ऐसे ही कई असफल प्रयत्नों के पश्चात् मैं अपने कमिश्नर श्री विन्डहम को नाले के ऊपर से निकली हुई आग-लाइन पर ले गया। इस मार्ग पर प्रातःकाल से कुँआरे के ताजे मार्गों को देख चुका था। श्री विन्डहम के समान शेरों का जानकार भारतवर्ष में कदाचित ही कोई अन्य व्यक्ति होगा। इस समय उनके साथ दो अनुभवी शिकारी भी थे। शेर के मादा या भरा भाँति नापकर विन्डहम की सम्मति हुई कि खूँटियों के बीच* नापा जाने पर शेर की खाल ९ फीट लम्बी होगी। अन्य दो शिकारियों का मत था कि अगर या खालें के ऊपर फीता होगी। अन्य दो शिकारियों का मत था कि अगर या खाल के ऊपर फीता

*मुगान के लिए शेर की खाल को ६ खूँटियों पर तान कर नापा जाता है।